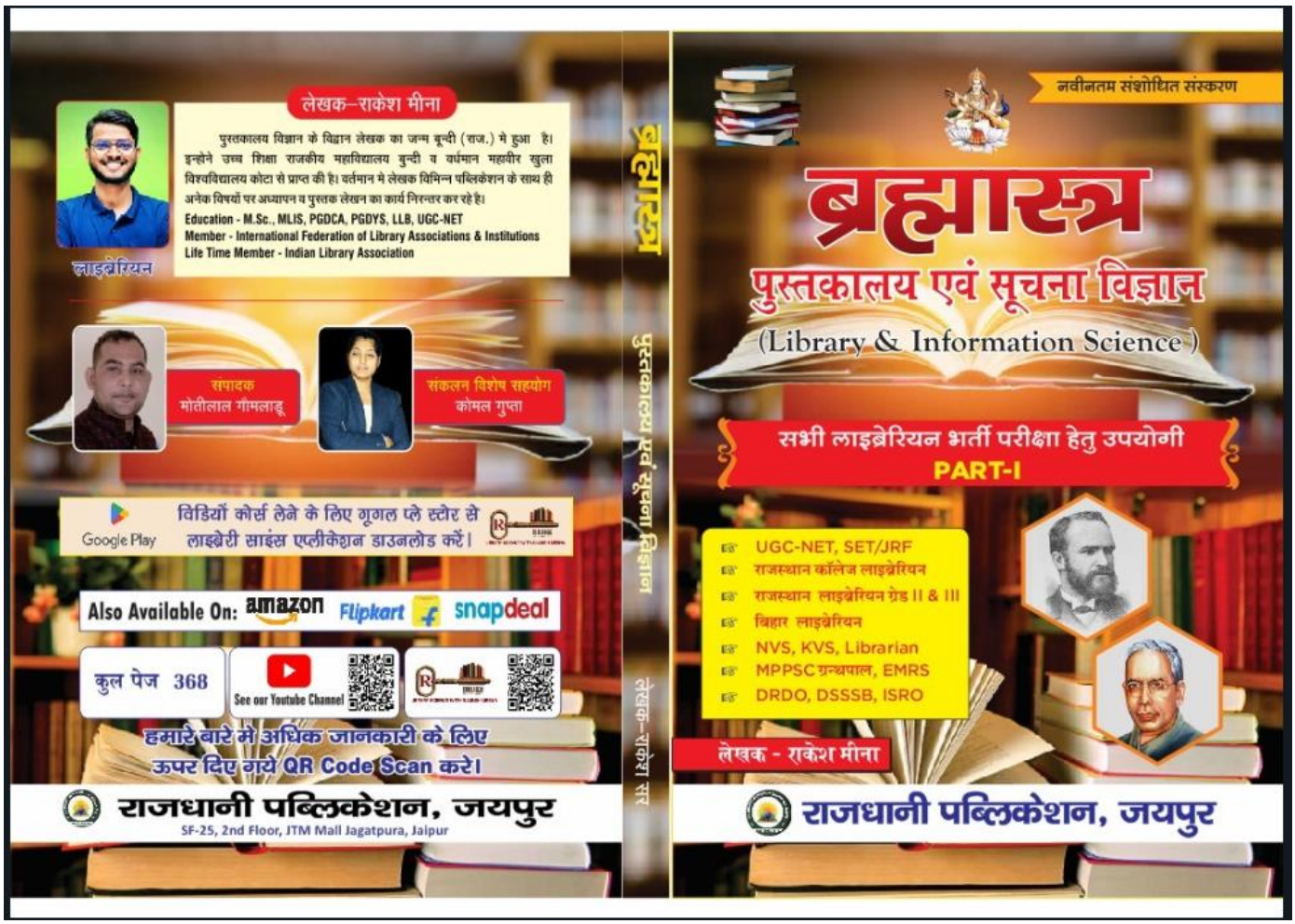

ब्रह्मास्त्र

बुक लेने के लिए सम्पर्क करें

9602188666

।। जय रामसा पीर की ।।

ब्रह्मास्त्र

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान

Library & Information Science

For Exam:- NTA/UGC -NET/ JRF Exam, PSSSB–Librarian, KVS Librarian, NVS Librarian, DSSSB Librarian, DPL Librarian, RSSB, RPSC, IIT's - Librarian, AIIMS – Librarian, Delhi University– Librarian,Rajasthan University - Lib Asst., Bihar– Librarian, State Lecturer Eligibility Test (SLET), State Eligibility Test (SET), DRDO, ISRO,MPSSC

लाइब्रेरियन भर्ती परीक्षाओं हेतु उपयोगी

लेखक

राकेश मीणा

(पुस्तकालयाध्यक्ष)

B.sc, M.sc, DLIS ,BLIS, & M.Lib ,PGDCA,
B.Ed., LLB(A), PGDYS, UGC NET QUALIFIED
MEMBER – INTERNATIONAL FEDERATION OF LIBRARY ASSOCIATIONS & INSTITUTIONS
LIFE TIME MEMBER - INDIAN LIBRARY ASSOCIATIONS

मूल्य : **RS. 599/-**

Branch Office: - Devpura Bundi (Raj.)
Contact No. 9602188666

चेतावनी

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की समस्त सामग्री का अधिकार लेखक के पास सुरक्षित है, यदि कोई व्यक्ति इस पुस्तक का मैटर, चित्र या किसी भी पार्ट की कॉपी करता है या फिर तोड़–मरोड़ कर या किसी भी भाषा में छापने या प्रकाशित करने का साहस करता है तो वह गैर–कानूनी होगा और कानूनी तौर पर हर्जे–खर्चे का जिम्मेदार होगा। किसी भी वाद–विवाद के लिए न्याय–क्षेत्र जयपुर होगा।

इस बुक को बनाने में पूरी तरह से सावधानी बरती गई है, फिर भी कुछ गलती होना मानवीय स्वभाव है। यदि आप को इस बुक में कही पर गलती नजर आती है तो आप हमें उस गलती का फोटो हमारे Whatsapp नम्बर पर भेज सकते है

9602188666 (Whatsaap)

ब्रह्मास्त्र पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान

Brahmastra Library & Information Science

नवीनतम संशोधित संस्करण

मुल्य–599/-

© राजधानी पब्लिकेशन जयपुर

ISBN:

978-93-5891-560-0

लेखक : राकेश मीणा

प्रकाशनः

राजधानी पब्लिकेशन जयपुर

SF-25,2nd Floor,JTM Mall Jagatpura, Jaipur

Typing & Page Setup
By- Ramavatar Meghwal

गाँधीजी का प्रसिद्ध कथन –''पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है। क्योंकि पुस्तकें अन्तः करण को उज्ज्वल करती है'' मेरी इच्छा थी कि ऐसी किताब लिखने का प्रयास करू जो एक आशावादी व्यक्ति को और अधिक आशावान बनायें वही निराशावादी व्यक्ति के मन–मस्तिष्क मैं आशा, उत्साह, उमंग को जगायें। मैं पुस्तकालय के क्षेत्र में लगाातार अध्यापन करवा रहा हुँ। इस लिहाज से मुझे सभी विद्यार्थियों से एक लगाव है। हमारे आज के विद्यार्थी कल का वर्तमान है। विद्यार्थी व युवा मेरी प्रेरणा व प्रोत्साहन हैं। यह पुस्तक NTA-UGC NET की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों तथा RSSB, DSSSB, KVS व NVS आदि के लिये उपयोगी है।

मेरे माताजी व पिताजी ने परिवार को कर्त्तव्यनिष्ठा, प्रेम, सेवा, कठोर श्रम, त्याग, निस्वार्थपन जैसे मूल्यों की सीख देने का प्रयास किया है। यह मेरे ईष्ट देव व बड़ों का आर्शिवाद ही है कि मैं यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी माताजी श्रीमती बजरंगी देवी व पिताजी श्री रामस्वरूप मीणा ने मुझे हमेशा ही वैचारिक व कार्य स्वतंत्रता प्रदान की है। कठोर परिश्रम, एकाग्रता, साहस व अध्यापन कार्य को मैं मेरे बड़े भाईयों राजेन्द्र प्रसाद मीणा, सुरेश कुमार मीणा, मुकेश कुमार मीणा को समर्पित करता हूँ मेरे छोटे भाई मनीष मीणा का प्यार, उत्साह, सहयोग हमेशा मेरे साथ रहा है। मेरी प्यारी भतीजी यशस्वी, केशवी व भतीजे प्रतीक, चित्रांश की चंचलाहट व शैतानियों से मन की थकान दूर हो जाती है। जिससे पुस्तक लेखन में बहुत सहयोग मिला। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अनेक लोगों ने सहयोग व प्रोत्साहन दिया। कुछ ने महत्वपूर्ण व गम्भीर सलाह भी प्रदान की। साथ ही उन लेखको का भी विशेष रूप से आभारी हूँ जिनके प्रलेखों को मेंने अपने लेखन के क्रम में संर्दभित किया है। इन सभी का तहेदिल से धन्यवाद।

लेखन कार्य के समय मैने कोशिश की है इस पुस्तक को इस तरह प्रस्तुत करुं कि पाठक पुस्तकालय–विज्ञान के सभी पहलुओं पर सोचने को विवश हो, उस पर चिन्तन करें, प्रोत्साहित–उत्साहित हो।

मुझे विश्वास है यह पुस्तक अध्यापकों, पुस्तकालय व्यवसायियों व छात्रों द्वारा खुले दिल से स्वीकार की जायेगी। यद्यपि पुस्तक लेखन में बहुत सावधानी बरती गई है, फिर भी पुस्तक सम्बन्धित सुझाव, परामर्श मार्गदर्शन का तहेदिल से स्वागत रहेगा।

अंत में मेंरे इष्ट देव रामसा पीर के प्रति आभार प्रकट करता हूँ ,जिन्होने मुझे इस कार्य के लिये प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शक्ति प्रदान की है, और में आशा करता हूँ की हमेशा मुझे उनका आशिष प्राप्त होगा।

लेखक
राकेश मीणा
rmeena397@gmail.com

पुस्तकालय और समाज (**Library and Society)**

- Dr. S. R. Ranganathan 1
- Melvil Dewey..... 3
- पुस्तकालय औज समाज (Library & Society. 4
- Events & Celebration..... 5
- पुस्तकालय संबंधित आयोग व समितिया (Commission & Committee) **6-10**
  - Hunter Commission
  - Sadler Commission
  - Kenyon Committee
  - Radhakrishnan Commission
  - Mudaliar Commission
  - Sinha Committee
  - UGC Library Committee
  - National Education Commission
  - Review Committee
  - Mehrotra Committee
  - Parry Committee
  - Library Development Committee
  - B.N. Subbarayan
  - Gopal Rao Ekbote Committee
  - Vavilala Gopalakrishnayya Committee
  - Rolf Show Committee
  - Health Survey & Development Committee
  - Shankaran Committee
  - Richey Committee
- पुस्तकालय आन्दोलन (Library Movement.. 10
- INCUNABULA..... 11
- राज्य स्तरीय पुस्तकालय संघ एवं स्थापना वर्ष.... 11
- पुस्तकालय के प्रकार (Types of Library)..... **12-20**
- राष्ट्रीय पुस्तकालय (National LIbrary)..... 21
- Kolhapur Library..... 23
- Five Laws of Library Science..... 24
- पुस्तकालय अधिनियम (Library Act.)..... 26
- Patent..... 32
- Censorship..... 33
- Copyright..... 33
- Trademark..... 33
- Delivery of book Act..... 34
- Information Technology Act..... 34
- The Press & Registration of Book..... 34
- Information Literacy..... 35
- Indian Library Association (ILA) 36
- IFLA..... 39
- RRRLF..... 41
- UNESCO..... 43
- American Library Association (ALA)..... 45
- ASLIB..... 46
- IASLIC..... 47
- IATLIS..... 48
- CILIP..... 49
- JOCLAI..... 50
- UGC 50
- CLA 50
- SLA 51
- Library Association (LA) 52
- TKDL 53
- FID..... 53
- INIS 55
- ERIC 55
- NTA 55
- AGRIS 56
- INSPEC 56
- BARC 57
- Agriculture Research Information Centre 57
- पर्यावरण सूचना प्रणाली (Environmental Information System)..... 57
- संसाधन सहभागिता (Resource Sharing).... 58
- Consortia..... **59-61**
- भारत में पुस्तकालय नेटवर्क (Library Network in India **61-69**
  - DELNET
  - CALIBNET
  - INFLIBNET
  - ADINET
  - BALNET
  - BONET
  - INDOLIBNET
  - MALIBNET
  - MYLIBNET
  - WBPLNET
  - PUNENET
  - ERNET
  - SIRNET
  - MANLIBNET
  - NODLIBNET
  - NICNET
  - INDONET

- NASSDOC..... 70
- MEDLARS..... 71
- INSDOC 71
- NISCAIR 72
- SENDOC 73
- NISSAT 74
- DESIDOC 75
- NAAC 76
- OCLC 76
- COMLA 76
- DRTC 77
- National Knowledge Network (NKN) 77
- Library User 77

ज्ञान जगत एवं पुस्तकालय वर्गीकरण (Universe of Knowledge & Library Classification)

- ज्ञान (Knowledge) 81
- ज्ञान जगत (Universe of Knowledge) 85
- विषय जगत (Universe of Subject) 86
- विषय संरचना विधि (Modes of Formation of Subject) 87
- पुस्तकालय वर्गीकरण के नियामक सिंद्वात (Normative principal of Lib. Classification)... 92
- वर्गीकरण के उपसूत्र (Canon of Classification). 96
- SKOS 98
- Taxonomy 99
- Folksonomy 99
- **विभिन्न वर्गीकरण पद्वतियो में ज्ञान जगत का चित्रण 100-105**
  - DDC में विषय जगत की स्थिति का निर्धारण
  - CC में विषय जगत की स्थिति का निर्धारण
  - UDC में विषय जगत की स्थिति का निर्धारण
- Species of Classification Schemes 105
- अंकन (Notation) 106
- वर्गीकरण (Classification) 110
- Colon Classification Scheme(cc) 111
- मूलभुत श्रेणी (Fundamental Categories) 121
- आवर्तन एवं स्तर (Rounds & Levels) 123
- अन्तिम प्रभावी दशक (LED) 124
- पक्ष अनुक्रम के सिद्वात (Principal of Facet Sequence) 125
- सहायक युक्तिया (Devices) 126
- दशा संबंध (Phase Relation) 128
- सामान्य एकल (Common Isolate) 129
- क्रंमाक संख्या (Call Number) 132
- स्मृति सहायक युक्ति (Mnemonics Device) .. 134
- सहायक अनुक्रम के सिद्वांत (Helpful Sequence) 135
- प्रायोगिक वर्गीकरण के सोपान 135
- ISKO 137
- CRG 138
- APUPA 138
- Dewey Decimal Classification Scheme (DDC) 138
- Universal Decimal Classification Scheme (UDC) 147
- Library of Congress Classification 149
- Subject Classification 150
- Bibliographic Classification 150
- Board System of Ordering 151
- Rider's International Classification 151
- Bibliothecal Bibliographic Classification .. 151

पुस्तकालय सूचीकरण (Library Cataloguing)

- सूचीकरण के नियामक सिद्वांत (Normative Principles of Cataloguing 153
- Development of Catalogue Codes ...**(157-158)**
  - British Museum Code
  - Charles C. Jewett Code
  - Rules for Dictionary Catalogue
  - The Prussian Instructions
  - Dziatizka Code
  - Anglo-American Code
  - Vatican Code
- OPAC 158
- पुस्तकालय सूची (Library Catalogue) 158
- Physical form of Library Catalogue..... 160
- Inner form of Library Catalogue 163
- CCC 164
- AACR 169
- Standards of Bibliographic Record Formats & Description .....**(175-181)**
  - ISBD
  - MARC
  - UNIMARC
  - UKMARC
  - USMARC
  - MARC 21

- CCF
- RDA
- FRBR
- BIBFRAME
- ISBN
- ISSN

- Standards of Bibliographic Information Interchange & Communication .... **(181-183)**
  - ISO :2709
  - ISO : 9000
  - ISO 2788 : 1986
  - ISO 5963: 1985
  - Z39.71
  - Z39.50
  - TC46
- Metadata Standards ..... **(183- 185)**
  - METS
  - EAD
  - MODES
  - DUBLIN CORE METADATA
- Cataloguing- in – Publication 186
- अनुक्रमणिका पत्रिका प्रणाली (Indexing periodical System) 186
- अनुक्रमणीकरण सेवा (Indexing Service)... **(188-195)**

  Pre-Co-Ordinate Indexing
  - Chain Index
  - PRESIS
  - POPSI

  Post-Co-Ordinate Indexing
  - Uniterm Indexing System
  - KWIC
  - KWOC
  - Peek-a- boo system
  - Wadex System
  - Citation Indexing System
- विषय सूचीकरण (Subject Catalogue)...**(195-198)**
  - SLSH
  - LCSH
  - MeSH
- सारकरण सेवा (Abstracting Service)..... 198
- सूचना पुनप्राप्ति प्रणाली (Information Retrieval System) 201

पुस्तकालय प्रबंधन (Library Management)

- पुस्तकालय प्रबंधन (Library Management) . 206
- पुस्तक चयन कारक (Factors of books Selection) 212
- ग्रंथ चयन के स्रोत (Sources of book Selection) 214
- अधिग्रहन विभाग (Acquisition Section) 215
- तकनीकी विभाग (Technical Section) 216
- परिसंचरण अनुभाग (circulation Section) 216
- पत्र पत्रिका विभाग (Periodical Section) 223
- परिग्रहण रजिस्टर (Accession Register) 225
- मुक्त प्रवेश प्रणाली (Open Access System) .. 225
- पुस्तकालय जिल्दसाजी (Library binding) 225
- विपणन (Marketing) 227
- भण्डार सत्यापन (Stock Verification) 228
- पुस्तकालय सामग्री के हानिकारक तत्व : पर्यावरणीय कारक 229
- मानव संसाधन प्रबंधन (Human Resources Management) 231
- कार्य विश्लेषण (Job Analysis) 232
- कार्य मूल्याकंन (Job Evaluation) 233
- कर्मचारी भर्ती ,चयन , प्रशिक्षण एवं स्टाफ सूत्र (Staff Recruitment, Selection,Training & Staff formula) 234
- अभिप्रेरण (Motivation) 236
- प्रदर्शन मूल्याकंन (Performance Appraisal) 237
- Staff Manual 238
- अधिकार अंतरण एवं स्टाफिंग (Delegation of authority & Staffing) 238
- वित्तीय प्रबंधन (Financial Management) .. 240
- बजट (Budget) 244
- वार्षिक प्रतिवेदन (Annual Report) 246
- सांख्यिकी (Library Statistics) 247
- पुस्तकालय समितिया (Library Committee) .. 248
- SWOT ANALYSIS 251
- PEST 252
- PERT 252
- CPM 253
- DATA FLOW DIAGRAM 254
- TQM 254
- Theory X & Theory Y 256
- Six Sigma 256

- मास्लो पिरामिड या मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम 256
- ग्रंथलाय भवन (Library Building) 256
- पुस्तकालय उपस्कर एवं उपकरण 257
- Management Information system (MIS). 258
- Management By Objective (MBO) 259
- जोखिम प्रबंधन (Risk Management) 259
- आकस्मिक प्रबंधन (Contingency Management) 260
- परिवर्तन प्रबंधन (Change Management) 260
- Knowledge Management 260
- Inter Personal Relation 260

डाटा सूचना सम्प्रेषण समाज (Data Information Communication Society)

- DATA 263
- Information 263
- Information Life Cycle 266
- Information Science 267
- Communication 269
- Information Industry 274
- Intellectual Property 275
- PLAGIARISM 278
- Right to Information Act-2005 279
- National Knowledge Commission 279

सूचना सेवा एवं सूचना स्त्रोत (Information Service & Information Source)

- सूचना सेवा (Information Service)..... 281
- सूचना के प्रलेखीय व अप्रलेखीय स्त्रोत 281
- सन्दर्भ ग्रंथ (Reference Book) ..... **(282-288)**
  - Encyclopedia Britannica
  - Encyclopedia Americana
  - McGraw Hill Encyclopedia of Science & Technology
  - Encyclopedia of Library & Information Science
  - Indian National Bibliography (INB)
  - Word of Learning
  - Keesing's Record of world event
  - India Who's Who
  - British National Bibliography
  - Statesman's year book
  - International Encyclopedia of Social Science
  - Oxford English dictionary
  - Webster third new International Dictionary
  - Europa yearbook
  - Commonwealth Universities yearbook
  - Asian Recorder
  - Book in Print
  - Indian book in Print
  - Fodera's Guide to India
- निदेशिकायें (Directories) 288
- प्रलेखन (Documentation) 290
- प्रतिलिपीकरण (Reprography) 292
- अनुवाद सेवा (Translation Service) 292
- शब्दकोश (Dictionary) 293
- ग्रंथसूची (Bibliography) 294
- थिसॉरस (Thesaurus) 296
- Geographical Information Sources 297
- Database 300

सन्दर्भ सेवा , वेब , सहयोगी सेवा (Reference Service , Web & Collavorative Service)

- सन्दर्भ सेवा (Reference Service) 303
- सामयिक जागरूकता सेवा (CAS) 307
- चयनित सूचना प्रसार सेवा (SDI) 307
- Library 2.0 308
- Web 2.0 309
- Web 3.0 309
- Instent Messaging 309
- RSS Feed 310
- ASK A Librarian 310
- Social Network 310

- Academic Social Network 311
- Social Bookmarking Website 312
- Web Scale Discovery Service..... 313

कम्प्युटर तकनीकी (Computer Technology)

- Computer 315
- ASCII 316
- ISCII 316
- CODEN 316
- UNICODE 316
- Programming Language 321
- Repositary 322
- Wireless Communication 323
- Topology 323
- Computer Network 324
- Internet 325
- Web Browser 326
- Search Engine 327
- Meta Search Engine 329
- Internet Protocol 329
- Data Security 332
- Network Security 332
- Firewall 332
- Malware 332
- Antivirus Software 333

पुस्तकालय स्वचालन , डिजिटल लाइब्रेरी (Library Automation , Digital Library)

- Library Automation..... 335
- Library Software 337
- OSI 341
- RFID 342
- BARCODE 342
- QR CODE 342
- Digitization 343
- Digital Library 344
- DOI 345
- Institutional Repositories 346
- Content Management System (CMS) 346
- Ontology Tools 346
- Artificial Intelligence 347
- Cloud Computing 347

शोध, साख्यिकी पैकेज , मेट्रिक्स अध्ययन (Research Statistical Package Metric Studies)

- Research 350
- Statistical Packages 352
- Metric Studies 352
- Impact Factors 352

लाइब्रेरी सांइस से संबंधित वैज्ञानिको का जीवन परिचय .....(356-368)

जिस दिन हमारे सिग्नेचर
ऑटोग्राफ मे बदल जाए
मान लिजिए आप कामयाब हो गए

डॉ कलाम

Dr. S. R. Ranganathan
(डॉ. एस. आर. रंगनाथन)

- Dr. S. R. Ranganathan को Library Science के भीष्मपितामाह कहते है।
- भारत में Dr. S. R. Ranganathan को Library Science का जनक कहा जाता है।
- Library Science पद का प्रयोग Dr. S. R. Ranganathan के द्वारा किया गया।
- पूरा नाम – शियाली रामामृत रंगनाथन
- गॉव – शियाली वर्तमान नाम सिरकाजी
- जन्म – **12 अगस्त 1892** (सियाली), मद्रास चैन्नई, तंजोर, तमिलनाडु
- मृत्यु – **27 सितंबर 1972** (बेंगलुरु)
- पिता – रामामृत अय्यर (निधन– 13 जनवरी 1898 को, 30 वर्ष की आयु) जब Ranganathan केवल छह वर्ष के थे।
- Mother – सीतालक्ष्मी
- Marriage – 1907 में रुक्मणी (रुक्मणी की मृत्यु 13 November 1928) और 1929 में शारदा से (30 July 1985 को बैगलोर में 78 वर्ष की आयु में निधन)
- Son – योगेश्वर (जन्म 1932 में)
- **गुरू :–**
  - (i) बचपन के व पसंदीदा गुरु **एडवर्ड बी रोस** (गणित पढ़ाते थे।) Dr. S. R. Ranganathan ने अपनी बुक "The Five Laws of Library Science" समर्पित की।
  - (ii) **W.C.B. Sayers** (लंदन में गुरू)
- शिक्षा :– (i) मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण – 1908-1909 में की। (Hindu High School)
- B.A. March/April 1913 में और 1916 में मास्टर की डिग्री हासिल की।
- **1919 से 1920** – Dr. S. R. Ranganathan Assistant lecturer Mathematics के पद पर Government Collage Mangatore में काम किया ।
- **1920** – Government College Coimbatore में Assistant lecturer के पद पर नियुक्त हुए ।
- **1921 से 1924** – Assistant lecturer mathematics के पद पर Presidency College Madras में काम किया।
- 4th January 1924 & University of Madras पुस्तकालय का कार्यभार ग्रहण किया।
- **31 January 1928** – Madras Library Association की स्थापना Dr. S. R. Ranganathan ने की।
- 1928 – पाचँ सूत्रो का प्रतिपादन (मिनाक्षी कॉलेज अन्नामल्लाई नगर) में किया।
- **1931** – पाचँ सूत्रो का प्रकाशन **(Book "The Five Law's of Library Science**" में किया)
- 1931 – में हिंदू अखबार के अपने 2 आलेख में अपने छदम नाम **Arithematicus** और **Libra** का उपयोग किया।
- **1945 से 1947** – बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (Banaras Hindu University) में लाइब्रेरियन रहें।
- **1944 से 1953** – भारतीय पुस्तकालय संघ (Indian Library Association) के अध्यक्ष रहे।
- **1948** – भारत में Dr. S. R. Ranganathan को Library Science के जनक की उपाधि **Maurion Gayer** के द्वारा दी गई ।
- **1950** – Library Development Plan for India का प्रारूप तैयार किया।
- **1950–62** – International Federation for Documentation (FID) के वर्गीकरण रिसर्च ग्रुप के अध्यक्ष थे, जब उन्होंने **FID** के लिए 12 शोध रिपोर्ट तैयार की।
- **1957** – में University of Madras में लाइब्रेरी साइंस एंड एंडॉवमेंट के अध्यक्ष के लिए विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के दौरान, उन्होंने अपने जीवन की बचत को एक लाख रुपये विश्वविद्यालय को दान कर दिया।
- **1957** – Library Science में शारदा रंगानाथन पीठ की घोषणा (University of Madras शताब्दी समारोह में कि)।
- **1961** – Sarada Ranganathan Endowment for Library Science (SRELS) की स्थापना (यह 1963 में Indian Govt. और कर्नाटक सरकार के साथ चैरिटेबल एडोमेंट के रूप में पंजीकृत किया गया था।
- **1962** – में Documentation Research and Training Centre की स्थापना (बैंगलौर)
- **1965** – लाइब्रेरी साइंस में नेशनल रिसर्च प्रोफेसर (National Research Professor) के रूप में नियुक्त।

राष्ट्रीय पुस्तकालय

- भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा मई **1969 में डॉ .वी. एस झा** की अध्यक्षता में एक पुनर्निरीक्षण समिति (Review Committee) का गठन किया गया । समिति ने अपने प्रतिवेदन में राष्ट्रीय पुस्तकालय की **निम्नलिखित मूलभूत विशेषताओं का उल्लेख किया है,**

1. दुनिया में प्रख्यात हस्तियों की आत्मकथाएं देश में प्रकाशित सभी महत्वपूर्ण मुद्रित पाठयसामग्री को अधिग्रहीत कर उसे संरक्षण प्रदान करना ।
2. राष्ट्रीय महत्व के हस्तलिखित पुस्तकों का अधिग्रहण कर उन्हें संरक्षण प्रदान करना ।
3. राष्ट्रीय वाडमयसूची (National Biblogrphay) का प्रकाशन करना ।
4. देश के नागरिकों को वाछिंत विदेशी साहित्य को नियोजित ढंग से अधिगृहीत करना ।
5. प्रलेखन सेवाएं छायाप्रति व प्रतिकृति को सुविधाएं उपलब्ध कराना ।
6. अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक विनियम केन्द्र और अन्तरराष्ट्रीय ऋण केन्द्र की भूमिका निभाना
7. राष्ट्रीय पुस्तकालय को रेफरल (Refernal) केन्द्र के रूप में कार्य करना ।
8. देश के विभिन्न पहलुओं पर पूर्वव्यापी (Retrospective) सुचियों का प्रकाशन
9. महत्वपूर्ण शोध – पत्रिकाओं (Journals) के खण्डों का संग्रह
10. राष्ट्रीय सांस्कृतिक निधि का संरक्षण करना ।
11. पुस्तकालय संग्रह में अन्तराल का भरना ।
12. वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों पर सामान्य इतिहास , रूपरेखा और संदर्भ कार्य ।
13. राष्ट्रीय महत्व वाली पाण्डुलिपियों का अधिग्रहण और संरक्षण ।

Services of the National Library

- वाङ्मय सूची **(Bibliographic)**, सन्दर्भ सेवा और अध्ययन के अलावा अमानत (Security deposit) पर पुस्तकें ले जाने की सेवा प्रदान करना ।
- अन्तरराष्ट्रीय ऋण के लिए केन्द्र के रूप में कार्य कर, अन्तर पुस्तकालय ऋण **(Inter Library Loan)** सेवा प्रदान करना ।
- पाठकों का जागरूकता कार्यक्रम, इलेक्ट्रॉनिक केटालॉग सेवा, प्रलेख वितरण सेवा तथा ग्रन्थ सूची (Bibliographic) व सन्दर्भ सेवा प्रदान करना ।
- इलेक्ट्रॉनिक प्रलेख वितरण सेवा ई–पत्रिकाओं के लिए ई–निर्देशिका तथा पुस्तकालय में माइक्रोफिल्म माइक्रोफिच पढ़ने की सुविधा प्रदान करना ।
- फोटोकॉपी सेवा (भुगतान पर) प्रदान करना ।
- पुस्तकालयों और पुस्तकालयाध्यक्षों को परामर्श और प्रशिक्षण सेवाएं प्रदान करना ।
- पुस्तकालय समय के दौरान सभी सदस्यों को इन्टरनेट का उपयोग करने की अनुमति प्रदान करना।
- **पुस्तकालय पूरे वर्ष में 362 दिन अपने पाठकों को सेवा प्रदान करता है । केवल तीन दिन–15 अगस्त, 26 जनवरी तथा 02 अक्टूबर को महात्मा गांधी जयन्ती के अवकाश पर बंद रहता है ।**
- राष्ट्रीय महत्त्व एक दिवसीय प्रकाशनों को छोड़कर तथा सभी पाण्डुलिपियां प्राप्त करके उनका संरक्षण करना ।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- **श्री.बी.एस. केशवन** राष्ट्रीय पुस्तकालय के प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किए गए । **1 फरवरी, 1953** को भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद द्वारा इस पुस्तकालय को राष्ट्र की जनता के लिए खोलने की घोषणा की गई ।
- राष्ट्रीय पुस्तकालय को भारत के संविधान की 7 वीं अनुसूची में अनुच्छेद 62 में राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान का विशिष्ट दर्जा प्रदान किया गया है ।
- भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक पुस्तकें बांग्ला की है। अरब और फारसी के कुछ दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थ भी राष्ट्रीय पुस्तकालय की बहुमूल्य धरोहर है।
- कलकत्ता सार्वजनिक पुस्तकालय के विधान में यह प्रावधान था 300 रु. के निवेश पर कोई भी पुस्तकालय की प्रोपराइटर्स बन सकता है ।
- द्वारकानाथ टैगोर पहले प्रोपराइटर्स में से एक थे । डब्ल्यू. एच. स्टॉची पुस्तकालय के पहले लाइब्रेरियन थे। इसी के साथ प्यारेचंद्र मिश्रा सहायक लाइब्रेरियन थे जो बांग्ला उपन्यास विद्या के जनक माने जाते हैं
- 1890 में जब कलकत्ता म्युनिसिपल कमेटी ने लाइब्रेरी का संचालन अपने हाथ में लिया तो प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता विपिनचंद्र पाल को लाइब्रेरियन नियुक्त किया गया हालाकि उन्होंने 18 माह बाद त्याग पत्र दे दिया ।

1 कलकता पब्लिक लाइब्रेरी

1 स्थापना में सहयोग :– जे. एच. स्ट्राक्लर
2 मालिक :– द्वारिका नाथ टैगोर
3 स्थापना :– 1836
4 पुस्तकें :– 68000
5 विकास :– 3 चरण में
6 सविंधान की धारा :– भारतीय संविधान में संघ सूची की 7वी अनुसूची के अनुच्छेद 62 में स्थापित कि गई।

2 21 मार्च 1836 को जनता के लिए खोला गया।

3 1841 में फोर्ट विलियम कॉलेज में चलता था।

4 1844 में मेटकोफ भवन में स्थानान्तरित किया।

5 1857 में यूरोपियो ने सहायता करना बन्द कर दिया।

6 1859 में कलकता नगर पालिका द्वारा संचालित किया गया।

7 1898 में सम्पूर्ण गतिविधियां बन्द हो गई।

8 1891 में इम्पीरियल लाइब्रेरी की स्थापना लार्ड कर्जन द्वारा की गई।

9 सन् 1902 में कलकता लाइब्रेरी को इम्पीरियल लाइब्रेरी में मिला दिया गया।

10 30 जनवरी 1903 को इम्पीरियल लाइब्रेरी जनता के लिए खोला गया।

1 हरीनाथ डे, सन् 1907 में पुस्तकालय अध्यक्ष बने।
2 श्री चैपमैन, सन् 1911 में पुस्तकालय अध्यक्ष बने।
3 के. एम. असादुल्ला, सन् 1930–47 में पुस्तकालय अध्यक्ष रहे।

11 08 सिम्तबर 1948 को इसका नाम राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता कर दिया गया।

1 प्रथम पुस्तकालय अध्यक्ष :– बी. एस. केशवन
2 Directoral General :– Shri Padma Lichan Sahu (Nov. 2019)
3 Director :– Prof. Swapan Chakravorty(2010)
4 पुस्तकें :– 180000
5 अन्तिम लाइब्रेरीयन :– Shri H. P. Gedam
6 362 दिन खुला रहता है।
7 भारत सरकार के संस्कृति मंत्राालय के अधीन संचालित है।

12 1951 में डॉ राजगोपालाचारी ने राष्ट्रीय पुस्तकालय को बेल्वेडियर भवन उपलब्ध करवाया।

13 1 February 1953 को भारत संघ के मंत्री मोलाना अब्दुल कलाम आजाद ने राष्ट्रीय पुस्तकालय को सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए खोल दिया।

14 सन् 1954 में राष्ट्रीय पुस्तकालय में पुस्तक प्रदाय अधिनियम पारित किया गया।

15 22 जनवरी 2002 को पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री विरेन जे. शाह ने भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय कि Website लॉन्च की।

16 National Library of India का वर्तमान नाम भाषा भवन है।

17 भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय में AACR-2 का प्रयोग किया जाता है। तथा विषेष शिर्षक के रूप में Subject Heading Used in the Dictionary of Library Congress के 8 वे संस्करण का प्रयोग किया जाता है, तथा वर्गीकरण के लिए DDC का प्रयोग किया जाता हैं।

पुस्तकालय अधिनियम

❖ **पुस्तकालय अधिनियम की आवश्यकता एवं महत्त्व (Importance and need of Library Act)**

- देश प्रदेश में पुस्तकालय तंत्र (**Library System**) की स्थापना कर पुस्तकालयों को कानूनी संरक्षण प्रदान करना , जिससे उनका विकास सुनियोजित तरीके से किया जा सके ।
- समाज के प्रत्येक वर्ग को पुस्तकालय सेवाओं का लाभ निःशुल्क और बिना किसी भेदभाव के प्रदान करना।
- पुस्तकालयों के विकास के लिए आय के स्रोत सुनिश्चित करना तथा भावी विकास योजनाओं का प्रारूप तैयार करने का सुदृढ़ आधार प्रदान करना ।
- पुस्तकालयों के लिए समुचित प्रशासनिक ढांचा तैयार कर प्रशासनिक कुशलता में अभिवृद्धि करना ।
- राजनीतिज्ञों और प्रशासकों द्वारा किए जाने वाले अनावश्यक हस्तक्षेपों पर रोक लगाना ।
- पुस्तकालय अधिनियम द्वारा पुस्तकालय नियोजन (**Library Planning**) का कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन करना ।

❖ **एक आदर्श पुस्तकालय अधिनियम की विशेषताएँ/घटक (Salient Features/Factor of a Model Library Legislation)**

- पुस्तकालय अधिनियम पुस्तकालय तथा पाठकों की मांग के अनुरूप निर्मित किया जाता है । इस सम्बन्ध में डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने अपनी पुस्तक "**Library Development Plan (1950)** में अनेक बातों का उल्लेख किया है तथा भारत सरकार द्वारा **गठित सलाहकार समिति (1959)** ने भी अपने प्रतिवेदन में ऐसे प्रावधानों को पुस्तकालय अधिनियम में सम्मिलित किए जाने की अनुशंसा की है ।

❖ **अतः एक आदर्श पुस्तकालय अधिनियम में निम्नवत् प्रावधान वांछनीय है ।**

(1) जन पुस्तकालय सेवा पूर्णतः निःशुल्क हो । उसके लिए धन की व्यवस्था स्वायत्त संस्थाओं द्वारा पुस्तकालय **उपकर (Cess)** लगाकर तथा राजकीय अनुदान द्वारा उपलब्धता हो । अधिनियम में वित्तीय लोतों के साथ साथ **लेखा परीक्षण (Auditing)** का भी प्रावधान हो)

(2) राज्य में एक सुदृढ़ **पुस्तकालय तंत्र (Library System)** की स्थापना हो , जिससे राज्य के समस्त सार्वजनिक पुस्तकालय एक – दूसरे से परस्पर और अन्तर **पुस्तकालय ऋण (Inter Library Loan)** की प्रक्रिया बढ़ावा मिल सके ।

(3) प्रत्येक राज्य में एक राज्य **केन्द्रीय पुस्तकालय (State Central Library)** की स्थापना हो , जिसमें डलीवरी ऑफ एक्ट के बाद में प्रकाशित समस्त पुस्तकों को प्रतियां उपलब्ध हो सके ।

(4) अधिनियम में समाज के विभिन्न वर्गो यथा – नेत्रहीनों के लिए , बच्चों के लिए , बुर्जुगों के लिए दिव्यांगों आदि के लिए विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय खोलने का प्रावधान होना चाहिए ।

(5) पुस्तकालय में **मुक्त द्वार प्रणाली (Open Access System)** को अनिवार्यता का प्रावधान हो

(6) स्थानीय कर्मचारियों को नियुक्तियों का अधिकार होना चाहिए ।

(7) अधिनियमों में प्रस्तावित समस्त प्रावधान पुस्तकालय विकास से सम्बन्धित एवं उनके सहायक होने चाहिए ।

पुस्तकालय अधिनियम एवं जानकारी

- पुस्तकालय अधिनियम राष्ट्रीय, प्रान्तीय या स्थानिय स्तर पर सक्षम सत्ता के द्वारा बनाए गए ऐसे कानुनी मान्यता प्राप्त नियम विनियमों से है, जिनका उद्देश्य अधीनस्थ पुस्तकालय में सग्रंहीत सामग्री का उपयोग एवं उनकी सूरक्षा करना, पुस्तकालयों का विकास करना तथा सेवाओं को सूचारू बनाए रखना है।
- भारत में स्वतंत्रता के बाद **पब्लिक लाइब्रेरी अधिनियम** पारित होने वाला मद्रास पहला राज्य था।
- **एशियाई** देशों में सबसे पहले **जापान 1899** में पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया।
- **2 नवम्बर 1789 में फ्रांस** में पहला पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया।
- पुस्तकालय अधिनियम का **इतिहास 19 वीं शताब्दी** के मध्य प्रारम्भ होता है।
- विश्व का सर्वप्रथम सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम **1850 में इग्लैण्ड़** में पारित हुआ। **ब्रिटिश म्युजियम** में कार्यरत सहायक **एडवर्ड एडवर्डस** ने प्रयत्न किया यह अधिनियम **इवर्ट एक्ट** के नाम से प्रसिद्ध है।
- भारत में पुस्तकालय अधिनियम दिशा में कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् **Dr. S. R. Ranganathan** का महत्वपूर्ण योगदान है।
- **UNESCO Library Manifesto** ने भी पुस्तकालय अधिनियम बनाने पर जोर दिया। इस विषय पर **सिन्हा कमेटी 1957** जिसकी रिपोर्ट **1961** में प्रकाशित की गई।
- **UNESCO Regional Seminar on Library Development South Asia Delhi** ने पुस्तकालय विधि निर्माण की विशेषता बताई।
- **चट्टोपाध्याय समिति** की अनुशंसा की प्रत्येक राज्य में **पुस्तकालय अधिनियम** बनाया जाए
- ग्रंथालय विज्ञान का दूसरा सूत्र **'प्रत्येक पाठक को उसकी अभीष्ट पुस्तक मिले** राज्य पर दायित्व ड़ालना है
- विश्व के **108 देशो** एवं राज्यों **में पुस्तकालय अधिनियम** लागु किये जा चुके है।
- **1852 में मैनचेस्टर** में **सार्वजनिक पुस्तकालय** स्थापना हुई।

अधिनियम

1

1. **Madras (1948) –**संशोधित रूप से लागू 15 November 1955 (10 paise per rupee on property tax) (यह 23 Page में आया)
2. **Andhra Pradesh (1960)-** 25 February 1960 में लागु हुआ (8 paise per rupee on house tax and property tax) (यह 29 Page में आया)
3. **Karnataka (1965) -** 30 April 1965 (5% of the land revenue) (यह 24 Page में आया
4. **Maharashtra (1967) –** 20 December 1967 (No library Cess (उपकर) (यह 14 Page में आया)
5. **West Bengal (1979)-** 7 January 1979 (No library Cess (उपकर) (यह 08 Page में आया)

2

6. **Manipur (1988) –** (No library Cess (उपकर) (यह 14 Page में आया)
7. **Haryana (1989) –** 25 September 1989 (Surcharge on House tax and Property tax, rate decide by government from time to time (यह 15 Page में आया)
8. **Kerala (1989) -** 18 May 1989 (Surcharge on House tax and Property tax (यह 26 Page में आया)
9. **Goa (1993)-**26 November 1993 (No library Cess) (यह 22 Page में आया)
10. **Mizoram (1993)** -10 March 1993 (No library Cess) (यह 06 Page में आया)

4

16. **Lakshadweep (2007)** (No library Cess)
17. **Bihar (2008)** - 23 April 2008 (No library Cess) (यह 08 Page में आया)
18. **Chhattisgarh (2008)-** 10 September 2008 (No library Cess) (यह 22 Page में आया)
19. **Arunachal Pradesh (2009)** - 04 November 2009 (No library Cess) (यह 04 Page में आया)

3

11. **Odisha (2001) -** 11 March 2001 (No library Cess) (यह 10 Page में आया)
12. **Gujarat (2001)** - 1 September 2001 (No library Cess) (यह 11 Page में आया)
13. **Uttarakhand (2005)** - 26 April 2005 (No library Cess) (यह 17 Page में आया)
14. **Rajasthan (2006)** - 22 April 2006 (No library Cess) (यह 18 Page में आया)
15. **Uttar Pradesh-**04 September 2006 (No library Cess) (यह 10 Page में आया)

1 DELNET को January 1988 में India International Centre library में शुरू किया गया था और 1992 में इसे एक सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया था।

- **Full Form** :– Developing Library Network
- **स्थापना :–** 1992 (Delhi Library Network पूर्व नाम)
- **मुख्यालय :–** नई दिल्ली
- **अध्यक्ष :–** Dr. J.H. K. kaul
- DELNET का 13 September 2000 के बाद नाम Developing Library Network हो गया।

2 **DELNET Society Rule 1860** के तहत पंजीकृत किया गया।

- भारत का **प्रथम पुस्तकालय नेटवर्क** है **NISSAT** व **NIC** की सहायता से स्थापित किया गया।
- DELNET द्वारा नियमित रूप से आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को NACLIN के नाम से जाना जाता हे।।
- NACLIN का पूरा नाम – National Convention on Knowledge Library and Information Networking

6 **Publication :-**

- NACLIN Procedings
- Delnet Newsletter 2018
- Director's Report 1992
- Silver Jubilee Publication

✹ **डेलनेट द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर :–**
DELDOS,
DEL WINDOS,
DEL PLUS,
DELSIS

DELNET

3 DELNET -Wan प्रकार का नेटवर्क है।

- **Tagline :–** Networking Knowledge in South Asia
- **DELNET** में **AACR-2** का प्रयोग किया जाता है।
- **DELNET का** डेटाबेस डेविसा है।
- **DELNET** के पास इसके सदस्यों के रूप में **6834** पुस्तकालय हैं, जिनमें से **291** पुस्तकालय दिल्ली में हैं, **28** राज्यों में **6521** दिल्ली के बाहर और **8** केंद्र शासित प्रदेशों में और **22** विदेशों में हैं।

5 **DELNET की इन्टरनेट माध्यम मे सेवाएँ**

(i) GISTNIC
(ii) Library of Congress & Subject Heading
(iii) MEDLARS
(iv) US Patents Fulltet
(v) NET Happenings
(vi) MED–CLIPS
(vii) IFLA Related Servies
(viii) Libjobs
(ix) Books New Arrivals
(x) Book Reviews from Internet
(xi) Current Contents

4 **डेलनेट की सदस्यता**

- **For India and SAARC countries**
  (i) प्रवेश शुल्क (एक बार) 5000 = 00
  (ii) विभागीय सदस्य शुल्क 7000 रुपये प्रतिवर्ष
  (iii) सम्बद्ध विभागीय सदस्यता शुल्क 10000 रुपये प्रतिवर्ष
- **For Other Countries**
  (i) प्रवेश शुल्क (एक बार यू.एस. डॉलर 100 प्रतिवर्ष
  (ii) विभागीय सदस्यता शुल्क यूएस डॉलर 500 प्रतिवर्ष
- **Free for Ill Services**
  (i) ऑनलाइन आई एल एल. सेवा 4000 रुपये प्रतिवर्ष . फोटोकॉपी शुल्क तथा बाहर के पुस्तकालयों से ग्रन्थ ऋण सेवा पर डाक खर्च अतिरिक्त ।

विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में ज्ञान जगत का चित्रण
(MAPPING OF UNIVERSE OF SUBJECTS IN DIFFERENT CLASSIFICATION SCHEMES)

विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियाँ – पुस्तकालयों में विभिन्न विषय साहित्य के प्रलेखों को अनुकूल क्रम में व्यवस्थित करने के लिए वर्गीकरण अनिवार्य है। प्रलेखों को स्थायी सहायक क्रम प्रदान करने की दृष्टि से पुस्तकालय विज्ञानियों ने समय–समय पर विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों का निर्माण किया कुछ प्रमुख और बहु प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं–

1.	Dewey Decimal Classification Scheme -**DDC** (1876)	– Melvil Dewey
2.	Expansive Classification Scheme- EC (1891)	– C.A. Cutter
3.	Universal Decimal Classification—UDC (1905)	– Poul Outlet H.Law. Fountain
4.	Library of Congress Classification- LOS (1904)	– LOC / J.C. Hanson
5.	Subject Classification Scheme -SC (1906)	– J.D. Brown
6.	Colon Classification Scheme -CC (1933)	– S.R. Ranganathan
7.	Bibliographic Classification - BC (1935)	– H.E. Bliss
8.	Rider's Internatioal Classification -RIC (1961)	– Fremont Rider
9.	Information Coding Classification -IC (1970)	– I. Dahelberg
10.	Broad System of ordering - BSO (1978)	– FID , UNESCO

- उपरोक्त विभिन पद्धतियों में से दशमलव वर्गीकरण पद्धति, कोलन वर्गीकरण पद्धति और सार्वभौमिक दशमलव पद्धति भारत में सर्वाधिक प्रचलित हैं।
- इन वर्गीकरण पद्धतियों में विषय–जगत की स्थिति (Mapping) का वर्णन इस प्रकार है –

DDC में विषय जगत की स्थिति का निर्धारण
(Mapping of Universe of Subject Dewey Decimal Classification)

- मेल्विल ड्यूई ने अपने वर्गीकरण का आधार समकालीन हींगलवादी दार्शनिक डब्ल्यू०टी० हैरिस (1835–1909) के द्वारा प्रतिपादित बेकन के व्युत्क्रमित विषयक्रम Inverted Baconian Order) को बनाया। हैरिस की वर्गीकरण पद्धति **फ्रांसिस बेकन** के वर्गीकरण के दर्शन पर आधारित थी। जिसे 1970 में प्रतिपादित किया गया था।
- इसमें ज्ञान को सबसे पहले अनुशासनानुसार विभाजित किया गया है जो किसी भी पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति में पहली बार किया गया था। अनुशासनानुसार विभाजन में विभिन्न विषय अलग–अलग वर्गों में बिखर जाते हैं।)

❖ **DDC मे मुख्य वर्गो को निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया**

- **बुद्धि की तीन क्षमताओं द्वारा उत्पन्न तीन वृहद् प्रभाव है–**

मुख्य वर्ग	अनुशासन	मानसिक क्षमता
100–600	विज्ञान	विवेक
700–800	कला एवं साहित्य	कल्पना
900	इतिहास	स्मृति

❖ **मुख्य वर्गों की रूपरेखा :**

Class Number		Main Classes
000	–	Generalities
100	–	PhilosophyAnd Psychology
200	–	Religion
300	–	Social Sciences
400	–	Language
500	–	Natural Sciences And Matheamtics of Pure Science
600	–	Technology /Applied Sciences
700	–	The Arts
800	–	Literature
900	–	GeographyAnd History

Library Management
(पुस्तकालय प्रबंधन)

- अंग्रेजी शब्द Management का विभाजन इस प्रकार होता है।
  Management = Manage + Men + T (Tactfully)
  अर्थात् प्रबंधन = व्यवस्था करना + मानव की + कौशलपूर्ण युक्ति के साथ। इस प्रकार प्रबंधन का अर्थ किसी संस्था में कौशलपूर्ण युक्ति के साथ मानव की व्यवस्था एवं संचालन करना ही प्रबंधन कहलाता है)

❖ **परिभाषाएं (Definitions)**

✍ ' प्रबंधन ' औपचारिक रूप में संगठित समूह के साथ तथा उसके द्वारा कार्य कराने की कला है । Management is the art of getting things done through and with formally organised group

Herold Koontz

✍ प्रबंधन का अर्थ संस्था के क्रियाकलापों को निपुणता के साथ व्यवहार करना नियंत्रित करना एवं निर्देशित करने से होता है ।
Management means the skills or manner of handling . controlling and directing the working of an institutions –

– J- Lundy

- प्रबंधन का आशय पूर्वानुमान लगाने एवं योजना बनाने संगठन की व्यवस्था करने निर्देश देने समन्वय करने तथा नियंत्रित करने से है ।
  Management is the forecast and to plan] to organize] to command] to cordinate and to control

H- Fayal

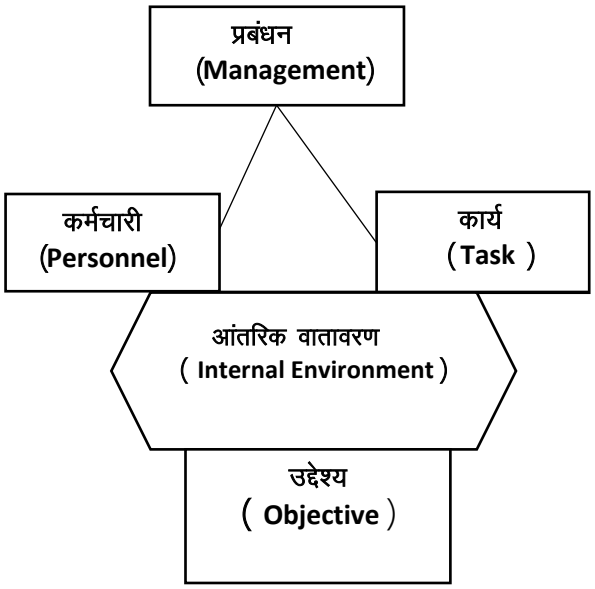

- **1880** में इस आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रबंधन की समस्याओं को वैज्ञानिक आधार पर हल करना था इस आन्दोलन के प्रवर्तक **F.W. Taylor** तथा **Henri Fayol** थे।
- वैज्ञानिक प्रबंधन के जन्मदाता **F.W. Taylor** जिन्होंने सन् **1911** में अपनी पुस्तक वैज्ञानिक प्रबंधन का सिद्धान्त सर्वप्रथम प्रकाशित किया प्रबंधन के क्षेत्र में वैज्ञानिक विचारधारा का विकास **19वीं शताब्दी** में प्रारंभ हुआ था।
- वैज्ञानिक प्रबंधन शब्द का सबसे पहले प्रयोग **1910 में लुईस ब्रेड़िज** द्वारा किया गया था।
- Library Science में प्रबंधन शब्द का प्रयोग **1950** में किया गया था।
- **ए ईजी ईवांश** ने वैज्ञानिक सिद्धान्तों को Library के साथ वर्गीकृत किया।
- प्रबंधन में Classical Organisation Theory **F.W. Taylor** द्वारा प्रतिपादित की गई।
- Pincipal of Management Henri Fayol ने सन् **1913** में दिया।
- **Administrative or Process management** Henry Fayol के द्वारा दी गई।
- Bureaucratic model **Max Weber.** के द्वारा दी गई
- **System School of Management** का संबंध F.W. Taylor से हैं।
- Henri Fayol का संबंध **Classical Ideology** से हैं
- Henri Fayol द्वारा **Union is Strength** प्रबंधन सिद्धान्त का समर्थन किया।
- **Management** के तीन स्तर होते है – 1. Top, 2. Middle, 3. Operational
- हेनरी फियोल ने प्रबन्धन के **14 सिद्धान्त 1916** में दिये।

प्रबंधन के स्तर
(Levels of Management)

किसी संस्था के प्रबंधन के स्तर से तात्पर्य प्रबंधन से संबंध रखने वाले विभिन्न पदाधिकारियों के वर्गीकरण से है । तदापि प्रबंधन के स्तर की कोई नियत संख्या नहीं है किन्तु सामान्यतया इसे तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है जो इस प्रकार है

(1). Top Management
(2). Middle Management
(3). Supervisory Management

❖ क्रांतिक पथ विधि के लाभ

- **क्रांतिक पथ विधि (CPM)** की सहायता से सभी प्रोजेक्ट विशेषज्ञ पूरे प्रोजेक्ट का पूर्ण ब्यौरा जान लेते हैं।
- **CPM** पूरे प्रोजेक्ट योजना को नियंत्रित ढंग से पूर्ण करने, समय तथा लागत को ठीक ढंग से कार्यान्वित करने की एक मानक विधि है।
- यह प्रोजेक्ट को पूरा करने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण तथा सस्ती विधि है।

❖ क्रांतिक पथ विधि (CPM) की सीमाएँ

- क्रांतिक पथ विधि कम रूटीन प्रोजेक्ट्स के कारण, प्रोजेक्ट को पूर्ण होने में लगने वाले समय में काफी अनिश्चितता रहती है, जिससे कि क्रांति पथ विधि **(CPM) मॉडल** द्वारा एक सीमा तक ही लाभ उठाया जा सकता है।

Data flow diagram

- **डेटा प्रवाह आरेख (DFD)** – DFD टॉप–डाउन आरेखों का एक सेट है जो एक सिस्टम के भीतर सभी प्रक्रियाओं, प्रक्रियाओं के बीच डेटा प्रवाह और डेटा स्टोर को दर्शाता है। DFD सामान्य स्तर पर शुरू होते हैं और उत्तरोत्तर अधिक विस्तृत होते जाते हैं
- **DFD Information System** से गुजरने वाले डेटा के flow का एक graphical representation है जैसा कि इसके नाम से पता चल रहा है यह केवल डेटा के flow, डेटा कहाँ से आया, डाटा कहाँ जायेगा, तथा यह कैसे store होगा इस पर focus होता है । Data flow diagram का प्रयोग Software system के overview को बनाने के लिए किया जाता है।
- **Data flow diagram** का सबसे पहला प्रयोग **1970** के दशक में किया था, तथा इसे Larry Constantine तथा Ed Yourdon ने बनाया था।
- **Data flow diagram** आने वाले (input) ओर **(output) data flow** तथा store किये हुए data को diagram अर्थात् graphical रूप में present करता है, DFD इसकी process के बारें में विस्तार मे नही describe कर पता है. लेकिन इसके लिए flow chart है। flow chart और DFD दोनों अलग होते है।

❖ Types of Data flow diagram

DFD दो प्रकार (types) का होता है।

1. लॉजिकल (Logical) DFD
2. फिजिकल (Physical) DFD

1. Logical DFD:& Logical DFD business activities पर केन्द्रित रहता है अर्थात् यह system में data के flow तथा system के process पर focus रहता है।

2. Physical DFD:– Physical DFD इस बात पर केन्द्रित रहता है कि सच में डेटा flow system में किस प्रकार implement हुआ है।

❖ DFD components

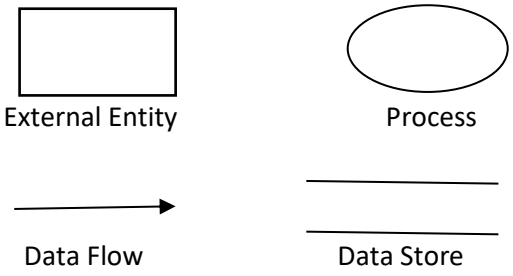

1. **Entities** :– Data के source तथा destination को entities कहते है, Entities को rectangle (आयत) के द्वारा dislpay किया जाता है।
2. **Process:–** यह एक कार्य होता है जो कि सिस्टम के द्वारा किया जाता है. इसे circle (वृत्त) या round–edged rectangle (गोल–धारित आयत) के द्वारा dislpay किया जाता है
3. **Data flow:–** यह डेटा के Movement (गति) को दिखाता है, इसे arrow (तीर) द्वारा dislpay किया जाता हैं।
4. **Data storage** :– ऐसी जगह जहाँ Data store होता है, इसे एक ऐसे आयत से dislpay किया जाता है जिसकी एक side नहीं होती या दोनों side नहीं होती है।

TQM (Total Quality Management)

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन के अर्थ का उद्देश्य पाठकों की माँग को गुणवत्ता के साथ पूरा करना है ।

❖ TQM में तीन शब्द हैं जिनके भिन्न – भिन्न अर्थ हैं

- **T (Total)** – यह शब्द किसी संस्था के उन कर्मचारियों के विचारों को संदर्भित करता है जिसमें पूर्ण गुण हो ।
- **Q (Quality)** – किसी संस्था के कर्मचारी तथा उपयोक्ता के प्रत्येक मद में भी गुणवत्ता संदर्भित करता है । जो उपयोक्ताओं की माँग होती है ।
- **M (Management)** – किसी संस्था के संपूर्ण प्रबंध की ओर संकेत करता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन वह अवधारणा है जिसमें किसी संस्था के कर्मचारियों तथा उपयोक्ताओं दोनों की सेवा संबंधी मदों में गुणवत्ता पाई जाती है

- **परिभाषा** – संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन की परिभाषा का व्याख्यान विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न तरीके से दिया है जो इस प्रकार है '
- **टी . क्यू . एम.फोरम (TQM Forum) के अनुसार** , '' पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन मानव आधारित प्रबंधन प्रणाली है जिसका उद्देश्य न्यूनतम लागत पर उपयोक्ताओं को सतुष्टि प्रदान करना है ।
- **आई.एस.ओ. (ISO) के अनुसार** , '' किसी संस्था की पहुँच मुख्यतः उसके सभी कर्मचारियों की अच्छी गुणवत्ता पर निर्भर करती है इससे कर्मचारिया के साथ – साथ उपयोक्ता भी लाभान्वित होता है ।
- **विकास** :– United States of America की Naval air systems command द्वारा सन् 1985 में किया गया।
- William Edward deming और **Dr. J. M. Juran** द्वारा परिवर्तित किया गया।
- Father of Quality Management का जनक **Dr. J. M. Juran** को माना जाता है।
- Susan Jurow द्वारा **Integrating Total Quality Managenent in a Library Setting** की रचना कि।
- Total Quality Management में **पाचं स्तम्भ** होते है, जो निम्न है।
  1. Porduct
  2. Leadership
  3. Oraganization
  4. Process
  5. Commitment
- सूसान व बर्नाड ने TQM के लिए **4 अवरोधो** कि पहचान की जो निम्न है।
  1. Vocabulary
  2. Resources
  3. Process
  4. Professionalism
- **सूसान व बर्नाड** ने पुस्तकालय की व्यवस्था मे संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन के क्रिर्यान्वयन हेतु मॉडल प्रस्तुत किया

❖ **एडवर्ड डेमिन्स के अनुसार TQM के 14 बिन्दु**

1. Create Purpose for Improvement
2. Adopt the New Philosophy
3. Cease Dependence on Inspection to Achieve quality
4. Work Wish one supplier to produce cost
5. Continuous Improvement
6. On–the–Job training
7. Leadership
8. Drive out Fear
9. Break Down silor
10. No Slogans
11. No Quotas or Numerical Goals
12. Remove Annual Ratings or Merit System
13. Institute Education and Self –Improvement Programmes
14. Involve All Workers in the Transformation

❖ '' टी.क्यू.एम. के तत्व

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन पाठकों की आवश्यकताओं को समझकर पाठकों को उसकी सेवा और संतुष्टि को सुधारने पर केंद्रित है । संपूर्ण गुणवत्ता के कई तत्व हैं जो परिर्वतन के लिए विभिन्न क्षेत्रों को संबोधित करते हैं । इन तत्वों को चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है ।

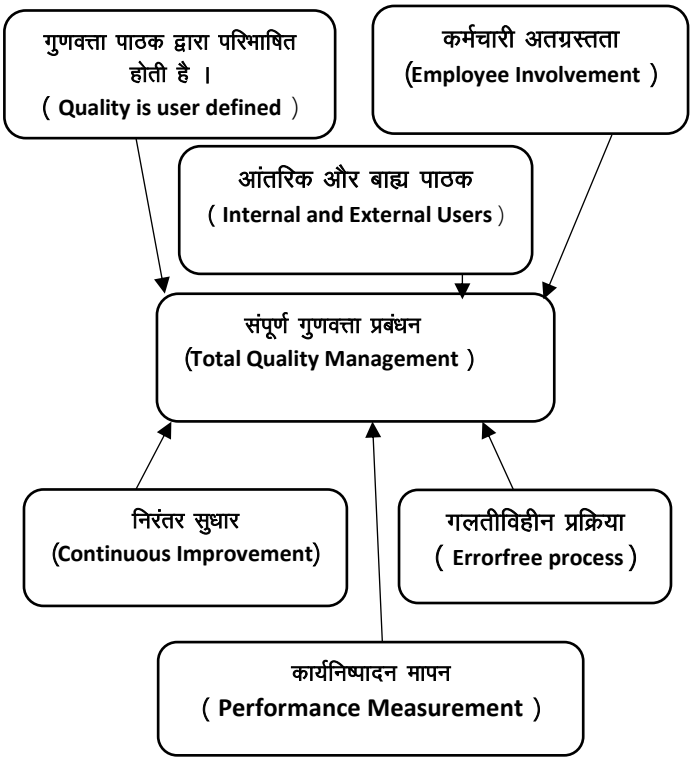

पुस्तकालय और समाज (Library and Society)

- लाइब्रेरी शब्द लैटिन भाषा के **LIBER** शब्द से बना है तथा इसका समानार्थी शब्द लिब्रा जो फ्रेंच भाषा का शब्द है।
- पुस्तकालय शब्द **पुस्तक + आलय** से मिलकर बना होता है। जिसका अर्थ होता है '' **पुस्तको का घर''।**
- पुस्तकालय शब्द का सबसे पहले प्रयोग **1374** में **ऑक्सफोर्ड इंग्लिस डिक्शनरी** में किया गया।
- पुस्तकालय विज्ञान शब्द का प्रथम प्रयोग 1808 में **Martin schrettinger** की बुक में किया गया।
- पुस्तकालय सेवा की त्रिमुर्ति पुस्तक, पाठक और कर्मचारी को कहते है।
- BIBLIOPHILE शब्द **A book Lover** के लिए प्रयोग किया जाता है।
- Bibliocast शब्द **पुस्तको को नष्ट करने वालो** के लिए प्रयोग किया जाता है।
- Bibliopoly शब्द **दुर्लभ पुस्तको की ब्रिक्री** के लिए प्रयोग किया जाता है।
- अच्छा पुस्तकालय भवन निर्माण का परिणाम पुस्तकालयाध्क्ष और वास्तुविद होता है।
- भारत के तमिलनाडु राज्य में सर्वप्रथम **मोबाइल लाइब्रेरी सेवा** को प्रारम्भ किया गया था। रंगनाथन ने इसे **लाइब्रेरी ऑन व्हील्स** की संज्ञा दी
- लिब्राशीन का प्रयोग डॉ. रंगनाथन के द्वारा किया गया।
- पुस्तकालय विज्ञान शब्द का प्रथम प्रयोग **एक विषय के रूप में** डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने किया।
- अंग्रेजी भाषा में पुस्तकालय विज्ञान विषय कि पहली टेक्स्ट बुक पंजाब लाइब्रेरी प्राइमर को माना जाता है।
- पुस्तकालय विज्ञान में सूचना विज्ञान शब्द को सन् **1964** में **University of Pittsburgh** ने जोड़ा।

पुस्तकालय के अन्य भाषाओं में नाम

- Hindi – में ग्रंथालय कहा गया हैं।
- English – में Library कहा गया हैं।
- **उर्दू** – में किताब घर कहा गया है।
- **इटालियन** – में Biblioteca कहा गया है।
- **जर्मनी** – में Bibliotheck कहा गया है।
- **रशियन** – में Bibliotek कहा गया है।
- **स्पेनिश** – में Bibliotheca कहा गया है।
- **फ्रेंच** – में Bibliotheque कहा गया है।

पुस्तकालय विज्ञान शिक्षा Library Science and Education

- सर्वप्रथम पुस्तकालय शिक्षा के लिए संस्थान स्थापित करने का श्रेय **Melvil Dewey** को है।
- भारत में पुस्तकालय शिक्षा प्रारंभ करने का श्रेय **Sir Sayajirao Gayakwad III** को जाता है।
- भारत में पुस्तकालय विकास के लिए काम करने वाला पहला व्यक्ति **Dr. Ranganathan** था।
- भारत में 1901–06 से कलकत्ता में **Imperial Library** (अब नेशनल लाइब्रेरी) के पहले लाइब्रेरियन जॉन मैकफर्लन ने Library Science का पहला कोर्स प्रारंभ किया
- **Madras University** में प्रथम पूर्णकालिक विश्वविद्यालय लाइब्रेरियन को नियुक्त किया।
- भारत में University लेवल पर Library Science का प्रथम पाठ्यक्रम Madras में शुरू किया गया।
- Madras University में Library Science में **सर्टिफिकेट कोर्स (certificate course)** की शुरूआत **1931** में की गई।
- Madras University में 1937 में, **Certificate course** को **Diploma course** में परिवर्तित कर दिया गया।
- पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स **(Post Graduate Diploma course) 1942** में शुरू करने वाला दूसरा विश्वविद्यालय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय **(Banaras Hindu University)** था।
- Banaras Hindu University में पुस्तकालय में ग्रेजुएट की शिक्षा 1941–42 में आरंभ की गई।
- Aligarh Muslim University द्वारा सर्टिफिकेट कोर्स (certificate course) **1968–69** में बंद कर दिया। इसके बाद, **1970–71** में **Master of Library Science** पेश किया गया।
- भारत में 1958–59 में **Diploma in library science** को Bachelor in library science में परिवर्तित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा किया गया।
- प्रोफेसर एस. **बशीरुद्दीन** ने देश में पहली बार पूर्णकालिक व्याख्याता के साथ **1968–69** में **'पुस्तकालय विज्ञान स्नातक'** की शुरूआत की।
- भारत में Delhi University के बाद Library में दूसरी Phd की पेशकश 1977 में **Punjab University, Chandighar** के द्वारा की गई।
- **1957** में श्री **डी.बी. कृष्ण राव** को Delhi University द्वारा **प्रथम Phd** की उपाधि दी गई उनका शोध कार्य

Fact analysis and depth classification of agriculture शीर्षक पर था।

- 1957 में श्री डी.बी. कृष्ण राव ने Library Science में Phd की डिग्री **Dr. S. R. Ranganathan** और **Dr. S.Das Gupta** के मार्गदर्शन में की।
- भारत में Library Science में द्वितीय Phd की डिग्री सन् 1977 में डॉ. पांडे एस. के शर्मा को Punjab University द्वारा प्रदान की गई।
- Library & Information Science के क्षेत्र में भारत में सेनगुप्ता को सबसे पहले दो Phd की डिग्री मिली
- सर्वप्रथम **Library Science** में M.phil भारत में Delhi University द्वारा, **1978** में स्टार्ट की गई।
- **WA Borden** के प्रयास से प्रथम भारतीय **Library Science** पत्रिका 1912 में प्रकाशित की गई।
- **Melvil Dewey** द्वारा स्थापित किये गये प्रथम Library Science School में प्रारंभ में **20 छात्र** और **7 शिक्षक** (अंशकालिक) थे।
- भारत में द्वितीय पुस्तकालय स्कूल **Punjab University,** लाहौर में, 1916 में **A.D. Dickenson** के द्वारा खोला गया।
- मुंबई में पुस्तकालय शिक्षा **1944** में प्रारंभ की गई।
- कोलकाता में पुस्तकालय शिक्षा **1946** में प्रारंभ की गई।
- दिल्ली में पुस्तकालय शिक्षा **1947** में प्रारंभ की गई।
- London School of Librarianship (England में पहला Library Science का स्कूल) **1921** में प्रारंभ किया गया।
- सन् 1809 में **जस्टिस विनसर (Justice winsor)** ने Library Science की शिक्षा के लिए प्रथम स्कूल 1887 में कोलम्बिया कॉलेज में **"School of Library Economy (1887)** नाम से Melvil Dewey के प्रयास से स्टार्ट किया गया।
- D. Lit की पहली डिग्री **(1992) Dr. B. B. Shukla** को प्रदान की गई।
- D. Lit पूरी दुनिया में Library Science में उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के द्वारा पहली डिग्री होने का दावा करता है।
- **W.A.Borden** मेल्विल डेवी के शिष्य थें।
- 1935 में **खान बहादुर** की उपाधि **के.एम.आसादुल्ला** को दी गई।
- इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी **लंदन** में स्थित है।
- Training Classes for the Library workers – आध्रप्रदेश लाइब्रेरी एसोसियशन द्वारा 1920 में विजयवाड़ा में प्रारम्भ किया।

पद्म श्री से सम्मानित व्यक्ति

- **1957** में **Dr. S. R. Ranganathan** को भारत सरकार ने सम्मानित किया।
- **1960** में **B. S. Kesavan** को भारत सरकार ने पद्म श्री से सम्मानित किया।
- **1972** में **Iyyanki Venkata Ramanayya** को भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।
- **1976** में **S. Bashiruddin** को भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।
- **2004** में **Prof. P. N. Kaula /Prithvi Nath Kaula)** को भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

Events & Celebrations

- National Library Day - **14th November**
- National Librarian's Day - **12th August**
- National Reading Day - **19th June**
- World Book & Copyright Day - **23rd April**
- International Literacy Day - **8th September**
- National Reading Month - **19th June - 18th July**
- National Library Week - **14th - 20th November**
- पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस (Librarian's Day) डॉ रंगनाथन के जन्म दिन **12 अगस्त** पर मनाया जाता है।
- भारत में **'National Library Week'** 1968 से मनाया जा रहा है।
- भारत में 'National Library Week' मानाने का प्रस्ताव **ILA** द्वारा दिया गया था ।
- USA में 'National Library Week' **अप्रैल** मे मनाया जाता है। USA में 'National Library Week' **1958** से मनाया जाता है। USA में 'National Library Week' मनाने का प्रस्ताव **ALA** द्वारा दिया गया था।
- World Book Day **23 April 1995** से मनाया जा रहा है।
- National Book Mobile Day अमेरिका में **अप्रैल महीने** में मनाया जाता हैं।
- International literacy Day Unesco के द्वारा **8 सितम्बर 1966** को घोषित किया गया था।
- पहली बार International literacy Day **8 सितम्बर 1967** को मनाया गया ।
- भारत में पहला पुस्तक मेला **1976** में कोलकता में आयोजित किया गया था।

Sankaran Committee –1981

- मोरे समिति के बाद आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में दूसरा अध्ययन **डॉ. शंकरन** ने **1981** में प्रस्तुत किया।
- इनकी संस्तुतियों के परिणाम स्वरूप ही हेल्थ लाइब्रेरी एण्ड इन्फॉर्मेशन सर्विसेज नेटवर्क को भारत में विकसित किया गया।

Richey Committee, 1926

- **1926** में भारत सरकार नें **(J. A. Richey)** की अध्यक्षता में इस पुस्तकालय के प्रशासनिक पुनर्गठन के लिए एक समिति गठित की जिसने पुस्तकालय को प्रतिलिप्याधिकार निक्षेपण पुस्तकालय **(Copyright Deposit Library)** का दर्जा देने की सिफारिश की।

पुस्तकालय आन्दोलन

- मिस्र देश कब्रिस्तान को **मृतकों की पुस्तकें** कह कर पुकारा जाता है।
- मिस्र देश में मृतकों के साथ कब्रों में **पांडुलिपियों** को दफनाने का रिवाज हजारों वर्ष तक रहा था।
- मुद्रण कला के आविष्कार के आरंभिक दिनों में मुद्रित पुस्तकों को **इनकुनाबुला** कहा जाता था।
- पुस्तकालय गुप्तचर की संज्ञा **पेट्रारख** एक मित्र **बोकेकियो** को दी गई है।
- अकबर के समय पुस्तकालयों के निदेशक को **नाजिम** कहते थे।
- तक्षशिला पुस्तकालय **पाकिस्तान** में स्थित है।
- वल्लभी पुस्तकालय की स्थापना **राजकुमारी दीक्षा** के द्वारा की गई
- अकबर के तीन प्रकार के **व्यक्तिगत ,शाही** और **शैक्षणिक** पुस्तकालय थे।
- ब्रिटिश काल में सर्वप्रथम **ईस्ट इंडिया कम्पनी** ने पहला पुस्तकालय स्थापित किया।
- नालंदा विश्वविद्यालय को **धर्म गंज** के नाम से जाना जाता है।
- नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय के तीन कक्ष थे – **रत्न सागर, रत्नदधि, रत्नरंजीका** । रत्न सागर **9 मंजिला** इमारत थी। नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय 6 महीने तक जलता रहा था।
- नांलदा का पुर्व नाम नालाद था जो किसी व्यक्ति के नाम पर रखा गया था। बाद मे स्थान को बड़गॉव के नाम से जाना जाने लगा । उपरोक्त कथन **इत्सिंग** के द्वारा दिया गया।
- मुगल शासक **औरंगजेब** को कुरान कंठस्थ था।
- प्रथम भारतीय पुस्तकालय विज्ञान की **पत्रिका लाइब्रेरी मिसलेनी 1912** में प्रकाशित की गई।
- **सर एम विश्वेश्वरीया** ने 1913 में अपने राज्य **मैसूर** में सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने की सिफारिश कि।
- बाबर की आत्मकथा का नाम **तुजुक ए बाबरी** था।
- **बख्तियार खिलजी** ने नालंदा पुस्तकालय को नष्ट कर दिया था।
- **हेन्सांग** नालंदा से अनेक पुस्तकालय की **प्रतियां** लेकर अपने देश गया था।
- **लाला लाजपत राय** ने **आशा डिकिन्शन** के साथ मिलकर पंजाब राज्य में पुस्तकालय आंदोलन चलाया।
- **1833** ईस्वी में **पीटरबॉरो** में सर्वप्रथम कर आधारित निशुल्क सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किया गया।
- सार्वजनिक सहयोग से स्थापित भारत की प्रथम लाइब्रेरी **राजनारायण बोस मेमोरियल** लाइब्रेरी मिदनापुर **पश्चिम बंगाल** में स्थित है।
- फ्रांस में सर्वप्रथम पुस्तकालय को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित किया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी के पुस्तकालय अध्यक्ष **अमीर खुसरो** थे।
- बड़ौदा रियासत ने ग्रामों में पुस्तकालय के विकास में ग्राम **विकास माला पत्रिका** प्रकाशित की।
- डॉ. एस. आर. रंगनाथन को पुस्तकालय विज्ञान का आइंस्टीन **यूजिंन आर गारफील्ड** ने कहा है।
- हुमायूं के द्वारा निर्मित पुस्तकालय का नाम **दीन पनाह** था।
- हुमायूं की मृत्यु **दीन पनाह पुस्तकालय** की सीढ़ियों में गिरकर हुई थी
- हुमायूं के लिए कहा जाता है कि वह अपने साथ **चुना हुआ पुस्तकालय** लेकर चलता था।
- बड़ौदा रियासत में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य **शिवाजीराव गायकवाड तृतीय** द्वारा **1907** में कर दिया गया।
- आधुनिक भारत में पुस्तकालय आंदोलन का सूत्रपात **बड़ौदा रियासत** में हुआ।
- मुसाफिर मेमोरियल लाइब्रेरी **पटियाला** में स्थित है, यह **पंजाब** की केंद्रीय लाइब्रेरी है।
- वैदिक काल मे शिक्षा के अध्ययन के लिए **गुरूकुल प्रणाली** को महत्व प्रदान किया गया।
- प्रज्ञापारमिता ग्रंथ की प्रतिलिपी करना पुण्य का कार्य समझा जाता था यह कथन **इत्सिंग** ने कहा था।
- **चिल्कामंत्री लक्ष्मी नरसिम्** ने कहाँ प्रत्येक गाँव में पुस्तकालय होने चाहिए। जैसे हमारे पास टैंक और कुऐ है।
- आन्ध्रप्रदेश में पुस्तकालय तिर्थ यात्राओं का आयोजन **Iyyankivenkta Ramanayya** ने किया था।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रश्न

- 'पुस्तकालय विश्वविद्यालय का हृदय है' – यह कथन **राधाकृष्ण कमीशन** का है।
- लोकतांन्त्रिक भावना को मजबूत करने और समझ को विकसित करने का मुख्य रूप से मार्गदर्शक सिद्धान्त **सार्वजनिक पुस्तकालय** है।
- छात्र, अध्यापक और शोध छात्र **शैक्षणिक पुस्तकालय** के उपभोक्ता है।
- **महाविद्यालय पुस्तकालय** शैक्षणिक पुस्कतकालय की श्रेणी में आते हैं।
- ''**पढ़ने** की आदत एवं स्वयं शिक्षा की रूचि जागृत करना'' विद्यालय पुस्तकालय एवं सार्वजनिक पुस्तकालय का उद्देश्य है।
- वर्तमान में राजस्थान के राजकीय सार्वजानिक पुस्तकालय भाषा एवं पुस्तकालय विभाग के अधीन संचालित हैं।
- पुस्तकालयों के **शैक्षणिक उपयोगकर्ता** छात्र शिक्षक शोधकर्ता है।
- शैक्षणिक और विशेष प्रकार के पुस्तकालयों में, सर्वेक्षण बहुत उपयागी होता हैं।
- विश्व विद्यालय पुस्तकालयों का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं की अकादमिक और शोध संबंधी जरुरतों को बढ़ावा देना है।
- कॉलेज पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य Support the teaching program of the college होना चाहिए।
- **"The library for the people, of the people and by the people"** सार्वजनिक पुस्तकालय कहलाता है।
- सार्वजनिक पुस्तकालय **Democracy** का उपहार है।
- अनौपचारिक आत्म शिक्षा **Public Library** तरह के पुस्तकालयों में संभव है।
- विस्तार सेवा **Public Library** की एक विशेषता हैं।
- 'यूनिवर्सिटीज हैण्डबुक, भारत' में **Associational of Indian Universities** के निम्नलिखित के द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
- यूनाइटेड किंगडम में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को जोड़ने वाला सूचना नेटवर्क JANET है।
- **1857** में बम्बई, मद्रास, कलकता तीन विश्वविद्यालय–पुस्तकालय आरम्भ हो गए थे।
- भारत सरकार का **Department of Culture** विभाग सार्वजानिक पुस्तकालयों से सम्बन्धित है
- पुस्तकालय कानून **सार्वजनिक पुस्तकालय** के विकास से सम्बन्धित है।
- सार्वजनिक पुस्तकालय भारतीसय मानक ब्यूरो द्वारा दिशा–निर्देश में किसी पुस्तकालय के लिए आपेक्षित जगह का ब्यूरा देता है।

भारत के महत्वपुर्ण पुस्तकालय

Delhi Public Library

- Delhi Public Library (DPL) की स्थापना **1951** में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय, **Indian Govt.** ने **UNESCO** से वित्तीय और तकनीकी सहायता के साथ की थी।
- **Library** का उद्घाटन India के पहले प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने **27 अक्टूबर 1951** को किया था।
- वर्तमान में, Delhi Public Library संस्कृति मंत्रालय, Indian Govt. के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है।
- इसका मुख्यालय पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने **चांदनी चौक** में स्थित है।
- DPL बच्चों, और वयस्कों को जाति, पंथ और धर्म के किसी भी भेद के बावजूद **मुफ्त पुस्तकालय सेवाएं** प्रदान करता है।
- DPL सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान करके जनता के सदस्यों की अव्यक्त क्षमता का दोहन करने के लिए उनकी मनोरंजक जरूरतों को भी देखता है।
- DPL ने नोएडा से शुरू होकर 10.03.2019 को Delhi NCR में अपनी सेवाओं को बढ़ाया है।
- Delhi Public Library ने दो पत्रिकाएँ प्रकाशित की हैं, जिनका नाम है **'पुष्पकला भारती'** और **'भारतीय लोक दीपिका'**।

पुस्तकालय विज्ञान के पॉच सुत्र (Five Laws of Library Science)

1 Dr. S. R. Ranganathan ने Library Science के **Five Laws** दिये।

- Dr. Ranganathan द्वारा Five Laws का प्रतिपादन – **1928(मीनाक्षी कॉलेज अन्नामलाई नगर मे चिदंबरम की प्रान्तीय सम्मेलन मे)**
- Five Laws की प्रस्तावना **पी.एस.अय्यर** ने तैयार की।
- Dr. Ranganathan द्वारा Five Laws का सुत्रपात – **1924** हुआ।
- Five Laws का परिचय **WCB सेयर्स** ने दिया जो की Dr. Ranganathan के गुरू थे।

2 Library Science के Five Laws की स्थापना का उद्देश्य एक सुदृढ, दार्शनिक, एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान करना था।

- Dr. Ranganathan के बचपन के गुरू **डॉ एडवर्ड वि रॉस** का सम्बन्ध Library Science के **प्रथम नियम** से है।
- Five Laws का प्रकाशन **Madras Library Association** द्वारा **1931** मे Dr. Ranganathan की पुस्तक **Five Laws of Library Science** मे किया।

Five Laws

3 **पुस्तकालय विज्ञान के पॉच सूत्र**

1. पुस्तके उपयोगार्थ है। (Books are for use
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Reader his /her book)
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले (Every book its reader)
4. पाठक का समय बचाए (Save the time of the reader)
5. पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है। (The library his a growing Organism)

6 **2004** में एस आर रंगनाथन द्वारा दिए गए पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र का वेब वातावरण में उपयोग से सम्बंधित आलेख **Alireza Noruzi** ने प्रस्तुत किया था

- पुस्तकालय विज्ञान का पंचम सूत्र में रंगनाथन साहब ने **'Organization'** के स्थान पर **'Organism'** (जैविक वस्तु) शब्द का प्रयोग किया है अर्थात यह सिर्फ वृद्धि ही नहीं करता बल्कि पुराने सामग्रियों का त्याग भी करता है।

5 Five Laws का **2nd Edition 1957** में आया व **Online Edition 2006** में आया।

- Five Laws की आलोचना **A. अर्थटन** द्वारा अपनी पुस्तक **Putting Knowledge of Work** मे की।
- "प्रत्येक पाठक को अपनी आजादी है" **(every reader his freedom)** Library Science का यह छठा नियम है जो **1992 में James R. Ratting** ने बनाया।

4 **जिम थॉम्पसन (1992) ने Dr. Ranganathan** के नियमों को संशोधित किया है, वह निम्न हैं।

1. Books are for profit-
2. Every reader his bill.
3. Every copy its reader.
4. Take the cash from the reader.
5. The library is a growing organism

6th law – Every reader his Library, **7th Law** – every writer his contribution to library दो पूरक कानून Kuromen and Pekkarinen Paivi ने सुझाए हैं

प्रथम सुत्र :– ग्रन्थ उपयोगार्थ है।

1. पुस्तकालय का स्थान
2. पुस्तकालय का समय
3. कर्मचारी
4. नियम
5. पुस्तकालय भवन की स्थिति
6. उपस्कर/फर्नीचर
7. साज–सज्जा
8. पुस्तक चयन
9. पुस्तको को संरक्षित रखने हेतु प्रथम सुत्र
10. पुस्तकालय विज्ञान का प्रथम नियम Book are for Use को OCLC research Group द्वारा जिसका पुनः निर्वाचन भौतिक डिजिटल सामग्री के परिदान के लिए आवश्यक भौतिक और तकनिकी अवसंरचना विकसित करें के रूप में किया गया था।
11. रंगनाथन ने अपने लेखन ''लाइब्रेरी साइंस एंड साइन्टिफिक मेथड़'' में 'तुच्छ घिसी–पिटी बात' बतलाया था।

द्वितीय सुत्र
प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले

1. राज्य का कर्तव्य
2. अधिकारी का कर्तव्य
3. कर्मचारी का कर्तव्य
4. पाठक का कर्तव्य/पुस्तकालय पाठक शिक्षा
5. पुस्तकालय नेटवर्क पर जोर
6. पाठक की स्वतंत्रता के बारे मे समर्थन
7. अधिनियम पर जोर
8. अन्धो के लिए
9. अपूपा
10. पुस्तकालय सहयोग पर बल देना।
11. पुस्तकालय सेवा चलाना सरकार का दायित्व है इस बात का प्रावधान करता है।
12. पुस्तकालय प्राधिकरण का दायित्व
13. बच्चों, दृष्टिहीनों एवं अक्षमों, कारीगरों, नवसाक्षरों, किसनों, मील मजूदरों आदि को सार्वजनिक पुस्तकालय परिधि में लगता है–
14. ओ सी एल सी शोध रिपोर्ट के अनुसार ''अपने समुदाय और उनकी आवश्यकता को जानें'' रंगनाथन के दुसरे नियम का पुनःस्थापन है

तृतीय सुत्र :–
प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले

1. मुक्त प्रवेश प्रणाली
2. अनुपयोगी पुस्तको का चयन न करने की सलाह
3. पुस्तक प्रदर्शिनी
4. निधानी व्यवस्थापन / Shelf Arrangiment
5. लोकप्रिय विभाग
6. संदर्भ सेवा / विस्तार सेवा
7. वर्गीकरण
8. सूचीकरण
9. बिब्लियोग्राफी
10. प्रचार–प्रसार
11. नेत्रहीनो के लिए विस्तार सेवा
12. हमानव वृद्वि और विकास के लिए
13. मानव वृद्धि एवं विकास के लिए सूचना एक मूलभूत निवेश है?

चतुर्थ सुत्र –पाठक समय बचाएं

1. आदान–प्रदान प्रणाली (परिसंचरण)
2. प्रलेखन सेवाएं
3. पुस्तकालय का स्थान निर्धारण
4. निधानी व्यवस्थापन
5. संदर्भ सेवा
6. अनुक्रमणिकाकरण और सारकरण से संबंधित है।
7. पुस्तकालय में जल्दी सेवा प्रदान करता है।
8. Stack Room Guide
9. पुस्तकालय को Digital बनाने पर जौर देता है।
10. Classified arrangement/वर्गीकृत व्यवस्था
11. कार्य घण्टों पर जोर देता है। (Library Working hours)
12. पठन सामग्री और कुशल संरक्षण का विशिष्ट संगठन निहितार्थ है।

पंचम सुत्र :–
पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।

1. पुस्तक संग्रह मे वृद्धि
2. पाठको मे वृद्धि
3. वर्गीकरण व सूचिकरण
4. पुस्तको की छटाई
5. भविष्य हेतु प्रावधान
6. कर्मचारी की संख्या से संबंधित है।
7. CD ROM की आवश्यकता बताता है।
8. बाल विकास, प्रौढ विकास, वयस्क विकास, पुंस्तकालय विकास से संबंधित है।
9. पुस्तके जीवित सत्ता है।
10. पुस्तकालय नेटवर्क पर जोर देता है।
11. Planing, Management और संगठन से संबंधित है।
12. पुस्तकालय को Digital बनाने पर जौर देता है।
13. सूचना गतिशील अंनत ओर अविरल है की जानकारी देना।
14. पुस्तकालय में Physical Building, Reading Area, Shelving और Space का विकास होता है।
15. पुस्तकालय विज्ञान के पंचम नियम के अनुसार यह कहा गया हैं। ''पुस्तकालय बढ़ता हैं और अंतहिन बढ़ता है। (Library Grows and Grows and endlessly)
16. सूची पत्रक पर वर्गांक पेंसिल से लिखने का प्रावधान।

पुस्तकालय अधिनियम

❖ **पुस्तकालय अधिनियम की आवश्यकता एवं महत्त्व (Importance and need of Library Act)**

- देश प्रदेश में पुस्तकालय तंत्र (**Library System**) की स्थापना कर पुस्तकालयों को कानूनी संरक्षण प्रदान करना , जिससे उनका विकास सुनियोजित तरीके से किया जा सके ।
- समाज के प्रत्येक वर्ग को पुस्तकालय सेवाओं का लाभ निःशुल्क और बिना किसी भेदभाव के प्रदान करना।
- पुस्तकालयों के विकास के लिए आय के स्रोत सुनिश्चित करना तथा भावी विकास योजनाओं का प्रारूप तैयार करने का सुदृढ़ आधार प्रदान करना ।
- पुस्तकालयों के लिए समुचित प्रशासनिक ढांचा तैयार कर प्रशासनिक कुशलता में अभिवृद्धि करना ।
- राजनीतिज्ञों और प्रशासकों द्वारा किए जाने वाले अनावश्यक हस्तक्षेपों पर रोक लगाना ।
- पुस्तकालय अधिनियम द्वारा पुस्तकालय नियोजन (**Library Planning**) का कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन करना ।

❖ **एक आदर्श पुस्तकालय अधिनियम की विशेषताएँ/घटक (Salient Features/Factor of a Model Library Legislation)**

- पुस्तकालय अधिनियम पुस्तकालय तथा पाठकों की मांग के अनुरूप निर्मित किया जाता है । इस सम्बन्ध में डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने अपनी पुस्तक "**Library Development Plan (1950)** में अनेक बातों का उल्लेख किया है तथा भारत सरकार द्वारा **गठित सलाहकार समिति (1959)** ने भी अपने प्रतिवेदन में ऐसे प्रावधानों को पुस्तकालय अधिनियम में सम्मिलित किए जाने की अनुशंसा की है ।

❖ **अतः एक आदर्श पुस्तकालय अधिनियम में निम्नवत् प्रावधान वांछनीय है ।**

(1) जन पुस्तकालय सेवा पूर्णतः निःशुल्क हो । उसके लिए धन की व्यवस्था स्वायत्त संस्थाओं द्वारा पुस्तकालय **उपकर (Cess)** लगाकर तथा राजकीय अनुदान द्वारा उपलब्धता हो । अधिनियम में वित्तीय लोतों के साथ साथ **लेखा परीक्षण (Auditing)** का भी प्रावधान हो)

(2) राज्य में एक सुदृढ़ **पुस्तकालय तंत्र (Library System)** की स्थापना हो , जिससे राज्य के समस्त सार्वजनिक पुस्तकालय एक – दूसरे से परस्पर और अन्तर **पुस्तकालय ऋण (Inter Library Loan)** की प्रक्रिया बढ़ावा मिल सके ।

(3) प्रत्येक राज्य में एक राज्य **केन्द्रीय पुस्तकालय (State Central Library)** की स्थापना हो , जिसमें डलीवरी ऑफ एक्ट के बाद में प्रकाशित समस्त पुस्तकों को प्रतियां उपलब्ध हो सके ।

(4) अधिनियम में समाज के विभिन्न वर्गों यथा – नेत्रहीनों के लिए , बच्चों के लिए , बुर्जुगों के लिए दिव्यांगों आदि के लिए विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय खोलने का प्रावधान होना चाहिए ।

(5) पुस्तकालय में **मुक्त द्वार प्रणाली (Open Access System)** को अनिवार्यता का प्रावधान हो

(6) स्थानीय कर्मचारियों को नियुक्तियों का अधिकार होना चाहिए ।

(7) अधिनियमों में प्रस्तावित समस्त प्रावधान पुस्तकालय विकास से सम्बन्धित एवं उनके सहायक होने चाहिए ।

पुस्तकालय अधिनियम एवं जानकारी

- पुस्तकालय अधिनियम राष्ट्रीय, प्रान्तीय या स्थानिय स्तर पर सक्षम सत्ता के द्वारा बनाए गए ऐसे कानुनी मान्यता प्राप्त नियम विनियमों से है, जिनका उद्देश्य अधीनस्थ पुस्तकालय में सग्रंहीत सामग्री का उपयोग एवं उनकी सूरक्षा करना, पुस्तकालयों का विकास करना तथा सेवाओं को सूचारू बनाए रखना है।
- भारत में स्वतंत्रता के बाद **पब्लिक लाइब्रेरी अधिनियम** पारित होने वाला मद्रास पहला राज्य था।
- **एशियाई** देशों में सबसे पहले **जापान 1899** में पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया।
- **2 नवम्बर 1789 में फ्रांस** में पहला पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया।
- पुस्तकालय अधिनियम का **इतिहास 19 वीं शताब्दी** के मध्य प्रारम्भ होता है।
- विश्व का सर्वप्रथम सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम **1850 में इग्लैण्ड़** में पारित हुआ। **ब्रिटिश म्युजियम** में कार्यरत
  सहायक **एडवर्ड एडवर्डस** ने प्रयत्न किया यह अधिनियम **इवर्ट एक्ट** के नाम से प्रसिद्ध है।
- भारत में पुस्तकालय अधिनियम दिशा में कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् **Dr. S. R. Ranganathan** का महत्वपूर्ण योगदान है।
- **UNESCO Library Manifesto** ने भी पुस्तकालय अधिनियम बनाने पर जोर दिया। इस विषय पर **सिन्हा कमेटी 1957** जिसकी रिपोर्ट **1961** में प्रकाशित की गई।
- **UNESCO Regional Seminar on Library Development South Asia Delhi** ने पुस्तकालय विधि निर्माण की विशेषता बताई।
- **चट्टोपाध्याय समिति** की अनुशंसा की प्रत्येक राज्य में **पुस्तकालय अधिनियम** बनाया जाए
- ग्रंथालय विज्ञान का दूसरा सूत्र **'प्रत्येक पाठक को उसकी अभीष्ट पुस्तक मिले** राज्य पर दायित्व ड़ालना है
- विश्व के **108 देशो** एवं राज्यों **में पुस्तकालय अधिनियम** लागु किये जा चुके है।
- **1852 में मैनचेस्टर** में **सार्वजनिक पुस्तकालय** स्थापना हुई।

1

6. **Madras (1948) –**संशोधित रूप से लागू 15 November 1955 (10 paise per rupee on property tax) (यह 23 Page में आया)
7. **Andhra Pradesh (1960)-** 25 February 1960 में लागु हुआ (8 paise per rupee on house tax and property tax) (यह 29 Page में आया)
8. **Karnataka (1965) -** 30 April 1965 (5% of the land revenue) (यह 24 Page में आया
9. **Maharashtra (1967) –** 20 December 1967 (No library Cess (उपकर) (यह 14 Page में आया)
10. **West Bengal (1979)-** 7 January 1979 (No library Cess (उपकर) (यह 08 Page में आया)

2

6. **Manipur (1988) –** (No library Cess (उपकर) (यह 14 Page में आया)
7. **Haryana (1989) –** 25 September 1989 (Surcharge on House tax and Property tax, rate decide by government from time to time (यह 15 Page में आया)
8. **Kerala (1989) -** 18 May 1989 (Surcharge on House tax and Property tax (यह 26 Page में आया)
9. **Goa (1993)-**26 November 1993 (No library Cess) (यह 22 Page में आया)
10. **Mizoram (1993)** -10 March 1993 (No library Cess) (यह 06 Page में आया)

अधिनियम

4

16. **Lakshadweep (2007)** (No library Cess)
17. **Bihar (2008)** - 23 April 2008 (No library Cess) (यह 08 Page में आया)
18. **Chhattisgarh (2008)-** 10 September 2008 (No library Cess) (यह 22 Page में आया)
19. **Arunachal Pradesh (2009)** - 04 November 2009 (No library Cess) (यह 04 Page में आया)

3

11. **Odisha (2001) -** 11 March 2001 (No library Cess) (यह 10 Page में आया)
12. **Gujarat (2001)** - 1 September 2001 (No library Cess) (यह 11 Page में आया)
13. **Uttarakhand (2005)** - 26 April 2005 (No library Cess) (यह 17 Page में आया)
14. **Rajasthan (2006)** - 22 April 2006 (No library Cess) (यह 18 Page में आया)
15. **Uttar Pradesh-**04 September 2006 (No library Cess) (यह 10 Page में आया)

ILA

1 Full Form: – Indian Library Association

- ILA कि स्थापना के लिए प्रयास **डॉ एस. आर. रंगनाथन** व **A.C. Woolner** ने किया।
- **13 September 1933** Asiatic Society Kolkata Ragistration Act **1860** के अन्तर्गत स्थापना की गई।
- **मुख्यालय,** डॉ. मुखर्जी नगर नई दिल्ली ।
- एम. ओ. थामस की अध्यक्षता में ILA स्थापना की घोषणा हुई इसके प्रथम अध्यक्ष **(1933–37)** बने।
- अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष University of Punjab के कुलपति **A.C. Woolner** को बनाया गया।
- **वर्तमान अध्यक्षः–** Mohan Rambhau Kherde
- **वर्तमान महासचिव :–** Dr. O.N. Chaubey
- **प्रथम अध्यक्षः–** Dr. MO Thomas,
- ILA के प्रथम संस्थापक सचिव **के. एम. असादुल्ला** थे। (1933–47)

2 स्थापना के समय ILA का मुख्यालय कोलकाता (1933–46) था । 12 वर्ष तक कोलकता मे रहा।

- 1946–53 तक दिल्ली में स्थापित किया गया, 1953–64 तक कोलकाता स्थापित किया गया।
- 1964 मे वापस दिल्ली (पब्लिक लाइब्रेरी भवन में रखा गया।
- तथा वर्तमान भवन में 1982 में स्थानांतरित कर दिया गया ।
- नालन्दा डेटा बेस ऑफ इंडियन लाइब्रेरीज ILA के द्वारा तैयार किया जाता है।
- भारत में सबसे पुराना और सबसे बड़ा लाइब्रेरी एसोशियन ILA है।

4 ILA सन **1957** में **IFLA** का सदस्य बना।

- ILA का आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 1500 है।
- डॉ. एस. आर. रंगनाथ **1944 –53** तक **ILA** के अध्यक्ष रहे।
- **Dr. S.R. Ranganathan ILA** के आजीवन सदस्य रहें।
- इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन : **(Indian Library Association) ILA** की सदस्यता कोई भी व्यक्ति ग्रहण कर सकता है। यह जरुरी नहीं है कि वह पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान का अध्यापक व छात्र हो। आई. एल. ए. की सदस्यता आठ प्रकार की होती है।
  1. सरक्षंक सदस्यता
  2. मानद सदस्यता
  3. विदेशी
  4. संस्थागत
  5. आजीवन
  6. सहायक सदस्यता
  7. साधारण
  8. पुस्तकालय संघ सदस्यता

3 प्रकाशन

- ILA ने सर्वप्रथम 1942 में Library Bulletin पत्रिका का प्रकाशन किया। इसे 1946 में बंद कर दिया गया । बाद में इसे ABJILA (Annals, Bulletin Granthalaya of ILA) नाम दिया गया जो 1949–53 तक जारी रहा । 1955 में इसे इडियन लाइब्रेरी एसोशियन की एक पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया।
- ILA ने ILA Bulletin को 1965 में प्रारम्भ किया। और इसकी आवृत्ति त्रैमासिक है। **2011** में इसका नाम **Journal Indian Library Association (JILA)** कर दिया। इसकी अवधि **Quarterly** है।
- JILA पत्रिका में लाइब्रेरी सूचना विज्ञान के सभी पहलुओं को शामिल किया गया। वर्तमान मे **ILA News Letter** के मुख्य संपादक है– **Dr. Muzamil Mushtaq** इससें पहले **Prof. Mrs. Ashu Shokeen** थी।

1 1910 में International Library Congres की बैठक **ब्रुसेल्स** में संपन्न हुई इसका मुख्य उद्देश्य Library Association का International Association संघ बनाने पर जोर देना था

- **1926** में इसका नाम **International Fedration of Library Association** रखा गया था जो संक्षिप्त में **IFLA** के नाम से जाना जाता है।
- **LDP** घोषणा पत्र का मसोदा 2012 में तैयार किया गया नवंबर 2013 में पैरिस में सेतीसवे युनेस्को के सामाजिक सम्मेलन में पारित किया गया।
- **July 1926** में **International Conferance of Librarian & book Lovers** का सम्मेलन आयोजन यूरोप के प्राग में आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य था इफ्ला की स्थापना करना।
- **स्थापना** – 30 September 1927 एड़िनबर्ग,
- **मुख्यालय** – Hague, Netherlands
- **प्रथम अध्यक्ष** – Isak Collijn (1927–37)
- **वर्तमान अध्यक्ष** –Barbara lison

2 **1930 Institutions** शब्द से हटाया गया **1976** में **institutions** शब्द को जोड़ा गया।

- IFLA International संगठन है जो **1927** से The International Committee of the blue shield का एक भाग है।
- IFLA का भारत **1957** में सदस्य बना **1992** में IFLA का **नई दिल्ली** में सम्मेलन हुआ।
- 1992 में भारत में सम्मेलन रखने का निम्न कारण **S. R. Ranganathan** की जन्म शताब्दी वर्ष था।
- IFLA के वर्तमान मे **150 देशो** के **1600** संघ सदस्य है।
- सन् **1961** में **IFLA** प्रसूचीकरण सिद्धांत पद अंर्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन पेरिस में किया।
- **Sister** लाइब्रेरी की अवधारणा **IFLA** द्वारा दी गई।
- **IFLA** लाइब्रेरी **2013** में लॉन्च हुई।
- **1977** में **50** वी वर्षगांठ मनाई गई **2002** में **75 वीं वर्षगांठ** स्कॉटलैंड़ में मनाई गई।

IFLA

4 **IFLA के द्वारा प्रारंभ किए गए प्रोग्राम** –

- Universal Availability of Publications (UAP) **1982**
- Universal Bibliographic Control and International MARC (UBCIM)
- Preservation and Conservation (PAC)
- Universal Data Flow and Telecommu -nications (UDT)
- Action for Development through Libraries Program (ALP) – **1984**
- International Advocacy Program (IAP) IFLA ने 2016 में लॉन्च किया।
- IFLA Building Strong Library Association Program **2010** में शुरू किया गया।

3 **Publice library of the year** अवार्ड IFLA द्वारा नये सार्वजनिक पुस्तकलय जश्न मनाने के लिए दिया जाता है।

- **IFLA** द्वारा सन **1992** में वार्षिक सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में किया गया ।
- **IFLA** और **UNESCO** संगठन संयुक्त रूप से डिजिटलीकरण और संरक्षरण पर सर्वेक्षण प्रकाशित करते हैं।
- Guidelines of information literacy for lifelong learning नामक प्रकाशन **IFLA** के द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
- **Building Strong Library Association Impact Report** 2012 का संबंध **IFLA** से हैं।

IFLA के प्रकाशन

- **IFLA Journal quarterly** (त्रैमासिक)
- **IFLA Year book** – annual report of the IFLA (वार्षिक)
- **IFLA directory of association** (अर्ध–वार्षिक)

ALA (AMERICAN LIBRARY ASSOCIATION)

1 Full Form- American Library Association

- स्थापना :– 6 October 1876
- मुख्यालय :– Chicago, Illinois, U.S.
- प्रथम सचिव :– Melvil Dewey, 1876–1890
- वर्तमान अध्यक्ष :– Pattay wong
- प्रथम महिला अध्यक्ष :– Theresa Leelamendorf.
- दुनिया का सबसे पुराना और सबसे बड़ा Library Association है।
- Melvil Dewey ALA के सचिव 1876–90 और अध्यक्ष 1890–93 तक रहे। CA Cutter ALA के अध्यक्ष 1887–89 तक रहें।

2 National Friends of Library week award तथा ALA के द्वारा School Library month 1985 में मनाया गया।

- Melvil Dewey Madel ALA के द्वारा प्रदान किया जाता है।
- 1968 से संघ ने पत्रिका General of Information Science & Libraries Automation के नाम से प्रकाशित करना आरम्भ किया।
- The Best Reading for the largest number at the list cost यह वाक्य American Librarian Association का है।
- अवार्ड– 1. मेल्विल डेवी अवार्ड, 2. मारग्रेट मान, 3. केमरेन्स, 4. ग्रोलियर

6 **उद्देश्य** :– अमेरिका और दुनिया भर में पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार।

- सभी प्रकार के पुस्तकालयों का नेतृत्व करना।
- सभी पुस्तकालय व्यवसायी, कर्मचारी, ट्रस्टी और अन्य व्यक्तियों को तथा पुस्तकालय सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए उन्नत करना।
- एक खुला, समावेशी और सहयोगी वातावरण तैयार करना।
- नैतिकता, अखण्डता और व्यावसायिक वातावरण प्रदान करना।
- पुस्तकालय में उत्कृष्टता और नवीनता।
- सामाजिक जिम्मेदारी और जनता का भला।
- स्थिरता (Sustainability) प्रदान करना।

ALA

3 Association of college and research libraries (ACRL) (USA) अमेंरिका पुस्तकालय संघ का प्रभाग हैं।

- ALA एक निर्वाचित परिषद और एक कार्यकारी बोर्ड द्वारा शासित होता है।
- 1965 मे संघ की परिषद ने अपनी फेडरल नीती का अनुमोदन किया जो ग्रन्थालय विकास से सम्बंधित था।
- ALA ने पुस्तको के प्रति प्यार को बढ़ावा देने के लिए और पढ़ने के लिए Caldecott Medal की स्थापना की।
- जोसेफ डब्ल्यू लिपीनकोड अवार्ड ALA द्वारा दिया जाता है।

5 ALA के द्वारा निकाले जाने वाले प्रकाशन

- American Library (Monthly)
- Washington News Latter,
- ALA Year book,
- ALA Award & Notable Seals,
- American Library Magazine,
- ALA Store,
- Library Technology Project Report.
- Journal of Librarianship
- Choice
- Glossary of Library term (Subject Dictionary)

4 Ask Library Anything की अवधारणा शुरू कि गई।

- ALA ने 1956 मे अमेरिका मे ग्रन्थालय सेवा अधिनियम का पारित हुआ जो 1964 मे संशोधित किया।
- The Public Library Associatioin (PLA) की स्थापना 1944 में हुई,जो ALA का एक अनुभाग है।
- ALA द्वारा पढ़ने की स्वतंत्रता तथा पुस्तकालय अधिकारों का विधेयक सन् 1948 और 53 में लागु किया।
- ALA ने अमेरिका के पुस्तक प्रकाशन परिषद के सहयोग से 1953 पुस्तको के प्रकाशन सेन्सरशिप विधेयक पारित कराया।

JOCLAI

- मुख्यालय – Kankurgachi, Kolkata
- Full Form- Joint Council of Library Associations in india
- संबंध – समस्त पुस्तकालय संघ से
- JOCLAI एक ऐसा संघ है जिसके सभी कर्मचारी अवैतनिक कार्य करते हैं।
- JOCLAI की बैठक IASLIC और ILA की प्रत्येक राष्ट्रीय बैठकों के दौरान होती है।
- JOCLAI का निर्माण भारत के सभी प्रकार के पुस्तकालय संघो के बीच समन्वय बनाए रखने के लिए किया गया है। एक अलग खंड JOCLAI (भारत के पुस्तकालय संघों की संयुक्त परिषद) बनाया गया है।
- JOCLAI का अनुमोदन (Approval) ILA के द्वारा किया गया।
- JOCLAI और IASLIC अध्यक्ष एक ही होते हैं।
- JOCLAI के गठन का पहला लाइब्रेरियन दिवस : नागपुर (1980) में IASLIC सेमिनार में की गई।
- IASLIC का संचालन JOCLAI के द्वारा किया जाता है।

UGC

- 28 Dec. 1953 को मोलाना अब्दुल कलाम आजाद ने औपचारिक तोर पर UGC की स्थापना की।
- UGC मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत UGC अधिनियम 1956 के अनुसार भारतीय संघ सरकार द्वारा स्थापित एक वैधानिक निकाय है।
- Full Form :- University Grants Commission
- **प्रथम अध्यक्ष** – C.D. देशमुख
- UGC के वर्तमान अध्यक्ष प्रो.धीरेन्द्र पाल सिंह है।
- **आदर्श वाक्य :–** ज्ञान विज्ञान विमूक्त है।
- यह एक स्वायतसाशी संगठन है। जो उच्च शिक्षा के विकास के लिए स्थापित किया गया।
- मुख्यालय – दिल्ली
- प्रोग्राम – दीक्षारंभ, गुरूदक्षता
- स्थापना के लिए सिफारिश – राधाकृष्णन आयोग 1948
- क्षेत्रीय मुख्याालय – 6

1.पुणे, 2. भोपाल, 3. कोलकता, 4. हैदराबाद, 5. गुवाहाटी, 6. बेंगलुरू

- UGC Digital Library Consortium Dr. A.P.J. Abdul kalam के द्वारा लॉन्च किया गया।
- प्रकाशन – हैड बुक फॉर वाइस चांसलर

➢ यूजीसी की योजनाएँ (Schemes of UGC)

- राज्य विश्वविद्यालयों से संबद्ध महाविद्यालयों का विकास
- महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए लघु व दीर्घ शोध परियोजनाएँ ।
- स्वायत्त महाविद्यालय
- महाविद्यालयों के लिए संगोष्ठी / परिसंवाद सम्मेलन आदि ।
- महिला छात्रावास का निर्माण (विशेष योजना) ।
- एम.फिल / पीएच.डी. करने के लिए महाविद्यालयों के शिक्षकों को शिक्षक अध्येतावृत्ति प्रदान करना
- दृष्टिहीन निशक्त (दृष्टिबाधित) शिक्षकों को वित्तीय सहायता ।

✹ यूजीसी के प्रकाशन

- Higher Education in India
- Annual Report 2018–19
- UGC Newsletter
- UGC की विभिन्न रिर्पोट्स
- Golden Jubilee Lectures
- ई – बुक्स

CLA

- स्थापना **1946 (26 नवंबर 1947** को कंपनी अधिनियम के तहत शामिल किया गया था)
- **विलुप्त 2016**
- **मुख्यालय– ओटावा ओटारियो**
- **सदस्यता – 60 संगठन (December 2014** में कुल सदस्यता **1283** थी)
- **प्रथम अध्यक्ष – फ्रेडा फेरेल वाल्डन**

✹ Award

1. The Amelia Frances Howard-Gibbon Illustrator Award, 1971
2. The Book of the Year for Children Award, 1963
3. **युवा व्यस्क बुक अवार्ड 1981**

- इसमें एक मूल विषय के उपर एक या अधिक एकल पक्षों की परतबन्दी से एक संयोजित विषय बनता है। जैसे –
  - 2, J4 विश्वविद्यालय पुस्तकालय
  - 2, J4.44 भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालय
- जब दो या दो से अधिक एकल पक्ष, मूल पक्ष पर पटलित होते हैं तो इसे पटलीकरण–1 कहते हैं। इस विधि द्वारा यौगिक विषयों का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ– हृदय के रोगों का उपचार।
  पटलीकरण–1 की प्रक्रिया को निम्न रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है–

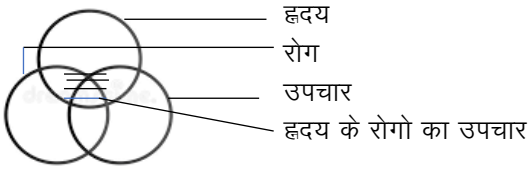

ii. परतबन्दी प्रकार 2

- एक प्राथमिक मुख्य विषय पर विशेषक (Qualifier) अथवा एकल उद्भवक (Speciator) जोड़ने से संयोजित प्राथमिक मुख्य विषयों अर्थात अप्राथमिक मुख्य विषयों (Non-Main Primary Basic Subjects) की संरचना होती है। जैसे –
  - **L – 9V Child Medicine**
  - **L – 9Ux Space medicine**
- जब किसी एक पक्ष के दो या दो से अधिक एकल एक–दूसरे पर पटलित रहते हैं तो इस विधि को पटलीकरण 2 कहते हैं। इसे कल्प पटलीकरण भी कहते हैं क्योंकि अधिकांशतः ऐसे विषय सम्पूर्ण विचार का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इस विधि से निर्मित विषयों को अध्यारोपण विधि के द्वारा दर्शाया जाता है। इसके लिए हाइफन (Hyphen) "-'' चिह्न का प्रयोग किया जाता है। दो एकलों में से प्रमुख एकल को पहले तथा गौण एकल को बाद में लिखा जाता है।
- पटलीकरण–1 में एक पक्ष पर दूसरा पक्ष पटलित रहता है जबकि पटलीकरण–2 में एक ही पक्ष का एकल विचार दूसरे पक्ष पर पटलित रहता है।

3.अबद्ध संयोजन/ शिथिल संग्रहण (Loose Assemblage) –

1950 में प्रतिपादित इस विधि के अनुसार दो या अधिक एकलों अथवा मूल विषयों को जोड़कर विषय की संरचना होती है 1971 में इसे तीन भागों में बाटाँ गया।

I. अबद्ध संयोजन / शिथिल संग्रहण (Loose Assemblage) प्रकार 1

इस विधि से दो या **अधिक सरल (Simple)** अथवा **संयोजित (Compound)** विषयों के पारस्परिक सम्बन्धों के अध्ययन के आधार पर विषयों की संरचना होती है। ये सम्बन्ध सामान्य, तुलनात्मक भिन्नात्मक अथवा प्रभावात्मक हो सकते हैं। इस विधि से **मिश्रित विषयों (Complex Subjects)** को संरचना होती है। कोलन क्लासीफिकेशन में इस प्रकार के विषयों को वर्गांक प्रदान करने के लिये अन्तर विषय सम्बन्ध **(Inter Subject Phase Relation)** विधि का प्रयोग किया जाता है।

II. अबद्ध संयोजन / शिथिल संग्रहण (Loose Assemblage) प्रकार 2

इस प्रकार के विषय की संरचना एक ही मुख्य विषय के दो या अधिक समवर्गों के पारस्परिक सम्बन्धों के अध्ययन आधार पर होती है। इन्हें **मिश्रित एकल (Complex Isolates)** की संज्ञा दी गई है। कोलन क्लासीफिकेशन में इस प्रकार के विषयों को वर्गीक प्रदान करने के लिये अन्तर पक्ष विषय सम्बन्ध विधि **(Intra-facet Phase Relation)** का प्रयोग किया जाता है –

III. अबद्ध संयोजन /शिथिल संग्रहण (Loose Assemblage) प्रकार 3

एक विषय के एक समवर्ग के दो या अधिक एकलों के पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर बनने वाले विषयों को रंगनाथन ने **मिश्रित पंक्ति एकल (ComplexArray Isolate)** की संज्ञा दी है। कोलन क्लासीफिकेशन में ऐसे विषयों के वर्गीक बनाने के लिये अन्तर पंक्ति विषय सम्बन्ध विधि **(IntraArray Phase Relation)** का प्रयोग किया जाता है।

4. विलयीकरण (Fusion)

इस पद का शाब्दिक अभिप्राय है, दो विषयों को एक साथ मिलाकर एक नए विषय का निर्माण करना। इस विधि का प्रतिपादन वर्ष 1960 में रंगनाथन ने किया था। इस प्रक्रिया में दो अथवा दो से अधिक मूल विषय एक साथ इस ढंग से विलीन अथवा सम्मिलित हो जाते हैं कि उनका अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है और एक नवीन मुख्य विषय का निर्माण या सृजन हो जाता है। वर्तमान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विभिन्न शोध कार्यों के परिणामस्वरूप प्राथमिक विषयों के विलयीकरण से कई नए प्राथमिक विषयों की संरचना हो रही है। अर्थात यदि शोधकार्य की परिकल्पना ऐसे विषय पर आधारित है जिसका सम्बन्ध दो भिन्न प्राथमिक मुख्य

विषयों से है तो यह संभव है कि शोधकार्य की प्रक्रिया में इन दोनों विषयों के आत्मसात होने से एक नये विषय की संरचना हो जाय।

उदाहरण – बायोलोजी + फिजिक्स = बायोफिजिक्स

Biophysics, Geophysics, Astrochemistry, Econometrics इन सभी विषय का निर्माण Fusion विधि से हुआ है।

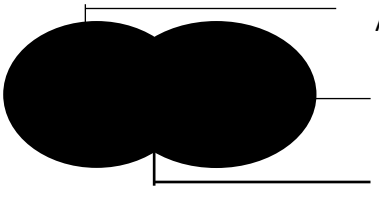

5. आसवन (Distillation)

आसवन अर्थात् किसी मिश्रण का शुद्धिकरण इस प्रक्रिया से एक शुद्ध पदार्थ / विषय को प्राप्त किया जाता है। ज्ञान जगत भी विभिन्न विचारों तथ्यों और विषयों का सम्मिश्रण है। जब ज्ञान जगत का आसवन किया जाए और इस मिश्रण से कुछ अवशेष प्राप्त हो तो इसे आसवित मुख्य विषय कहते हैं। उदाहरण–

1. शोध विधि (Research Methodology)
2. सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Analysis)
3. प्रबंध विज्ञान (Management)

उपर्युक्त विषयों को आसवित विषय (Distilled Subjects) कहा जा सकता है. क्योंकि इनका किसी भी विषय के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

1. भारतीय सामुद्रिक विज्ञान का सांख्यकीय विश्लेषण
2. ग्रंथालय कर्मियों का प्रशासन
3. सामाजिक विज्ञान की शोध प्रक्रिया

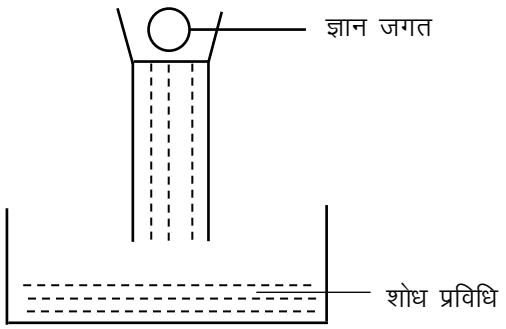

1971 में प्रतिपादित इस विधि से प्राथमिक मुख्य विषयों की संरचना दो प्रकार से हो सकती है।

I. आसवन प्रकार I

II. आसवन प्रकार 2

6.पुंजयन/संचयन (Agglomeration)

- इस विधि का पूर्व मे आशिंक समावेश (Partial Comprehension) के नाम से जाना जाता था।
- संचयन विधि मे दो अथवा दो से अधिक मुख्य वर्ग मिलकर एक सामान्य मुख्य वर्ग का निर्माण करते है।

  उदाहरण –

  1. Natural Sciences
  2 Social Sciences
  3. Humanities

- **इस विधि से दो प्रकार के मुख्य विषयों की संरचना होती है –**

I. पुंजित मुख्य विषय प्रकार1(Agglomerates of Kind 1)

II. पुंजित मुख्य विषय प्रकार 2 (Agglomerates Kind 2)

7. समूहीकरण (Clustering)

इस प्रकार के उदाहरण हैं– **Ocean Sciences, Space Sciences, Defence Sciences , Gandhiana ,Mass Coummunication**

- **1966** में रंगनाथन ने विषय सरंचना विधि का एक नया प्रकार विषय समूहन **(Subject Bundle)** प्रतिपादित किया तथा इसे आंशिक समावेश्यता **(Partial Comprehension)** का ही एक प्रकार माना गया इस श्रेणी के प्राथमिक मुख्य विषयों का आधार वर्तमान समय की शोध व अनुसंधान प्रक्रिया है।
- जिसमें एक ही विषय पर भिन्न भिन्न विषयों के विशेषज्ञ अपने–अपन दृष्टिकोण से शोध व अनुसंधान कार्य करते है तथा उसी आधार पर उनके निष्कर्ष भी प्राप्त होते हैं।
- जब इन विभिन्न अनुसंधानों से प्राप्त निष्कर्षों को एक साथ एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है तो विषय समूहन मुख्य विषय की संरचना हो जाती है।
- **1973** में नीलमेघन ने विषय समूहन के स्थान पर एक नया शब्द समूहीकरण प्रतिपादित किया नीलमेघन अनुसार एक विशिष्ट विषय पर विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा शोधकार्यों व अनुसंधान के निष्कर्षों को एक साथ अथवा अलग–अलग प्रकाशित किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ

1. भारतीय विद्या (Indology) भारत के सभी पक्षों से संबंधित साहित्य जैसे भारतीय अर्थशास्त्र, भारतीय संगीत, भारतीय कलाएं, भारतीय दर्शन, भारतीय भूगोल आदि ।

2. जापानी विद्या (Nipponology) जापान के के सभी पक्षों से संबंधित साहित्य

- जबकि इन मूलभूत श्रेणियों के योजक चिह्नों का क्रम बोध मान (Ordinal value) प्रदान किया गया है जिससे शेल्फ पर विषयों का क्रम अमूर्त से मूर्त की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर हो। इसे प्रतिलोमता का सिद्धान्त कहा जाता है।
- पक्ष परिसूत्र में पक्षों के आवर्तन एवं स्तर (Rounds and levels) का क्रम पक्ष–अनुक्रम के सिद्धान्तों जैसे वॉल पिक्चर सिद्धान्त, काठ कॉफ सिद्धान्त आदि द्वारा निर्धारित किया जाता है। उनके पक्ष–अनुक्रम तथा एक पंक्ति के अन्तर्गत सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों का प्रयोग अन्य वर्गीकरण पद्धतियों द्वारा भी किया गया है।

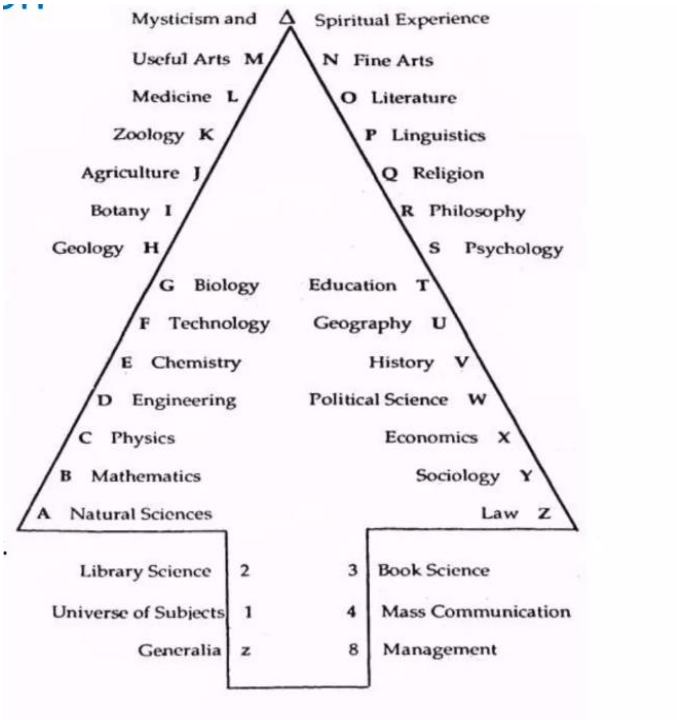

Generalia and Form Classes a/z, and Newly Emerging Classes 1/9, e.g.,

a	Bibliography
k	General Encyclopedias
m	General periodicals
p	Conference proceedings
W	Biographies
z	Generalia classes
1	Universe of knowledge
2	Library science
3	Book science
4	Mass communication
8	Management science

A to M (Science)

A	Science
B	Mathematics
C	Physics
D	Engineering
E	Chemistry
F	Chemical technology
G	Biology
H	Geology
I	Botany
J	Agriculture
K	Zoology
L	Medicine
M	Useful arts

Δ Spiritual EXperience & Mysticism

Humanities (N To S)

N	Fine arts
O	Literature
P	Language
Q	Religion
R	Philosophy
S	Psychology

Social Science (T to Z)

T	Education
U	Geography
V	History
W	Political Science
X	Economics
Y	Sociology
Z	Law

UDC में विषय जगत की स्थिति का निर्धारण (Mapping of Universe of Subject in Universal Decimal Classification Scheme)

- UDC का अविर्भाव 1895 में ब्रुसेल्स (बेल्जियम) में सम्पन्न International Conference of Bibliography IIB के परिणाम स्वरूप हुआ था।
- UDC पद्धति का निर्माण बेल्जियम के दो निवासी Henery La fontaine तथा Paul Otlet ने किया था।
- UDC का प्रथम सम्पूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्करण सन् 1905 ई. में French भाषा में ''Manual the Repertoire Bibliographic Universal'' नाम से प्रकाशित हुआ जो डीडीसी के 5वें संस्करण पर आधारित था । अब तक इसके कुल सात संस्करण (चार पूर्ण एवं तीन संक्षिप्त) प्रकाशित हो चुके संस्करण फ्रेंच, अंग्रेजी एवं स्पेनिश भाषा में प्रकाशित है साथ ही इसका CD–Rom और ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध है।
- **सन् 1931** में IIB का नाम परिवर्तित कर इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट आफ डाक्यूमेन्टेशन (International Institute of Documentation IID) रख दिया गया। **1937** में पुनः इसका नाम परिवर्तित कर इन्टरनेशनल फेडरेशन फॉर डाक्यूमेन्टेशन'' (International Federation for Documentation–FID) रख दिया गया। इसका मुख्यालय **हॉलैण्ड में 'दी हैग' (The Hague)** में स्थित है और इसके लिए एक महासचित नियुक्त है।
- अब तक UDC. के संक्षिप्त संस्करणों का प्रकाशन **13 भाषाओं** में किया जा चुका है।
- मुख्य वर्गों की रूपरेखा इस पद्धति का आधार दशमलव वर्गीकरण पद्धति है अतः **UDC** की क्रम परम्परा और मौलिक रूप रेखा **DDC** के अनुसार ही है।
- इसमें भी मुख्य वर्गों का व्यवस्थापन दशमलव वर्गीकरण पद्धति की भाँति ही है और सम्पूर्ण विषय जगत को दस मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है।

Class Number	Main Classes
0	Generalities
1	Philosophy,Metaphysics, Psychology, Logic, Ethics
2	Religion, Theology
3	Social Sciences,Economics, Law, Government, Education)
4	Vacant
5	Mathematics And Natural Science
6	Applied Science, Medicine
7	FineArtsAnd Recreation
8	Literature
9	Geography,Biography, History

- इस आधारभूत संरचना को अपनाकर, इन मुख्य वर्गों के उपविभाजन में सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होने के सिद्धान्त को प्रयोग में लाया गया है।
- **सन् 1963** में वर्ग 4 को रिक्त रखा गया और भाषा (Language) को **वर्गांक 8** के साथ व्यवस्थित किया गया।
- UDC में दो पक्ष अथवा दो विभिन्न विषयों को संयोजक चिह्नों से जोड़ने का प्रावधान किया गया है।
- UDC वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त होने वाले चिन्ह निम्न प्रकार से है।

SIGN	USE For
+	Connection of Non-consecutive numbers
/	Connection of Consecutive numbers
:	Relationship)
=	Language
()	Geographical division
(0)	Form sub-division
(1/9)	Place sub-division
(=....)	Race And Nationality
.00	Point of view
.0	Special Analytical sub-division

- का कुशल तथा सम्पूर्ण भंडार सत्यापन करने में पुस्तकालय वर्गीकरण सहायक होता है।
- विषय संघ सूचियों एवं विषय सूचियों के निर्माण में भी यह सहायक होता है।
- ग्रन्थों के सुनियोजित क्रम के व्यवस्थापन में पुस्तकालय वर्गीकरण सहायता प्रदान करता है। यह संबंधित विषयों को सन्निकट लाता है। इसे हेनरी ब्लिस (Henry Bliss) ने सहव्यवस्थापन (Collocation) कहा है।
- पुस्तकालय संग्रह चाहे जितना भी बड़ा हो, एक पाठक द्वारा वांछित किसी भी विषय के किसी भी प्रलेख की पहचान तथा उसके स्थान का निर्धारण करने में वर्गीकरण सहायक होता है।
- वर्गीकृत सूचियों का निर्माण केवल वर्गीकरण पद्धति से ही संभव है। एक शोध पुस्तकालय में वर्गीकृत सूची को अनुवर्ण सूची की तुलना में अधिक पसंद किया जाता है।
- यह देय–आदेय काउण्टर पर विभिन्न विषयों के ग्रन्थों के दैनिक आदान–प्रदान का अभिलेख रखने में सहायक होता है।
- यह ग्रन्थों को व्यवस्थित समूहों में व्यवस्थापित करने में सहायता करता है।

Colon Classfication Scheme (द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति)

- एक अप्रचलित,अस्पष्ट व सिद्वांत विहिन विषय में एक गणित शास्त्रज्ञ की रूचि पैदा करने का श्रेय Berwick Sayers को जाता है। जिन्होने अपने शिष्य(Ranganathan) की योग्यता को पहचाना और उसका मार्गदर्शक बनकर पुस्तकालय विज्ञान को समझने का मूल तंत्र बताया ।
- Ranganathan ने **DDC** की गणित, साहित्य तथा शिक्षा की अनुसूचियो का अध्ययन किया क्योंकि इन विषयो की रंगनाथन को जानकारी थी किन्तु रंगनाथन यह स्पष्ट नही कर पाए की **DDC** में कमी क्या है। रंगनाथन ने अपने वैचारिक स्तर पर इस समस्या का विश्लेषण आरम्भ कर दिया।
- Dr. Ranganathan द्वारा Colon Classfication Scheme के आविष्कार का विचार जब उन्होने London मे एक स्टोर पर मेग्नोसेट (बच्चो का खिलौना) देखा और उनके मन मे विचार आया कि जिस प्रकार बच्चो के खिलौने बनाने वाले नट बोल्ट, धातुओ जोडकर विविध रूप दिये जा सकते है, उसी प्रकार विषयो को भी आपस मे जोडा जा सकता है।
- Dr. Ranganathan 1924 मे University of Madras के Librarian थे। नियुक्ति के कुछ महीनो पश्चात् उनको Britain भेजा गया। उन्होने ब्रिटेन के लंदन विश्वविद्यालय के School of Librarianship मे Library Science का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।
- यह वैश्लेषी संश्लेष्णात्मक वर्गीकरण पद्धति है ।यह भारत की प्रथम वैज्ञानिक पद्धति है।
- June 1925 मे भारत आते हुए उन्होने जहाज पुस्तकालय की पुस्तको को वर्गीकृत किया।
- 1927 मे Dr. S. R. Ranganathan ने अनुसुचियो के निर्माण का कार्य पूरा किया। इन अनुसूचियो की रूपरेखा के आधार पर Madras University Library की 30,000 पुस्तको के विषय वस्तु का विश्लेषण कर वर्गांक प्रदान किया ।
- सन् 1933 तक Madras University Library की 70,000 पुस्तको को इस रूपरेखा के आधार पर वर्गीकृत किया गया।
- Colon Classification को पूर्ण पक्षात्मक स्वरूप प्रदान करने के लिए रंगनाथन ने निरंतर गहन शोध कार्य, कक्षाओं में वाद विवाद तथा पुस्तकालयों में व्यवहारिक परीक्षण किया।
- Dr. Ranganathan ने Colon Classification के पहले संस्करण मे सभी पक्षो के लिए Colon का प्रयोग किया है इसलिये इसका नाम Colon Classification रखा गया।
- 1928–1931 तक Madras University मे पाठको की आवश्यकताओ को ध्यान से देखा।
- 1932 मे Colon Classification पद्धति को मुद्रण के लिये तैयार किया।
- CC 6th ed. में 42 Main Class का प्रयोग किया जाता है।
- CC 7th ed. में 108 Main Classes का प्रयोग किया जता है।
- गोपीनाथ ने CC के सभी संस्करणो को 3 Version में विभाजित किया है।
- CC का 7वॉ संस्करण M.A. Gopinath , A.K. Neelmeghan , S.K. Sitaraman द्वारा बनाया गया।
- CC 3rd ed. में गहन अनुसूची (Depth Sehedule) की योजना अवमूल्यन पर बनाई गई
- Decimal Classification & Colon Classification in Perspective Book के लेखक Raghunath Shatanand Parkhi है।
- सीसी का Depth Versions सन् 2012 में प्रकाशित हुआ था।

- सीसी का Depth Versions Indian Statistical Institute के द्वारा प्रकाशित किया गया है।
- कोलन क्लासीफिकेशन (CC) में 'Mother Country' को संख्या 2 द्वारा दर्शाया गया है।
- कॉल नम्बर (Call Number) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के प्रथम भाग (पार्ट–1) का प्रथम अध्याय (Chapter–1) के पृष्ट संख्या 1.3 पर है।
- क्लास नंबर (Class Number) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के प्रथम भाग (पार्ट–1) का द्वितीय अध्याय (Chapter–2) के पृष्ट संख्या 1.5 पर हैं।
- बूक नंबर (Book Number) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के प्रथम भाग (पार्ट –1) का तृतीय अध्याय (Chapter–3) के पृष्ट संख्या 1.9 पर है।
- कलेक्शन नंबर (Collection Number) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के प्रथम भाग (पार्ट–1) का चतुर्थ अध्याय (Chapter–4) के पृष्ट संख्या 1.18 पर है।
- मुख्य वर्ग (MC) दिबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का प्रथम अध्याय (Chapter–1) के पृष्ट संख्या 2.4 पर है ।
- सामान्य सहायक (Common Isolate)द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का द्वितीय अध्याय (Chapter–2) के पृष्ट संख्या 2.5 पर है।
- समय/काल सहायक (Time Isolate) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6th ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का तृतीय अध्याय (Chapter–3) के संख्या 2.7 पर है।
- स्थान/देश सहायक (Space Isolate) दिबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6' ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का चतुर्थ अध्याय (Chapter–4) के पृष्ठ संख्या 2.8 पर हैं।
- भाषा सहायक (Language Isolate) द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (8'' ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का पाँचवाँ अध्याय (Chapter–5) के पृष्ट संख्या 2.26 पर है।
- दशा संबंध (Phase Relation)द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के छठे संस्करण (6'' ed.) के द्वितीय भाग (पार्ट–2) का छठा अध्याय (Chapter–6) के पृष्ट संख्या 2.28 पर है।
- CC के मुख्य वर्ग K (Zoology) में अलग से इडेंक्स प्रदान किया गया हैं।
- CC का हिन्दी संस्करण 1939 में प्रकाशित हुआ जिसके संपादक P.N. Gode है।
- पुस्तकालय वर्गीकरण में, जिस देश में ग्रन्थालय स्थित है उस देश को मातृ देश (Mother Country) कहते हैं।
- पुस्तकालय वर्गीकरण में, जिस देश के ग्रन्थालय में संग्रह अन्य देश की तुलना में काफी बड़ा है, उस देश को इष्ट देश (Favoured Country) कहते हैं।
- कोलन क्लासीफिकेशन में, इष्ट देश (Favoured Country) के लिए अंकन 1 का उपयोग किया गया है।
- मद्रास पुस्तकालय संघ (MALA) कोलन क्लासीफिकेशन के प्रथम संस्करण का प्रकाशक हैः
- शारदा रंगनाथन एन्डोमेन्ट फॉर लाइब्रेरी साइंस (SRELS) कोलन क्लासीफिकेशन (सप्तम संस्करण) का प्रकाशक है।
- कोलन क्लासीफिकेशन में परम्परागत विभागों (Canonical divisions) की गणना संबंधित अनुसूची (Schedule) के प्रारम्भ भाग में की गई है।
- Library Science के विशेषज्ञ तथा Ranganathan के मार्गदर्शक सेयर्स ने Ranganathan की प्रतिभा से प्रभावित होकर कहा था कि ''एक युग Melvil Dewey का था तो आने वाला युग **Dr. S. R. Ranganathan** के नाम से जाना जाएगा '' निःसन्देह **भारत में Library Science जगत को Ranganathan युग** कहा जाता है।

❖ **तीन प्रकार के संस्करण (Three Versions of Colon Classification) –** सीसी के अब तक प्रकाशित हो चुके 7 संस्करणों को निम्न तीन वर्गों में रखा जा सकता है–

(i) **Version 1–Regidly faceted (1933–1950) –** Rigidly faceted पद्धति के तहत सीसी के प्रथम, द्वितीय और तृतीय संस्करणों को रखा जाता है। इन तीनों संस्करणों में fcets का पूर्व निर्धारण किया गया है।

(ii) **Version 2–Analytico -Synthetic (1950–1963)** Analytico Synthetic पद्धति के तहत सीसी के चौथे, पांचवें और छठे संस्करणों को रखा जाता है। इन तीनों संस्करणों में Facets का पूर्व निर्धारण के स्थान पर levels of fact और round का प्रयोग किया गया है।

CRG

- CRG पुस्तकालयों का एक समूह है जिसका पूरा नाम Classification Research Group है जो London में है। BC Vickery की अध्यक्षता में 1952 में इस ग्रुप को बनाया गया।
- Classification Research Group का मुख्यालय लंदन में है।
- Classification Research Group : USA की स्थापना 1959 में USA में हुई थी और लगभग 1965 तक चला था।

APUPA

- **Dr. S. R. Ranganathan** जो भारत में **Library & Information Science** के जनक हैं, इन्होने पुस्तक के व्यवस्थापन के लिए एक मौलिक सिद्धांत दिया जिसे **APUPA** पैटर्न के रूप में जाना जाता है।
- **APUPA** पैटर्न वर्गीकरण में पुस्तकों की व्यवस्था के तरीकों को पेश करता है **(APUPA pattern is one of the methods of arrangement of books in Classification)।**
- इस पद्धति के अनुसार दस्तावेजों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है, **Umbral, Penumbral** और **Alien**.

1. **Umbral** दस्तावेज का अर्थ पूरी तरह से प्रासंगिक दस्तावेज है जो पाठक की मुख्य रुचि है।
2. **Penumbral** दस्तावेज पाठक की सीमांत रुचि को संतुष्ट करता है। यह प्रकार आंशिक रूप से प्रासंगिक है और किसी व्यक्ति को उमब्रल पर से संबंधित है।
3. **Alien– Penumbral – Umbral – Penumbral – Alien (APUPA arrangement) Alien** दस्तावेज पूरी तरह से गैर–प्रासंगिक है और इस प्रकार पाठक को इसकी आवश्यकता नहीं है। तो, हम पुस्तक के हर उपयोगी अनुक्रम के पैटर्न को पहचान सकते हैं।

Dewey Decimal Classification
(दशमलव वर्गीकरण पद्धति)

- DDC (Dewey Decimal Classification) एक प्रमुख पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति है, जिसका विकास मेल्विल ड्यूई / डेवी (Melvil Dewey) द्वारा किया गया था और
- DDC वर्गीकरण पद्धति T. Hariss के वर्गीकरण पद्धति पर आधारित था । हैरिस की वर्गीकरण पद्धति फ्रांसिस बेकन के वर्गीकरण के दर्शन पर आधारित था जिसे 1970 में प्रतिपादित किया गया था।
- **DDC** की **स्थापना** 1876 में की गई।
- मेल्विल डेवी महोदय ने DDC को तीन बार संपादित किया है–
- **DDC** मुख्य वर्ग की संख्या 10 (0 –9) है।
- Dewy Decimal Classification लगभग परिगणात्मक वर्गीकरण पद्धति (Almost Remunerative Classification Scheme) है।
- DDC की 1st Summary मुख्य वर्ग कहलाती है।
- DDC की 2nd Summary उपविभाजन कहलाती है।
- DDC की 3rd Summary Section कहलाती है।
- DDC का प्रथम संस्करण (1876) 44 page में आया

DDC Title Name :-

- 1st ed.A classification and subject index for cataloguing and arranging the books and pamphlets of a library
- 2nd –14th edition Decimal Classification and Relative Index
- 15th –23rd edition Dewey Decimal Classification and Relative Index था।

- दशमलव वर्गीकरण के 1st संस्करण में ड्यूई का नाम मुखपृष्ठ के बजाय मुखपृष्ठ के पश्च भाग में अंकित किया गया है
- DDC का अंतिम संस्करण 2011 में (23th) आया है।
- Dewy Decimal Classification में फॉर्म डिवीजन का प्रयोग 2nd ed. से 12th Ed. , तक किया गया।
- वर्तमान मे DDC का Development and management , OCLC व LOC व Editorial Policy Committee कर रहा है।

- Dewy Decimal Classification ने पूरे विश्व के ज्ञान को 10 भागो मे विभाजित किया जो मुख्य रूप से शैक्षणिक आवश्यकताओ के आधार पर विभाजित है।
- DDC का वर्तमान प्रकाशक OCLC (Online Computer Library Center , Founded in 1967 ,Old Name Ohio College Library Center) , और इसका वर्तमान Editor chief Michael Panzer है
- DDC का प्रथम संक्षिप्त संस्करण 1895 में (DDC के 5 वे Edition के साथ) में आया।
- Dewy Decimal Classification का नवीनतम संक्षिप्त संस्करण : 15th , 2012 में प्रकशित हुआ।

- DDC का प्रथम इलेक्ट्रॉनिक संस्करण 1993 में (Electronic Dewey) के नाम से आया।
- DDC का दूसरा इलेक्ट्रॉनिक संस्करण Dewey for Windows (August , 1996)
- DDC का Online संस्करण : 2000(Web Dewey) मे प्रकाशित हुआ।

- Phase Relation का प्रयोग 11th Ed . (But use in 14th Ed .) मे किया गया
- Dewy Decimal Classification पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग भारत में आशा डिकिन्सन के द्वारा 1915 मे University of Punjab से प्रारम्भ किया।
- DDC का दुसरा संस्करण 1885 में Walter Stanley Biscoe की सहायता से प्रकाशित हुआ।
- Integrity of number और Relocation 2nd ed. में आरम्भ हुआ।
- सर्वप्रथम Dewy Decimal Classification का हिन्दी मे अनुवाद प्रभु नारायण ने किया।
- DDC का मानक उपविभाजन (Standard Sub – Division) 15th Ed. को कहा जाता है।
- Dewy Decimal Classification में पक्ष (Facet) का प्रयोग 17th Edition में किया गया।
- DDC में सबसे ज्यादा संपादित संस्करण E.May Seymour द्वारा (7 बार) किये गये।
- DDC का 30 भाषाओ मे अनुवाद किया गया है।
- Dewy Decimal Classification के अनुसार ग्रंथाक (बुक नंबर) का निर्माण लेखक के कुलनाम (Surmame) के प्रथम तीन अक्षर से किया जाता है
- Dewy Decimal Classification में विषयों का चुनाव सामान्य से विशिष्ट के आधार पर किया जाता है।
- डीडीसी के 13 वें संस्करण में Alternative schedule प्रयोग किया गया ।
- सर्वप्रथम DDC में 14 वें संस्करण से टेबल का प्रयोग शुरू हुआ
- DDC के 14 वें संस्करण में टेबल की संख्या 4 थी ।
- DDC के 14 वें संस्करण में वनस्पति विज्ञान के लिए Alternative schedule प्रयोग किया गया ।
- DDC के 15 मे संस्करण से उसके लेखक के नाम को टाइटल में सम्मिलित किया गया ।
- DDC के 15 वें संस्करण में ज्ञान के साथ विस्तार का सिद्धांत (Principle of Keeping face with Knowledge) प्रतिपादित किया गया और 17 वें संस्करण में इसका संशोधन किया गया ।

- 1st –15th संस्करण तक डीडीसी 1 खंड (Volume) में प्रकाशित हुआ था ।
- DDC का 16 संस्करण दो खंडो (Volume) में प्रकाशित हुआ था । जो कि पहला खंड Schedule तथा दूसरा इलेक्ट्रिक इंडेक्स था ।
- Dewy Decimal Classification के 17 वा संस्करण 2 खंडो (Volume) में प्रकाशित हुआ था ।
- Dewy Decimal Classification का 18–19 वां संस्करण 3 खंडों (Volume) में प्रकाशित हुआ था
- Dewy Decimal Classification का 20–23 वां संस्करण 4 खंडों (Volume) में प्रकाशित हुआ था
- Dewy Decimal Classification का डीडीसी के 18–21 वें संस्करण में टेबल की संख्या 7 थी ।
- Dewy Decimal Classification के डीडीसी के 22–23 वें संस्करण में टेबल की संख्या 6 थी।

- DDC 19th के अनुसार Table 1 में अग्रता क्रम तालिका (Table of Precedance) का प्रावधान है
- डीडीसी के 20 वे संस्करण को इलेक्ट्रोनिक डेवी के रूप में प्रकाशित किया गया । (1993 में सीडी रोम में इलेक्ट्रॉनिक डेवी नाम से प्रकाशित हुआ)
- DDC के 16 वे संस्करण में पुननिर्मित अनुसूची (Phoenix Schedule) का आरंभ हुआ था ।
- डीडीसी के 20 वें संस्करण में इलेक्ट्रॉनिक डेवी सन 1992–93 सीडी रोम में प्रकाशित किया गया
- डीडीसी के 20 के संस्करण में इलेक्ट्रॉनिक देवी OCLC फॉरेस्ट प्रेस के द्वारा प्रकाशित किया गया
- डीडीसी के प्रथम इलेक्ट्रॉनिक Edition को डेनवर में अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन में प्रदर्शित किया गया
- डीडीसी के 20 के संस्करण में इसे भी देखिए (See also) '' आरंभ किया गया।
- DDC के 19 सदी में कुल 6 Edition आ चुके थे

DDC के संक्षिप्त संस्करण	
Abridged Ed.	**Year**
1ST	1895
2nd	1915
3rd	1926
4th	1929
5th	1936
6th	1945
7th	1953
8th	1959
9th	1965
10th	1971
11th	1979
12th	1990
13th	1997
14th	2004
15th	2012

❖ Dewy Decimal Classification के प्रथम खण्ड में वर्ग संख्या के विस्तार हेतु 7 तालिकाएँ (**Tables**) दी गई है –(18–21 संस्करण तक)

Tables	Section
Table 1	Standard subdivision
Table 2	GeographicalArea, Historical Periods, Persons
Table 3	subdivesion of Individual Literature
Table 4	Subdivision of Individual Languages
Table 5	Racial, Ethnic, National Group
Table 6	Languages
Table 7	Group of Persons

❖ Dewy Decimal Classification के प्रथम खण्ड में वर्ग संख्या के विस्तार हेतु 6 तालिकाएँ (**Tables**) दी गई है –(23 संस्करण मे दी गई है।)

Tables	Section
Table 1	Standard subdivision
Table 2	GeographicalArea, Historical Periods, Persons
Table 3	Subdivisions for the Arts. for Individul Literatures,for Specific Literary Forms
Table 3A	Subdivisions for Works by or about Individual Authors
Table 3B	Subdivisions for Works by or about more than One Author
Table 3C	Additional Notation for Arts and Literature
Table 4	(Subdivision of Individual Languages and Language Families)
Table 5	Racial, Ethnic, National Group
Table 6	Languages

Class Number	**DDC Main Classes**
000	Generalities
100	PhilosophyAnd Psychology

500	Pure Science

तृतीय खण्ड (Volume 3)

(i) Schedules : 600–999 तक ज्ञान का संगठन (The organization of knowedge from 600–999)

600 – Technology
700 – Arts & recreation
800 – Literature
900 – History & geography

(ii) Relative Index : इस भाग में विषयों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है जिसकी सहायता से हम आसानी से सम्बन्धित विषयों तक पहुँच सकते हैं–

सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण पद्धति
(Universal Decimal Classification Scheme)

- Henri la Fontaine and Paul otlet ने मेल्विल डेवी से डीडीसी को संशोधित करने (फ्रेंच भाषा मे अनुवाद करने की) की अनुमति मांगी । उनकी अनुमति के आधार पर संशोधित किया तो एक नई क्लासिफिकेशन उभरकर सामने आई जिसकी नाम UDC रखा गया।
- UDC विकास बेल्जियम के ब्रुसेल्स (Brussels) नगर में प्रथम "इन्टरनेशनल कॉफ्रेन्स ऑन बिब्लियोग्राफी" (International Conference on Bibliography) के सम्पन्न होने के परिणामस्वरूप 1895 में हुआ था।
- इसका मुख्यालय हॉलैण्ड में दी हैग' (The Hague) में स्थित है और इसके लिए एक महासचिव नियुक्त है।
- इसका प्रथम सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण 1905 में फ्रेन्च भाषा में "मैन्युअल डी रिपरटॉयर बिब्लियोग्राफि बिब्लियोग्राफिक्स यूनिवर्सल"(Manual de Repertoire Bibliography Bibliographice Universal) के नाम से प्रकाशित हुआ जो DDC के पॉचवे संस्करण पर आधारित था।
- UDC का दुसरा संस्करण Classification Decimal Universal नाम से 1927 में फ्रेच भाषा में प्रकाशित हुआ।
- UDC का तृतीय संस्करण जर्मन भाषा में दस भागों में 1934 से प्रारम्भ होकर 1943 में डेसीमल लासीफिकेशन (Decimal Classification) के नाम से प्रकाशित हुआ।
- Universal Decimal Classification को अद्यतन (Update) 1992 तक FID करता था परंतु 1992 के बाद UDCC (Universal Decimal Classification Consortium करता है।
- UDC का नवीनतम संस्करण जिसे UDC Master Reference File (MRF) कहते है। UDC Master reference File (MRF) 2012 मे प्रकाशित किया गया।
- UDC लगभग पक्षात्मक; Almost Faceted Scheme पद्वाति है
- UDC में मिश्रित अंकन(नोटेशन) का प्रयोग होता हैं।
- UDC में तीन अंको के बाद डोट लगता है।
- अब तक UDC के संक्षिप्त संस्करणों का प्रकाशन 13 भाषाओं में किया जा चुका है।
- UDC के नवीनतम संस्करण द्वारा 50 भाषा कवर की गई
- UDC में 4th Class मुख्य वर्ग खाली रखा गया।
- UDC मे दो प्रकार Scheduled and auxiliary tables (Signs) पाए जाते है।
- UDC का Arrangement दशमलव प्रणाली पर आधारित हैं
- **UDC के प्रतीक**
  Double arrow- See also
  Diamond - example of combination

- सन् 1931 में IIB का नाम परिवर्तित कर (International Institute of Documentation –IID) रखा दिया गया।
- 1937 में पुनः इसका नाम परिवर्तित कर " " (International Federation for Documentation – FID) रख दिया गया।
- 1988 में इसका नाम (The International Federation for Information and Documentation) कर दिया गया।

UDC Complete Editions		
Edition	Year	Language
1st	1905	French
2nd	1927	French
3rd	1934	German
4th	1943	English

UDC Abridged Editions		
Edition	Year	Language
1st	1948	English
2nd	1957	English
3rd	1961	English

(i) Pagination and Volume (पृष्ठों एवं खण्डों का विवरण),
(ii) Illustration and Volume (चित्रादि विवरण),
(iii) Size (आकार),
(iv) Accompany Material (संलग्न सामग्री)

(1) Series Area (ग्रन्थमाला क्षेत्र)
(i) Series Statement (ग्रंथमाला विवरण),
(ii) Sub Series Statement (उप–ग्रंथमाला विवरण),
(iii) Numbering with Series (माला क्रमांक),
(iv) ISSN (अन्तर्राष्ट्रीय मानक पत्रिका क्रमांक)

(2) Note Area (टिप्पणी अनुच्छेद)

(3) ISBN (अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकृत पुस्तकांक, जिल्दबन्दी एवं मूल्य क्षेत्र)

(8) Resource Identifier and Term of Availability

MARC
(Machine Readable Catalogue)

- **Full Form :- Machine Readable Catalogue**
- इस प्रणाली का **विकास Library of Congress** के कम्प्युटर वैज्ञानिक **Henriette Davidson Avram ने 1960** के दशक मे किया।
- MARC -I 1966 में आया
- MARC - II -वर्ष **1968** मे आया।
- **1995** में इसे पायलट योजना के तहत अनुदान प्राप्त हुआ।
- लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, (अमेरिका) द्वारा वर्ष 1966 में प्रारम्भ की गई मार्क (MARC– Machine Readable Catalogue) प्रोजेक्ट पुस्तकालय स्वचालन की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसका उद्देश्य लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की पुस्तक सूची को मशीन पठनीय रूप में टेपों पर तैयार करना था ।
- **MARC ISO 2709** मानक का उपयोग करता हे, जिसे **ANSI/NISO Z39.2** भी कहा जाता है।
- **MARC-I** प्रारूप पुरी तरह Congress Catalogue Card की लाइब्रेरी संरचना पर आधारित है।
- **उद्देश्य –**
  1. पुस्तकालय के मध्य मशीन पठनीय डेटा के संचार हैतु मानक समुच्चय करना
  2. अधिकतम पुस्तकालय के आवश्यक डाटा अवयवों को शामिल करना।
- **MARC रिकार्ड तीन तत्वो से बना है।**
  1. रिकार्ड संरचना
  2. सामग्री पदनाम
  3. रिकार्ड की डेटा सामग्री
- MARC सूचीकरण **हेतु April 1966 मे Library of Congress** की एक परिक्षण योजना के रूप में प्रारम्भ हुआ।
- वस्तुओ के विवरण के लिए डिजिटल प्रारूपों का एक सेट है।
- इसका आविष्कार **ग्रन्थात्मक विवरण** का **मानकीकरण** करने के लिए किया जाता है।
- **MARC II के दो प्रकार है।**
  1. **LC MARC II**
  2. **BNB MARC II**
- सन् **1971** तक **MARC** अमेरिका हेतु **Bibliographic Description** हेतु राष्ट्रीय मानक बन गया।
- MARC Format के तीन फिल्ड है।
  1. Leader (24 Characters)
  2. Directory (12 Characters)
  3. Variable (2 Characters)

UNIMARC

- **Full from – Universal Marc**
- UNIMARC को मूल रूप से ग्रंथसूची डेटा के व्यापक विनिमय को संक्षम करनें के लिए एक स्विचिंग प्रारूप के रूप मूं डिजाइन किया गया हैं।
- UNIMARC का **प्रथम संस्करण 1977** मे आया। **दुसरा संस्करण 1980** में प्रकाशित हुआ।
- UNIMARC **Handbook** का प्रकाशन सन् **1983** में हुआ।
- UNIMARC **IFLA के अंतर्गत विकसित किया गया।** यूनिमार्क अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रो के मध्य विनिमय के लिए एक विकसित फॉर्मेट है।
- **तीसरा** ओर **वर्तमान संस्करण सन 2008** में पुस्तक प्रारूप (**Book Format)** में प्रकाशित किया गया।

UKMARC

- **1968–69 में ASLIB (1924) , OSTI (The Office of Scientific and Technical Information) and LC** की सहायता से विकसित हुआ तथा इसका प्रोजेक्ट सन् **1975** में प्रांरम्भ हुआ।
- **UKMARC ISO-2709 and BS-4748** मानक पर आधारित है।
- **UKMARC** का **सबसे ज्यादा प्रयोग England** में किया गया।
- **ब्रिटिश लाइब्रेरी** ने **UKMARC** कों छोड़कर **MARC 21** को सन् **2001** में अपनाया।

USMARC

- US MARC 1973 में आया।
- US MARC Library of Congress का मशीन पठनीय सूची का डेटाबेस है।

❖ **US MARC के संचार प्रारूप**

- US MARC format for bibliographic data (UFBD)
- US MARC format for authority data (UFAD)
- US MARC format for holdings and holdings (UFHL)

❖ **कुछ महत्वपूर्ण मार्क**

UKMARC – 1975
CAN MARC – 1974 (1979 in revised)
US MARC – 1973
INDIMARC -1985
LC MARC - 1969

MARC 21

- **MARC 21 संयुक्त राज्य अमेरिका** और **कनाडा** के संयोजन का परिणाम है।
- **1999** में **MARC OR USMARC** के मिलान से **MARC - 21** का निर्माण हुआ ।
- **1999** मे **US** और **कनाडा** MARC प्रारूपो सामंजस्य के परिणामस्वरूप बनाया गया था।
- **MARC 21** मे पांच प्रकार के डेटा के लिए प्रारूप है।
  1. **ग्रंथ सुची ,**
  2. **प्राधिकरण प्रारूप,**
  3. **होल्डिंग प्रारूप,**
  4. **सामुदायिक प्रारूप,**
  5. **वर्गीकरण डेटा प्रारूप**
- **निम्न वाङ्गमय विवरण प्रस्तुत करता है।**
  1- Authotrity Records
  2- Bibliographic Records
  3- Classification Records
  4- Community Information Records
- यह डेटा प्रारूप को परिभाषित करता है जिसके द्वारा कम्प्युटर ग्रन्थ सुची की जानकारी आदान–प्रदान , उपयोग और व्याख्या करते है।
- **MARC 21** दो वर्ण सेटो के उपयोग की अनुमति देता है।
  1. **Marc - 8 (ISO 2022)** पर आधारित है।
  2. **UTF - 8 – MARC -21** युनिकोड द्वारा समर्थित सभी भाषाओ को अनुमति देता है।
- **MARC 21** मानक **Z39.2** पर आधारित है।
- MARC 21 को निम्नलिखित मेटाडेटा मानकों में मैप किया गया है।
  - MODS
  - Dublin Core
  - UNIMARC to MARC 21
  - XINO
  - Digital Geospatial Metadata to MARC
  - RDA

Marc 21: Bibliographic format

0XX = Control information, numbers, codes
1XX = Main entry
2XX = Titles, edition, imprint
3XX = Physical description, etc
4XX = Series statements
5XX = Notes
6XX = Subject access fields
7XX = added entries or series, linking
8XX = Series added entries; holdings and locations
9XX = Reserved for local implementation

Some Important Tag

010	-	**Library of Congress control number**
020	-	**ISBN**
050	-	**Library of Congress call number**
080	-	**UDC Number**
082	-	**DDC**
100	-	**Personal name main entry number**
110	-	**Main entry- corporate name**
245	-	**Title information**
250	-	**Edition**
260	-	**Publication, distribution ,etc. (Imprint)**
300	-	**Physical description**
490	-	**Series statement**
520	-	**annotation or summary note**
650	-	**Topical subject heading**
700	-	**Personal name added entry**
710	-	**Added Entry – Corporate Name**
800	-	**Series Added Entry- Personal Name**
810	-	**Series Added Entry – Corporate Name S**

- WADEX को दो स्तंभों में व्यवस्थित किया गया है, एक स्तंभ को शीर्ष पर शब्दकोश प्रविष्टियों के साथ मुद्रित किया गया है तथा दूसरे को कंप्यूटर द्वारा नीचे अंकन से।
- इस प्रकार उपयोगकर्ता को दो अलग–अलग अनुक्रमणिकाओं को देखने के बदले केवल एक Index देखने से ही वांछित सूचना मिल जाती है।
- इस पद्धति का प्रयोग **Applied Mechanics Review** में किया जाता है।

Citation Indexing System

- यह पद्धति **Institute for Scientific Information, Philadelphia** के निदेशक **यूजीन गार्फील्ड (Engene Garfield)** द्वारा विकसित की गयी थी।
- इस पद्धति का मूल प्रेरणा स्रोत शेपार्ड्स साइटेशन्स **(Shepard's Citations)** है, जो **United States** में **सन् 1873** से ही प्रकाशित हो रही है।
- **Institute for Scientific Information** के बाद में **1963** से साइंसेज साइटेशन इंडेक्स **(Science Citation Index)** और **1973** से सोशल साइंसेज साइटेशन इंडेक्स **(Social Sciences Citation Index)** इसी पद्धति को प्रकाशित करना आरम्भ किया।
- इस पद्धति से बनी अनुक्रमणिका प्रलेखों में उद्धृत लेखों की एक ऐसी क्रमबद्ध सूची होती है, जिसमें प्रत्येक उद्धृत लेख के साथ उद्धरणकर्ता लेखों **(Citing Articles)** की सूची दी जाती है।
- इस प्रकार की अनुक्रमणिका में उसके प्रलेखों को उद्धरणकर्ता प्रलेख के पहले व्यवस्थित किया जाता है।
- अनुक्रमणिका में प्रविष्टियाँ उद्धृत लेखकों के नाम के अन्तर्गत वर्णानुक्रम में व्यवस्थित की जाती है। प्रत्येक प्रविष्टि में निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं
  - **शीर्षक (Heading)**—इसमें लेखक का नाम, प्रकाशन वर्ष, पत्रिका का नाम, खंड संख्या तथा पृष्ठ संख्या के उल्लेख होते हैं।
  - **स्रोत मद (Source items)**—इसमें उद्धरणकर्ता प्रलेख (Citing documents) की सूचना दी जाती है। इस क्रम में प्रलेख के लेखक, प्रकाशन वर्ष पत्रिका का नाम, खंड संख्या तथा पृष्ठ संख्या के उल्लेख किये जाते हैं।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- अनुक्रमणिका (Index) शब्द को सर्वप्रथम **शीर्षक टैग** के रूप में **सिसेरो** के द्वारा प्रयुक्त किया गया।
- पत्रिका के आर्टिकल की आधुनिक Index को प्रतिपादित करने का श्रेय **William frederick Pool** को जाता है।
- **इंडेक्सिंग (Indexing) के मुख्य प्रकार**
  1. Natural indexing language
  2. Free indexing language
  3. Controlled indexing language
- Thesaurofacet एक **indexing tool** है।
- Thesaurofacet (1969) का विचार **जीन एचिसन** के द्वारा विकसित किया गया था।
- Cranfield studies **Experimental Research** का उदाहरण है।
- Herbert Marvin Ohiman (1927–2002) का संबंध इंडेक्सिंग से है।
- Keyword indexing Stop word'' की अवधारणा प्रत्येक तत्व के संदर्भ में सूचीबद्ध करती है
- Cranfield Project **indexing** से संबंधित है।
- Subject Headings and Thesauri **controlled indexing languages** एक प्रकार की indexing languages हैं।
- index to subject headings पर **ALA committee सन् 1892** में बनाई गई थी।
- FAST का पूरा नाम **Faceted Application of Subject Terminology** है।
- FAST लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस विषय हेडिंग (LCSH) पर आधारित एक सामान्य उपयोग नियंत्रित शब्दावली है। FAST को **1998** में ऑनलाइन कंप्यूटर लाइब्रेरी सेंटर, Inc (OCLC) द्वारा WorldCat के एक भाग के रूप में विकसित किया गया है। **FAST आठ** शीर्ष पहलुओं में शीर्षकों को अलग करता है: Topical, Geographic, Personal name, Corporate name, Form, Chronological, Title as subject, and Meeting Name-
- कंप्यूटर आधारित प्रणाली में आमतौर पर **free indexing language** का उपयोग किया जाता है।
- SYNTOL (**Syntgmatic organisation language)** स्वचालित अनुक्रमण भाषा automated indexing language है। SYNTOL **Jean Claude Gardin** के द्वारा विकसित किया गया।

- Subject Indexing को प्रथम बार कंप्यूटराइजेशन **DRTC** ने किया।
- ''Systematic Indexing'' में सैद्धांतिक आधार **1911** में **J. Kaiser** ने बनाए।
- ''Systematic Indexing''पुस्तक **Julius Otto Kaiser** द्वारा लिखी है।
- Subject indexing में 'मूर्त और प्रक्रिया (Concrete and Process) का उद्धरण (citation) क्रम सर्वप्रथम **J. Kaiser** के द्वारा तैयार किया गया है।
- Indexing के लिए क्रमानुसार Things, Property, Material, Action (Subject Cataloges) **E J Coates** ने सुझाया।
- 1950 में Relational indexing **J.E.L. Farradane** के द्वारा तैयार की गई है।
- NEPHIS (**Nested Phrase Indexing System)** का प्रयोग **Timothy C. कारवेन** (Carven) ने 1977 में किया।
- LIPHIS (**Linked Phrase Indexing System) Timothy C.Carven** के द्वारा 1978 में तैयार किया गया । LIPHIS के द्वारा कंप्यूटर की सहायता से विषय अनुक्रमण का क्रम बदला (दूसरे स्थान पर रखना) जाता है।
- British Technology index **January, 1962. (The Library Association, London)** से प्रकाशित हो रही है जिसको **Current technology index** नाम से जाना जाता है।
- British Technology index के 1 वर्ष में इसके 11 अंक प्रकाशित होते हैं और एक वार्षिक खंड प्रकाशित होता है।
- British Technology index की अनुक्रमणिका पद्धति **Catchword And Trade Name Index (CATNI)** पद्धति पर आधारित है।
- Biological Agricultural index का प्रकाशन **1964** से **H. W. Wilson Company** द्वारा किया जा रहा हैं। इसकी अवधि मासिक है।
- **Index Medicus** का 1679 में (1960 से 2004 तक मुद्रित संस्करण नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन (वाशिंगटन की नेशनल लाइब्रेरी) द्वारा **Index Medicus / Cumulated Index Medicus (IM/CIM)** नाम से प्रकाशित किया गया था।
- Index Medicus का अंतिम प्रकाशन दिसंबर **2004 (45 वॉल्यूम)** में प्रकाशित हुआ।
- library literature अनुक्रमणिकरण पत्रिका (इंडेक्सिंग मैगजीन) का प्रकाशन **1934** से **H.W. Wilson Company: American Library Association** द्वारा किया जा रहा है। इसकी अवधि **द्विमासिक (Bi–monthly)** है।
- जब Indexing के लिए लेखक के नाम का प्रयोग किया जाता है, तो इस प्रकार की Indexing प्रणाली **Citation Indexing** कहलाती है।
- Citation Indexing का विकास सर्वप्रथम **Law क्षेत्र** में हुआ।
- AHCI (**Arts and Humanities Citation Index)** को **Arts & Humanities Search** के नाम से भी जाना जाता है। AHCI का प्रकाशन **Clarivate Analytics (Canada and Hong Kong)** कर रहा है।
- उद्धरण अनुक्रमणिका (Citation indexes) **ग्रंथसूची डेटाबेस (Bibliography database)** है।
- अनुक्रमणीकरण में **Searching strategy** पद का प्रयोग किया जाता है।

विषय सूचीकरण
(Subject Catalogue)

उद्देश्य एवं कार्य

- विषय सूचीकरण का प्रमुख उद्देश्य पाठको की विषय अभिगम की पूर्ति करना है अर्थात यदि पाठको को ग्रंन्थालय से खोजें जाने वाले गंन्थो का विषमज्ञात हो तो उन्हें ग्रंन्थालय से प्राप्त करने में सहायता देना
- Cutter द्वारा सूची के उद्देश्यों में विषम सूचीकरण के उद्देश्यों को भी सम्मिलित किया गया है कोई पाठक अपना अभीष्ट ग्रन्थ पाने में सफल हो सके , यदि ग्रन्थ के विषय का ज्ञान हो , यदि ज्ञात हो सके कि ग्रन्थालय में किसी विशिष्ट विषय पर , कौन – कौन से ग्रन्थ उपलब्ध है । ''
- मिनी अर्ल सीयर्स के अनुसार विषय सूची , शीर्षक के एक स्वरूप के अन्तर्गत किसी विषय से सम्बधित ग्रंन्थालय में उपलब्ध समस्त ग्रंन्थों को सूचीबद्ध करनें का प्रयास करती है।

❖ **Encyclopedia of Librarianship**

इसकें द्वारा विषय सूचीकरण को दो प्रकार से परिभाषित किया गया है ।

- वह सूची जिसने मात्र विषय प्रविष्टिया ही होती है ।
- सामान्य शब्दों में ऐसी कोई भी सूची जो विषयानुसार अकारादि अथवा वर्गीकृत क्रम मे व्यवस्थित हो ।
- विषय सूची एक ऐसी सूची है , जिसमें पुस्तको की विषय प्रविष्टियों : (subjjet entries) को व्यवस्थित रूप में रखा जाता है ।

(1) **Top Card** :– इस पत्रक को बॉटम कार्ड के ठीक सामने व्यवस्थित किया जाता है। इस कार्ड मे पत्रिका के बारे मे एक बार मे ही पूर्ण सूचना प्राप्त हो जाती है। इस पत्रक का प्रमुख कार्य पत्रिका के भुगतान के समय किया जाता है।

(2) **Bottom Card**:– इस कार्ड का प्रयोग पत्रिकाओ के क्रियादेश देते समय किया जाता है। इस पत्रक मे पत्रिका की व्याख्या, प्रकाशन की आवधिकता, प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाले अंको की संख्या तथा वार्षिक चंदा आदि का विवरण होता है। इस पत्रक को पंजीयन पत्रक भी कहते है।

परिग्रहण रजिस्टर
Accession Register

- पुस्तकालय मे अधिग्रहण की गई पुस्तको का स्थित लेखा रखा जाता है।
- पुस्तकालय मे क्रय की गई अथवा उपहार स्वरूप प्राप्त की गई प्रत्येक पुस्तक तिथिवार सम्पूर्ण विवरण एक पंजिका मे अंकित किया जाता है।
- Accession Register पुस्तकालय का स्थाई अभिलेख होता है।
- **Accession Register** मे प्रयुक्त कागज तथा उच्च कोटि की जिल्द होनी चाहिये।
- Accession Register मे बायें तथा दायें पृष्ठो पर अनेक खाने बने होते है। इन खानो/स्तम्भ /कॉलन मे कुछ फेरबदल ग्रंथालय अपनी आवश्यकता के अनुसार कर सकता है।
- **Accession Register की उपयोगिता**
  - लेखा परिक्षण के लिए यह बहुत आवश्यक है।
  - भण्डार सत्यापन के लिए परिग्रहण पंजिका का प्रयोग होता है।
  - यह मात्र ऐसा प्रलेख है जिसमे पुस्तक की सम्पूर्ण जानकारी एक ही स्थान पर मिल जाती है।
  - प्रमाणिकरण एवं जॉच के लिए लेखा परीक्षक इसी का प्रयोग करते है।
  - पुस्तकालय मे पुस्तको को नियंत्रित करने के लिए सहायक है।
- **Accession Register के कार्य :–**
  1. किताबों कि जाँच,
  2. पुस्तकें और बिल प्राप्त करना,
  3. समानांतर अनुक्रम में विधेयकों और पुस्तकों की व्यवस्था करना,
  4. सत्यापन,
  5. पुस्तकें प्रेषित करना।
- परिग्रहण पंजिका की साइज **16x13 cm** है।
- **14 कोलम** होते है। नियम **GFR 2017** के अनुसार इसमें **15 कॉलम** होते है। इसमें **Withdrawn Date** नया जोडा गया है।
- भण्डार सत्यापन के उपयोग में लिया जाता है।
- **Accession Register मे निम्नलिखित खाने होते है**

  1. परिग्रहण/तिथि, 2. Accession Number, 3. लेखक का नाम, 4. आख्या, 5. प्रकाशन वर्ष, 6. प्रकाशक का नाम, 7. पृष्ठ संख्या/आकार, 8. स्त्रोत, 9. बिल नंबर व दिनांक, 10. संस्करण वर्ष, 11. पुस्तक का वास्तविक मुल्य, 12. Call Number, 13. खण्ड संख्या, 14 प्रत्याहरण संख्या व दिनांक

मुक्त प्रवेश प्रणाली
(Open Access System)

- Open Access System की शुरूआत May 1893 में J.D. Brown द्वारा England में कि गई।
- State Lenin Libaray में सर्वप्रथम Open Access System की शुरूआत हुई।
- Open Access System भारत में सर्वप्रथम प्रयास W.A. Borden द्वारा सन् 1910–11 में बडोदा राज्य में किया गया।
- Library Science का तृतीय सूत्र Open Access System का पालन करता है।

पुस्तकालय जिल्दसाजी
(Library Binding)

❖ **उद्देश्य (Objectives) :– Dr. Ranganathan** के अनुसार जिल्दबंदी का उद्देश्य एक पुस्तक के सभी पृष्ठों को एक साथ सुदृढ़ता से एक इकाई के रूप में इस प्रकार कसकर बाँधना है जिससे कोई भी वाछित पृष्ठ तत्काल खोला जा सके। अतः सामान्य तौर पर जिल्दसाजी के निम्न उद्देश्य है –

- पुस्तकों को पाठकों के लिए उपयोग हेतु सक्षम बनाना।
- उपयोग के समय पुस्तकों का सही अवस्था में रखना ताकि अधिक समय तक उपयोग में आ सके।
- पुस्तकों को अधिक समय तक सुरक्षा प्रदान की जा सके।
- पुस्तकों को सुंदर एवं आकर्षक रूप प्रदान करना ताकि पाठक पुस्तक के प्रति आकर्षित हो सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन वह अवधारणा है जिसमें किसी संस्था के कर्मचारियों तथा उपयोक्ताओं दोनों की सेवा संबंधी मदों में गुणवत्ता पाई जाती है

- **परिभाषा** – संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन की परिभाषा का व्याख्यान विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न तरीके से दिया है जो इस प्रकार है '
- **टी . क्यू . एम.फोरम (TQM Forum) के अनुसार** , '' पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन मानव आधारित प्रबंधन प्रणाली है जिसका उद्देश्य न्यूनतम लागत पर उपयोक्ताओं को सतुष्टि प्रदान करना है ।
- **आई.एस.ओ. (ISO) के अनुसार** , '' किसी संस्था की पहुँच मुख्यतः उसके सभी कर्मचारियों की अच्छी गुणवत्ता पर निर्भर करती है इससे कर्मचारिया के साथ – साथ उपयोक्ता भी लाभान्वित होता है ।
- **विकास** :– United States of America की Naval air systems command द्वारा सन् 1985 में किया गया।
- William Edward deming और **Dr. J. M. Juran** द्वारा परिवर्तित किया गया।
- Father of Quality Management का जनक **Dr. J. M. Juran** को माना जाता है।
- Susan Jurow द्वारा **Integrating Total Quality Managenent in a Library Setting** की रचना कि।
- Total Quality Management में **पाचं स्तम्भ** होते है, जो निम्न है।
  6. Porduct
  7. Leadership
  8. Oraganization
  9. Process
  10. Commitment
- सूसान व बर्नाड ने TQM के लिए **4 अवरोधो** कि पहचान की जो निम्न है।
  1. Vocabulary
  2. Resources
  3. Process
  4. Professionalism
- **सूसान व बर्नाड** ने पुस्तकालय की व्यवस्था मे संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन के क्रिर्यान्वयन हेतु मॉडल प्रस्तुत किया

❖ **एडवर्ड डेमिन्स के अनुसार TQM के 14 बिन्दु**

15. Create Purpose for Improvement
16. Adopt the New Philosophy
17. Cease Dependence on Inspection to Achieve quality
18. Work Wish one supplier to produce cost
19. Continuous Improvement
20. On–the–Job training
21. Leadership
22. Drive out Fear
23. Break Down silor
24. No Slogans
25. No Quotas or Numerical Goals
26. Remove Annual Ratings or Merit System
27. Institute Education and Self –Improvement Programmes
28. Involve All Workers in the Transformation

❖ '' टी.क्यू.एम. के तत्व

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन पाठकों की आवश्यकताओं को समझकर पाठकों को उसकी सेवा और संतुष्टि को सुधारने पर केंद्रित है । संपूर्ण गुणवत्ता के कई तत्व हैं जो परिर्वतन के लिए विभिन्न क्षेत्रों को संबोधित करते हैं । इन तत्वों को चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है ।

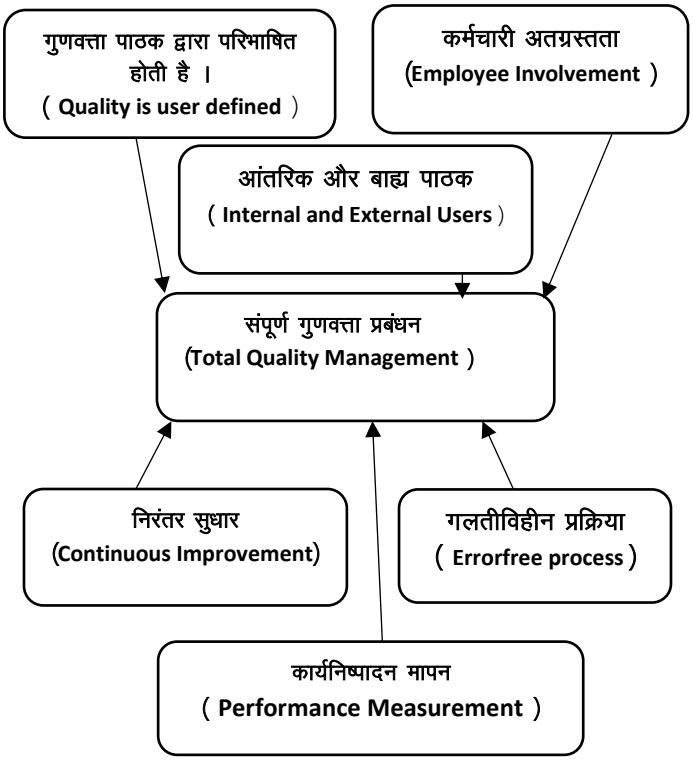

आकस्मिक प्रबंधन (CONTINGENCY MANAGEMENT)

- आकस्मिक प्रबंधन ही किसी प्रशासन की सफलता की कसौटी होती है।
- इसके अन्तर्गत आपदा के आते ही प्रभावित लोगों को आपदा से निजात दिलाना ही प्रमुख उद्देश्य होता है। अलग–अलग प्रकार के प्राकृतिक आपदाओं के आकस्मिक प्रबंधन में अलग–अलग प्रकार की प्राथमिकतायें होती हैं ।

परिवर्तन प्रबन्ध (CHANGE MANAGEMENT)

- कर्ट लेविन ने परिवर्तन के बल क्षेत्र सिद्धांत को विकसित किया था।
- परिवर्तन प्रबंध (Change Management) किस वर्ष 1948 में प्रस्तावित किया गया है।
- परिवर्तन प्रबंध के एस मॉडल का सुधार मैकिन्से ने किया है
- परिवर्तन प्रबंध से तात्पर्य है, परम्परागत ग्रंथालय से डिजिटल ग्रंथालय में परिवर्तन से संबंधित है।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन की शुरूआत 23 अक्टूबर 2003 हुई थी।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान नई दिल्ली शहर में स्थित है।
- अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण (Reduction) दिवस 13 अक्टूबर को मनाया जाता है।
- भारत की पहली आपदा प्रबंधन योजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जारी की गई
- संकट प्रबंधन स्थिति आधारित प्रबंधन प्रणाली प्रबंधन प्रणाली है।
- वर्ड प्रोसेसिंग, डेस्कटॉप पब्लिशिंग और इलेक्ट्रॉनिक कैलेंडर कार्यालय प्रणाली के उदाहरण हैं।
- किसी संस्था के आन्तरिक एव बाह्य वातावरण में हो रहे परिवर्तनों के कारण संस्था की स्थापित एवं विद्यमान कार्यप्रणाली में परिवर्तन करने पर विचार करना तथा उन्हें लागू करना ही **परिवर्तन प्रबन्ध** कहलाता है।
- **Change management** का उद्देश्य परिवर्तन को नियंत्रित करने, परिवर्तन को नियंत्रित करने और लोगों को परिवर्तन के अनुकूल बनाने में मदद करने के लिए **strategies** को लागू करना है।

Knowledge Management

- संगठन के ज्ञान और सूचना को बनाने साझा करने उपयोग करने और प्रबंधन की प्रक्रिया है।
- ज्ञान प्रबंधन में On the job Discussion, Formal Apprenticeship. Discussion Forums, Corporate Libraries, Professional Training and Mentoring Programe शामिल है।
- **सन् 1999** मे व्यक्तिगत ज्ञान प्रबंधन शब्द कें रूप में पेश किया गया। यह व्यक्तिगत स्तर पर ज्ञान के प्रबंधन को संदर्भित करता है।
- 1990 मे यह Knowledge Managment के रूप मे जाना गया।
- KM में ज्ञान केंद्रित गतिविधियाँ शामिल हैं, जो नीचे दी गई हैं:

1. नया ज्ञान उत्पन्न करना।
2. बाहर के स्रोतों से बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त करना।
3. निर्णय लेने में सुलभ ज्ञान का उपयोग करना।
4. प्रक्रियाओं, उत्पादों या सेवाओं में ज्ञान को एम्बेड करना।
5. दस्तावेजों, डेटा–बेस और सॉफ्टवेयर में ज्ञान का प्रतिनिधित्व करना।
6. संस्कृति और प्रोत्साहन के माध्यम से ज्ञान वृद्धि को सुगम बनाना।
7. मौजूदा संगठन को संगठन के अन्य भागों में स्थानांतरित करना।

पारस्परिक संबंध (INTER PERSONAL RELATION)

- **पारस्परिक संबंध** दो या दो से अधिक लोगों के बीच एक **मजबूत**, **गहरा,** या **घनिष्ठ** संबंध या **परिचित** है जो संक्षिप्त से धीरज तक अवधि में हो सकता है।
- यह संघ **अनुमान, प्यार, एकजुटता, नियमित व्यापार बातचीत**, या किसी अन्य प्रकार की **सामाजिक प्रतिबद्धता** पर आधारित हो सकता है।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- 'अदिश श्रृंखला' गैंग प्लांक से संबंधित हैं। जब दो अधीनस्थ या समान स्तर के कर्मचारी सूचनाओं का आदान–प्रदान करना चाहते है, तो स्केलर चेन के माध्यम से होने वाले संचार में देरी हो सकती है। इस प्रकार, फेयोल ने देरी से बचने के लिए और एक ही समय में दो अधीनस्थों के बीच सीधे संचार की अनुमति देने के लिए गैंग प्लांक की अवधारणा का सुझाव दिया।
- प्रदर्शन मूल्यांकन एक तकनीक है जिसे समय–समय पर कर्मचारियों के काम का मूल्यांकन किया जाता हैं।

- उत्पादों, सामग्री या सेवाओं के लिए व्यय लाभों द्वारा उचित सिद्ध होता है या नहीं इनका अध्ययन तथा मूल्यांकन करने की व्यवस्थित पद्धति तथा प्रक्रिया, लागत प्रभावी विश्लेषण है।
- निष्पादन के स्तर और उस स्तर को प्राप्त करने में अंतः ग्रस्त लागत के बीच का संबंध लागत प्रभाविता कहलाता है।
- उत्पाद/सेवा के लाभ और इसे प्रदान करने की लागत के बीच का संबंध लागत लाभ विश्लेषण कहलाता है।
- लागत विश्लेषण संगठन द्वारा प्रदत्त उत्पाद/सेवा की लागत का विश्लेषण किया जाता है।
- उप–प्रणाली की आबंटित लागत को इसके प्रचालन की वास्तविक संख्या से विभाजित द्वारा निर्धारित किया जाता है, इसे इकाई लागत कहलाती हे।
- अधिकृत रूप से आय और व्यय प्रवाह के व्यवस्थित रख–रखाव को लेखांकन कहा जाता है।
- सूचना संग्रहण, संगठन, सेवाओं और उपयोग इत्यादि के सम्बन्ध में लागत वसूली तथा लाभ उपार्जन आर्थिक मूल्यांकन को संदर्भित करते हैं। जबकि कवरेज मूल्यांकन, सर्वे को तथा कार्यबल मूल्यांकन, वर्कर और उनके Performance पर निर्भर होती है और उपयोक्ता मूल्यांकन, उपयोक्ता अनुभव को सन्दर्भित करता है।
- TQM को (पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों पर (ISO–9000 लागू करके) तरह से नियोजित किया जा सकता है।
- कॉरो इशिकावा ने गुणवत्ता नियंत्रण के लिए सात मूलभूत सांख्यिकीय उपकरणों का समर्थन किया जो निम्न है– (1) Check Sheets, (2) Graphs (Trend Analysis), (3) Histograms, (4) Pareto Charts, (5) Cause and effect diagrams, (6) Scatter diagrams, (7) Control Charts.
- नवागन्तुक पाठको के लिए दीक्षा कार्यक्रम संदर्भ विभाग से संबंधित है।
- जिल्दसाज के लिए P.V.A. अम्लरहित आसंजक बेहतर होता है।
- हिस्टोग्राम और परेटी चार्ट टी क्यू एम उपकरण है।
- प्रदर्शन रैंक (Display Racks) सामन्यताः कबूतरखाना टाइप, सीढ़ीनुमा एवं झुकाव वाली होती है।
- ग्रन्थों को रैक्स पर सीधे खड़े रखने हेतु स्टील या लकड़ी की निर्मित L स्वरूपीय उपकरण को बुक सपोर्टर कहते हैं।
- ग्रन्थालय में सेवाओं के बिना व्यवधान के भंडार सत्यापन की विधि के प्रणेता एस. आर. रंगनाथन थे।

- सामग्री का भौतिक एवं रासायनिक उपचार जो कि उनके आगामी क्षय को धीमा करता है, यह कथन संरक्षण को इंगित होता है
- प्रेक्षण ,ग्रन्थालय अभिलेख ग्रन्थालय के पत्रिका अनुभाग में एक दिन में अलग–अलग समय पर आगंतुक व्यक्तियों की संख्या के बारे में डाटा एकत्र करने की तकनीक मानी जाती है।
- प्रत्येक अर्जित वैयक्तिक ग्रन्थ, जिसके शीर्ष पृष्ठ के पश्चभाग पर एक रबर मोहर अंकित की जाती है, जिस पर रिकार्ड तथा प्रक्रियाकरण की जानकारी दी जाती है, परिग्रहण मोहर कहलाती हैं।
- फ्यूमीगेशन संरक्षण से संबंधित है।
- अधिकार के प्रत्यायोजन (Delegation of Power) का अर्थ अधिनस्थों को अधिकार देना है :
- नियन्त्रण के क्षेत्र (Span of Control) का संबंध अधीनस्थ व्यक्तियों को सुपरवाइज करने की संख्या है।
- संगठन में क्वालिटी सर्कल्स का उपयोग सहभागी प्रबन्ध के लिए किया जाता है।
- ग्रन्थालय में नैत्यक कार्य (Routine jobs) अर्ध–व्यावसायिक कर्मचारी के द्वारा किये जाते हैं:

❖ जीर्ण–शीर्ण पुस्तकों को फलकों से हटाने की प्रक्रिया को ही प्रलेख–प्रत्याहरण कहते हैं। ऐसे प्रलेखों का विवरण प्रत्याहरण पूंजी (Weeding Register) में अंकित कर दिया जाता है। प्रत्याहरण पंजी में इन शीर्षकों का होना आवश्यक है– (1) तिथि, (2) क्रम संख्या, (3) परिग्रहण संख्या, (4) पुस्तक की आख्या, (5) लेखक, (6) मूल्य, (7) प्रकाशक, (8) प्रत्याहरण का कारण, (9) अन्य विवरण।

☞ **जे.एच. शेरा (J.H. Shera) के अनुसार सूचना छ : प्रकार की हो सकती है।**

1. **प्रत्यात्मक सूचना (Conceptual Information) :–** किसी समस्या पर एकाग्रचित्त होकर, जो विचार, सिद्वांत व परिकल्पनाएं निर्मित होती है उन्हें प्रत्यात्मक सूचना कहते हैं।
2. **अनुभव सिद्ध सूचना (Empirical Information) :–** इसके अन्तर्गत साहित्यिक अन्वेषण अथवा प्रयोगशाला में किए जा रहे शोध कार्यों द्वारा व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर अथवा अन्य स्रोतों से सम्प्रेषण द्वारा प्राप्त आंकडों को रखा जाता है।
3. **कार्यविधिक सूचना (Procedual Information) :–** इसके अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा अपने कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण बना सकने वाली प्रक्रियाओं को रखा जाता है। इस प्रकार की सूचना में ऑकडों का एकत्रीकरण, परिचालन व परीक्षण किया जाता है। यह सूचना वैज्ञानिक मनोवृत्तियों पर आधारित तथा व्यवस्थित होती है।
4. **प्रेरक सूचना (Stimulatory Information) :–** मनुष्य जिज्ञासु और चिन्तनशील रहकर नवीन सूचना की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। इसके लिए उसे दो तत्व प्रभावित करते हैं। एक वह स्वयं और दूसरा वहाँ का वातावरण। वातावरण द्वारा प्राप्त सूचना सीधी पहुँचती है व अधिक प्रभावी होती है। इसे प्रेरक सूचना कहते हैं।
5. **नीति सम्बन्धी सूचना (Policy Information) :–** इस प्रकार की सूचना के अन्तर्गत नीति निर्धारण अथवा निर्णय निर्धारण प्रक्रिया से सम्बन्धित सूचनाएं आती हैं। यह निर्णय लेने में सहायक होती है। इस सूचना में विभिन्न गतिविधियां भलीभांति परिभाषित होती हैं। उद्देश्य व उत्तरदायित्व निर्धारित होते हैं। कार्यों का विभाजन स्पष्ट होता है।
6. **दिशासूचक सूचना (Directive Information) :–** सामूहिक गतिविधियों को प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न करने हेतु सहयोग व समन्वय का होना अनिवार्य है। उपयुक्त दिशा निर्देशों द्वारा समूह की गतिविधियों और क्रियाकलापों को प्रभावपूर्ण ढंग से पूरा किया जाता है। उपरोक्त विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को उनकी विशेषता के आधार पर श्रेणीबद्ध किया गया है। व्यवस्थित संचार द्वारा सूचना को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- इनफॉर्मेशन पावरः बिल्डिंग पार्टनरशिप फॉर लर्निंग नामक ग्रन्थ का प्रकाशक ALA है।
- मैकलप के अनुसार सूचना और ज्ञान के मध्य अन्तर है।
- सूचना टुकड़ों में विखंडित और विशिष्ट होती है जबकि
- ज्ञान संरचनात्मक सम्बद्ध और वैश्विक होता है
- ज्ञान को सरल गणितीय समीकरण $k(s) + \Delta 1\ k\ (s + \Delta s)$ में बी.सी. बुक्स ने व्यक्त किया है?
- वसिंग और नेवेलिंग ने सूचना को परिभाषित करने के लिए उपागमा से सन्देश उपागम संसाधन उपागम संरचनात्मक उपागम प्रतिपादित किया।
- सूचना अनुशासन और सूचना ओवरलोड सूचना परिवेश की समस्याएँ हैं।
- एफ. मैकलप और यू. मेन्सफील्ड ने सूचना और ज्ञान को निम्नलिखित रूप से प्रभेदित किया है। सूचना खण्डशः, अपूर्ण, विशेष होती है जबकि ज्ञान संरचनात्मक, और सार्वभौमिक होता है :
- सूचना का अर्थशास्त्र मूलतः सूचना के वितिय प्रंबधन से संबंधित है।
- **डी. एन. मार्शल** सूचना अर्थशास्त्र का विशेषज्ञ है।
- राष्ट्रीय ग्रंथ नीति डॉ. पीटर लाजार का प्रतिवेदन भारत देश से संबंधित है।
- भारत में राष्ट्रीय ग्रंथालय समिति (National Library Commitee) के अध्यक्ष वी.एस. झा थे।
- भारत में वैज्ञानिक नीति का प्रस्ताव 1958 में पारित किया गया था।
- प्रौद्योगिकी नीति प्लान भारत में 1996 में पारित हुआ।
- सूचना नीति सूचना का निर्देशन, प्रबन्ध एवं विकास करने की एक व्यवस्था है।
- सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु सूचना नीति भारत में 1979 में यूनेस्को के द्वारा प्रारम्भ की गई?
- भारत में वैज्ञानिक नीति का श्रीगणेश करने का श्रेय जवाहरलाल नेहरू को जाता हैं।
- भारत में राष्ट्रीय स्तर पर ग्रंथालय एवं सूचना नीति राजा राममोहन राय ग्रंथालय फाउन्डेशन के द्वारा संस्थापित की गई थी।
- राष्ट्रीय स्तर पर भारत में ग्रंथालय एवं सूचना नीति के लिए समिति शिक्षा विभाग के द्वारा गठित की गई थी।

- सूचना का संकलन
- सूचना का सग्रंहण
- सूचना का सम्प्रेषण
- सूचना की पुर्नप्राप्ति
- सूचना का उपयोग

✹ सूचना स्थानान्तरण चक्र के उद्देश्य

- सूचना स्थानान्तरण चक्र से सूचनाएँ नित–प्रतिदिन अद्यतन होती रहती है।
- सूचना स्थानान्तरण चक्र सूचनाओं के वरीयता क्रम को निर्धारित करता रहता है।
- सूचना स्थानान्तरण चक्र के प्रत्येक स्तर का बेहतर उपयोग होता है और विश्लेषणोपरान्त नए–नए विचारों का आगमन होता है।
- सूचना स्थानान्तरण चक्र से सूचनाओं का प्रसार कई दिशाओं में होता है। अतः इससे लाभान्वित होने वाले लाभों की संख्या भी अधिक रहती है।
- सूचना स्थानान्तरण चक्र से उपभोक्ताओं को वांछित सूचना की त्वरित एवं उपयुक्त आपूर्ति होती है।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- सूचना (Information) का अंतर्निहित मूल्य उपयोग करने में होता हैं।
- राष्ट्रीय सूचना केंद्र (National Information Center) का मुख्यालय कहां नई दिल्ली में है।
- The Production and distribution knowledge (1962) पुस्तक के लेखक Fritz Machlup हैं।
- सूचना प्रबंधन की प्रक्रिया के चरण
  1. सूचनाओं का संग्रहण
  2. सूचना विश्लेषण
  3. सूचना व्यवस्थापन
  4. डेटाबेस का निर्माण
  5. सूक्ष्म सूचना प्राप्ति प्रणाली का निर्माण
  6. सूचना प्रसारण
- **Brooks** ने सूचना और ज्ञान के बीच अंतर करने की कोशिश की।
- सूचना विज्ञान (information science) के मौलिक समीकरण (fundamental equation) को **रॉबर्ट ब्रूक (Robert Brooks)** के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।
- सूचना को वैचारिक, अनुभवजन्य, प्रक्रियात्मक, उद्दीपक, (Conceptual, Empirical, Procedural, Stimulatory.) आदि के रूप में J. H. Shera के द्वारा श्रेणीबद्ध किया गया है।
- 1997 में सांडा एर्डेलेज (Sanda Erdelez) के द्वारा Domain information behaviour literature 'Information Encountering' (IE) की अवधारणा पेश की गई।
- **सुचना का चक्र (Information cycle)**
  Data → Processing → information→ Knowledge → wisdom
- टेलीफोन लाइन में संचार (Communication) के लिए किस मीडिया का उपयोग किया जाता है?
- Information Boom, Information Flood और Information Explosion **वर्तमान सूचना स्थिति (Today's information situation)** से संबंधित है।
- प्रकाशित सूचना की मात्रा में तीव्र वृद्धि (rapid increase) तथा सूचना के नेम पर इसके प्रभाव को सूचना विस्फोट (information explosion) कहते हैं।

Information science

- Information science शब्द का प्रयोग 1959 में किया गया ।
- Information science प्रलेखन का संशोधित नाम है।
- Information science बहुपक्षीय विषय है। Information Society पद का प्रयोग 1960 में जापान में किया गया।
- Cryptography **Information security** से संबंधित है।
- सूचना के सीमित विकास को सूचना विस्फोट कहते हैं।
- पुस्तकालय विज्ञान (Library science या Library and Information science) वह विज्ञान है जो प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र एवं अन्य विधाओं के औजारों का पुस्तकालय के सन्दर्भ में उपयोग करता है
- ICT & इन्टरनेट सूचना समाज के महत्वपूर्ण संचालक तत्त्व है
- अमेरिका सूचना समाज की अवधारणा का उपयोग करने वाला पहला देश माना जाता है।
- उच्च शिक्षा सूचना समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक बडी शक्ति होगी।

- सूचना की चोरी,बहुत अधिक जानकारी , व्यक्तिगत गोपनीयता के लिए खतरा आदि सूचना समाज के प्रमुख मुद्दे है।
- पुस्तकालय विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत पुस्तकालयों में संपन्न किये जाने वाले कार्यप्रणालियों से सम्बंधित विशिष्ट प्रविधियों, तकनीकियों, एवं प्रक्रियायों का अध्ययन एवं अध्यापन किया जाता है।
- पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा के माध्यम से ही पुस्तकालयों का व्यस्थापन तथा संचालन हेतु योग्य और कुशल कर्मचारियों को तैयार किया जाता है।
- पुस्तकालय विज्ञान तकनीकी विषयों की श्रेणी में आता है तथा एक सेवा सम्बन्धी व्यवसाय है । यह प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र एवं अन्य विधाओं के सिद्धान्तो एवं उपकरणों का पुस्तकालय के सन्दर्भ में उपयोग करता है
- पुस्तकालय विज्ञान पर **मार्टिन स्त्रेत्तिन्गेर** की पहली पाठ्यपुस्तक **1880** में प्रकाशित हुयी थी। इसके बाद **जोहान्न जेओर्ग सेइजिन्गेर** की दूसरी पुस्तक प्रकाशित हुयी
- मेलविल ड्युई के प्रयासों से कोलंबिया कालेज में पुस्तकालय विज्ञान का पहला अमेरिकन स्कूल 1 जनवरी 1887 को आरम्भ किया गया तथा इसे लाइब्रेरी इकोनोमी का नाम दिया गया जो की 1942 तक अमेरिका में इसी नाम से प्रचलित रहा. इसके पाठ्यक्रमों में पुस्तकालय तकनीको तथा पुस्तकालय सेवा के व्यावहारिक पक्षों पर अधिक जोर दिया गया था। इस प्रकार 19वी शताब्दी के अंत तक अमेरिका में अनेक स्थानों पर पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा का कार्य प्रारम्भ हो गया था। अमेरिका ही पहला देश है जहाँ पुस्तकालय विज्ञान की स्नातक तथा डॉक्टर की उपाधियों से सम्बंधित पाठ्यक्रम सर्वप्रथम प्रारंभ किये गए। अमेरिका के बाद इंग्लेंड दूसरा देश है जहाँ पुस्तकालय विज्ञान का पहला विद्यालय लन्दन में 1921 में लन्दन स्कूल ऑफ लैब्रेरिंशिप प्रारंभ किया गया ।
- अंग्रेजी में पुस्तकालय विज्ञान शब्द का प्रयोग 1916 में पंजाब विश्विद्यालय लाहौर द्वारा प्रकाशित पुस्तक पंजाब लाइब्रेरी में किया गया। पंजाब विश्विद्यालय लाहोर एशिया में पहला विश्विद्यालय था जो की पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा प्रदान कर रहा था। यह अंग्रेजी में प्रकाशित पहली पाठ्य पुस्तक थी।
- इसी प्रकार अमेरिका में 1929 में पहली पाठ्य पुस्तक Manual of Library Economy इसके बाद शियाली रामामृत रंगनाथन की "The Five Laws of Library Science (1931) '' प्रकाशित हुयी जिससे पुस्तकालय विज्ञान का प्रचलन आरंभ हुआ ।

✹ परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- सूचना का सर्वाधिक उपयोग करने वाला **'शोधकर्ता** है।
- सूचना उद्धरण में 'Noise' **अतिरिक्त सूचना** की वजह से होता है।
- Human Behaviour and the Principle of Least Effort: Anb Introduction to Human Ecology प्रथम बार George Kingsley Zipf द्वारा 1949 में प्रकाशित की गई ।
- Ellis model सूचना तैयार करते समय सूचना विशेषज्ञ द्वारा सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला information seeking model मॉडल है।
- James Krikelas ने 1983 में सूचना खोज मॉडल (information seeking model) दो प्रकार के तत्काल आवश्यकता और विलम्बित आवश्यकताएँ (immediate need and deferred needs) बताए हैं।
- पुस्तकालय में सूचना स्रोतों के चयन के लिए न्यूनतम प्रयास (least effort to the selection of information sources) का पहला सिद्धांत Thomas Mann ने लागू किया।
- Information Seeking Behavior का 'Episodic 'model' Nicholas J. Belkin के द्वारा विकसित किया गया था।
- 'Everyday Life Information Seeking' **Reijo Sarolainen** के द्वारा विकसित किया गया था।
- Ecological Theory of Human Information Behaviour Williamson द्वारा 1998 में दिया गया।
- Anomalous State of Knowledge (ASK) Model सूचना पुनर्प्राप्ति का मॉडल है।
- सूचना पुनर्प्राप्ति मॉडल ''Anomalous State of Knowledge (ASK) Model'' Nicholas J. Belkin
  के द्वारा प्रस्तावित किया गया।
- Melvin J. Voigt (1961) ने तीन प्रकार की mscientist approach की पहचान की थी।
  (i) Current Approach
  (ii) Everyday Approach
  (iii) Exhaustive Approach

LIST OF PLAGIARISM SOFTWARE

TURTIN	PLAG SCAN
ITHENTICATE	SAFE ASSIGN
VERI GUIDE	WHITE SMOKE
URKUND	ARTICLE CHECKER
PLAGIARISM CHECKER	DUPIL CHECKER
SMALL SEOT	VIPER
LATIUM	DCMA SCAN
DUST BALL	COPY SCAN

सूचना का अधिकार अधिनियम – 2005 (Right to Information Act)

- राष्ट्रपति ने 15 June 2005 को लागु किया। 12 अक्टूबर 2005 को जम्मु कश्मीर को छोड़कर पूरे देश में लागु हुआ।
- संसद मे अधिनियम 15 June 2005 पारित हुआ।
- इससे पहले इसका नाम – सूचना की स्वतंत्रता अधिनियम – 2002 था।
- वर्तनाम मे यह कानून पुरे भारत मे लागु हो गया।
- शुल्क – 10रू , बीपीएल के लिए निशुल्क है।
- अन्तिम बार संशोधन – 25 Jully 2019 को हुआ।
- अनुच्छेद – 19 के तहत भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार मे RTI निहित है।
- सूचना की अवधि 30 दिन एंव व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित तो 48 घण्टे मे।
- RTI Act 2005 - तमिलनाडु राज्य में 1997 मे प्रारम्भ हुआ।
- RTI Act 2005 - जम्मू कश्मीर में 2009 से लागु किया गया।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (National Knowledge Commission)

- 13 जून, 2005 को भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सैम पित्रोदा (वर्तमान में भी द्वितीय अध्यक्ष) की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय सलाहकार संस्था के रूप में राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (National Knowledge Commission) का गठन किया और उसे नीतिगत मार्गदर्शन तथा सुधारों के निर्देशन का अधिकार सौंपा गया। इस आयोग के संगठन को इस प्रकार देखा जा सकता है

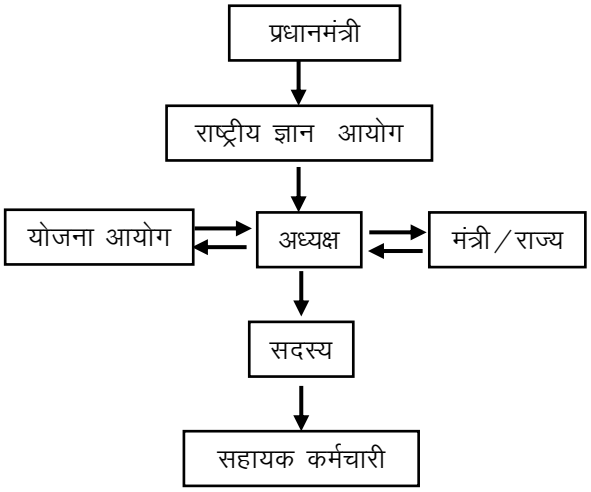

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का संगठन

- राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का गठन प्रधांनमंत्री मनमोहन सिंह ने 2 जून 2005 को किया और 13 जून 2005 को अस्तित्त्व में आया।
- **उद्देश्य** :– इस आयोग का उद्देश्य ज्ञान को सुलभ बनाना है। तथा इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा पर ध्यान केन्द्रीत करना है।
- इसका गठन **प्रधानमंत्री सलाहकार समिति के रूप** में किया गया
- **तीन वर्ष** के कार्यकाल के लिए इसका गठन किया गया।
- National Knowledge Commission की Website फरवरी 2006 में प्रारम्भ की गई।
- इसमें **8 सदस्य** नियुक्त किए गए थे।
- **Dissolved(भंग) :-** July 2014
- **Jurisdiction(क्षेत्राधिकार):** Government of India
- **Headquarters (मुख्यालय):-** New Delhi
- **First executive (कार्यपालक):-** Sam Pitroda

- यह उपयोगकर्ता को शोधकर्ता द्वारा किए गये शोधो की नई जानकारी देता है।

LINKEDIN

- स्थापना – 28 Dec. 2002
- Launch किया – 5 मई 2003
- मुख्यालय – USA California
- विकास किया – Raid Hoffman
- यह मुख्यत्याः Job ढूढ रहे लोगो के लिए Online Platform है।
- Mobile Version Launch – Feb 2008
- Dec. 216 से Microsoft Corporation के अर्न्तगत कार्य कर रहै है।

Google Scholoer

- Launch – नवम्बर 2004
- Theme – Stand on the Shoulder of Giant
- प्रकाशन प्रारूपो और विषयो में पूर्ण साहित्य के सम्पूर्ण पाठ को अनुक्रमित करता है।
- नवम्बर 2004 मे बीटा मे जारी किया गया।

Research Gate

- खोज May 2008 , Barlin Germany
- बनाया गया – IJAD, Madisch, Saren Hofmayer Horst Fiekenscher
- यह European Commercial Social Networking Site
- यह साइंटिस्ट , शोधकर्ता को अपने पेपर साझा करने, पूछे गए प्रश्नो का उतर देने के लिए मंच प्रदान करता है।
- यह Rg Store के नाम से Auther Lavel Metric प्रकाशित करता है।

Social Bookmarking website

Stumble Upon

- स्थापना – नवम्बर 2001
- विकसित – Garrett camp & Geoff Smith द्वारा
- मुख्यालय San Fransicisco, US
- Owner – Stuble Upon,inc.
- खोज व विज्ञापन को रेटिंग देने के लिए
- 30 June 2018 से बंद

Hacker News

- 9 Feb, 2007, पहले नाम – Y Combinater
- Paul Graham द्वारा विकसित किया गया।
- Computer Science & Enterpreneurship के बारे मे सूचना प्रदान करता है।

Reddit

- स्थापना – 23 June 2005
- संस्थापक – Steve Huffman, Aaron swaritz, Alexis ohanian
- मुख्यालय – San Fransisco, California, USA
- यह एक अमेरिकन सामाजिक समाचार एकत्रीकरण के सामग्री रेटिंग व चर्चा वेबसाइट है।

Dribble

- 2009 में विकसित किया गया।
- Dan Cederholm & Rich thornett द्वारा विकसित किया गया।
- Designer & Creators के लिए Social Networking Platform है।
- Webby Awards : Honerr Best website Community (2019)

Pocket

- प्रारम्भ में नाम – Read it letter
- 2007 मे आया, Desktop & Laptop Computers के लिए विकसित किया – Mozila corporation Nathan Weiner
- वेब सर्विस है, इंटरनेट से Articals & Videos देखने के लिए, User artical को save करके बाद मे Offline देखने कि सूविधा प्रदान करता है।

Pinterest

- Pinterest, Inc. एक अमेरिकी सोशल मीडिया वेब और मोबाइल एप्लिकेशन कंपनी है।
- यह वर्ल्ड वाइड वेब पर चित्रों का उपयोग करके जानकारी की बचत और खोज को सक्षम करने के लिए डिजाइन किया गया एक सॉफ्टवेयर सिस्टम संचालित करता है
- स्थापित – दिसंबर 2009

- 5. पत्रपत्रिका नियंत्रण, 6. तकनीकी संसाधन, 7. पुस्तकालय प्रशासन

E-Granthalaya

- विकास – National Informatics Center (NIC)
- National Information Center. इलेक्ट्रोनिक व सूचना प्रोद्योगिक मंत्रालय – भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है।
- E-Granthalaya का नवीनतम संस्करण 4.0 है।
- E-Granthalaya Software को कर्नाटक राज्य के राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र बेंगलुर ने एक आन्तरिक परियोजना के रूप मे शुरू किया था।
- E-Granthalaya Open Source Software है।
- E-Granthalaya Software का पहला संस्करण राज्य मे Public Library के लिए डिजाइन किया गया था।

Nalanda

- विकास – Nalanda Software Private Limited Company (6 September 2010)।
- Nalanda Software पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पेकेज है। जो पुस्तकालय स्वचयलन के सभी उद्देश्यो को पूरा करने मे सक्षम है।
- इसका एक छोटा संस्करण जिसे स्कूल एवं कॉलेज ग्रंथालयो मे प्रयोग किया जाता है।

Library 2000

- विकास – Max information system Limited
- Library Software पुस्तकालय द्वारा लागत प्रभावी Software Package है।
- Library Software को विकसित करने का उद्देश्य अधिग्रहण, सामयिक प्रकाशन, प्रबंध परिसंचरण व प्रलेख पुन प्राप्ति कार्य मे ग्रंथालयो की सहायता करना है।

WILLSYS

- Wipro library system 1985 मे Wipro नामक कम्पनी ने विकसित किया।
- यह एक Menu संचालित पुस्तकालय Software है।

SOUL

- पूरा नाम – Software for University Library
- निर्माण – INFLIBNET UGC के अन्तर्गत कार्यरत एक स्वायत्तशासी संस्था के द्वारा महाविद्यालय व विश्वविद्याालय के स्वचालन हेतु निर्मित Software है।
- इस Software का आधार MSSQL 6.5 नामक Database Management System है।
- SOUL 1.0 संस्करण सन् 2000 में जारी किया गया था। सोल 2.0 संस्करण January 2009 मे विकसित किया गया है। SOUL 3.0 वर्तमान संस्करण 2021 को जारी हुआ।
- इसके निम्न मॉड्यूल्स है – 1. अधिग्रहण, 2. प्रसूचिकरण, 3. परिसंचालन, 4. आपेक, 5. धारावाहिक नियत्रंण, 6. प्रशासन

CDS/ISIS

- Computerized Document System/ Integrated Set for Information Service
- स्थापना UNESCO द्वारा **1971** मे।
- UNESCO ने CDS/ISIS 1.0 संस्करण को **1985** मे विकसित किया है।
- CDS/ISIS Pascal भाषा में विकसित किया।
- CDS/ISIS Open Source Software है।
- **1985** मे CDS/ISIS – **1.0 वर्जन**
- **1989** मे CDS/ISIS – **2.0 वर्जन**
- **1989** मे **CDS/ISIS – CD Rom** वर्जन
- **1993** मे **CDS/ISIS – 3.0** वर्जन जो कि सेंसेटिव वर्जन के नाम से जाना जाता है।
- **1997** मे **CDS/ISIS – 1.0** विण्डो वर्जन
- **1999** मे **CDS/ISIS – 1.311** पूर्ण विण्डोवर्जन

KOHA

- विकास – January 2000 में Katipo Communication Ltd, Wellington, New Zealand के द्वारा विकसित किया गया।
- भाषा – Perl
- Open Source Integrated Library System Software है।
- वर्तमान मे KOHA का विकास कार्य व समर्थन Liblime नामक संस्था कर रही है।
- लोकप्रिय पुस्तकालय प्रबंधन Software है।
- इस Software का उपयोग सार्वजनिक स्कूल व विशेष पुस्तकालय मे किया जाता है।

NewGenLib

- विकास – 2005, Hyderabad India
- पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर है।
- NewGenLib का विकास India में हुआ है।
- भारत का पहला देशीमुक्त स्त्रोत Software है।
- रचनाकार प्रो. हरावु एवं उनके साथी वेरस सॉल्मुशन ने 2007–08 मे इसे सार्वजनिक क्षेत्र मे उपलब्ध करा कर मुक्त घोषित कर दिया।
- लाइसेंस – General Public Licence

आंतरिक और बाहरी आलोचना शोध (Internal and External criticism Research) ऐतिहासिक विधि (Historical method) का महत्वपूर्ण हिस्सा है?

2.विवरणात्मक शोध

- विवरणात्मक शोध को मुख्यतः तीन प्रकारों में बाँटा जाता है।
  (i) सर्वेक्षण अध्ययन
  (ii) अर्न्तसंबंध अध्ययन
  (iii) विकासात्मक अध्ययन
- कार्य विश्लेषण , समुदाय सर्वेक्षण और जनमत सर्वेक्षण अध्ययन के प्रकारों में शामिल किया जाता है।

3.प्रयोगात्मक शोध

- प्रयोगात्मक शोध विधि जॉन स्टुअर्ट मिल के एकल चर नियम पर आधारित पाया जाता है।
- प्रयोगात्मक शोध में स्वतन्त्र , आश्रित और बाह्य पर प्रयोगात्मक शोध की व्याख्या की जाती है।
- जॉन स्टुअर्ट मिल के Law of Single Variable प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि पर आधारित हैं।

4.डेल्फी शोध

- एक समूह के भीतर आम सहमति के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए उपकरण को डेल्फी विधि कहा जाता है।
- डेलफी विधि का संबंध पूर्वानुमान प्रकृति से हैं।
- डेलफी विधि शोध का प्रकार है।
- विशेषज्ञों के पैनल और निर्णयों की आप सहमति पर आधारित शोध विधि को डेल्फी विधि के नाम से जाना जाता है।
- डेल्फी विधि का उपयोग रुझानों के पूर्वानुमान में किया जाता है। हेलमर की रुचियाँ बाद में पूर्वानुमान और भविष्यवाणी की ओर बढ़ीं। हेलमर सहयोगियों (Norman Dalkey and Nicholas Rescher) के साथ सहयोग करते हुए DELPHI पूर्वानुमान तकनीक का विकास हुआ।
- डेल्फी विधि का प्रतिपादन रैड कॉर्पोरेशन के द्वारा किया गया था।
- डेल्फी विधि का उपयोग पूर्वानुमान के हेतु किया जाता है।
- डेल्फी विधि तकनीक का विकास ओलाफ Olaf Helmer ने किया।
- डेल्फी विधि का प्रथम प्रयोग USA मे हुआ था।
- डेल्फी विधि मूख्य रूप से Data interpretation के साथ जुडा है।
- experts और judgements के पैनल की आम राय के आधार पर Research method पद्वति को डेल्फी विधि के नाम से जाना जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- विमल शाह के अनुसार ''शोध प्रारूप, अध्ययन की एक योजना है।''
- शोध समस्या के निरूपण की प्रथम अवस्था शोध समस्या का चयन है।
- टाउन सेण्ड के अनुसार "प्राकल्पना शोध अध्ययन की समस्या के लिए सुझाया गया उत्तर है।''
- प्रतिचयन या निदर्शन विधि का सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1915, लन्दन में किया गया था।
- प्रतिचयन या निदर्शन विधि का प्रयोग वर्ष 1915 में बाटले विद्वान द्वारा किया गया था।
- वैचारिक ढांचे के रूप मे किया गया अनुसंधान **अनुसंधान डिजाइन** कहलाता हे।
- समस्या का सूत्रबद्धता या निरूपण के लिए समस्या का निरीक्षण किया जाता है।
- डेटा का संग्रहण शोध विधि का द्वितीयक चरण है।
- डेटा का विश्लेषण शोध विधि का तृतीयक चरण है।
- शोध उपकल्पन का निर्माण अस्थाई सामान्यीकरण करना से संबंधित है।
- शोध के मौलिक तथ्य प्राथमिक स्रोतो में उपलब्ध होते है।
- किसी अन्वेषण अध्ययन की भली–भाँति नियोजित, विचारित तथा तैयार की हुई रूपरेखा को अनुसंधान अभिकल्प कहा जाता है।
- अनुसंधान अभिकल्प अनुसंधान की योजना होता है।
- अनुसंधान प्रायोगिक अभिकल्प परिकल्पना का परीक्षण से सम्बन्धित होता है।
- अनुसंधान का वह अभिकल्प जो किसी समस्या के निदान तथा उनके समाधान से संबंध रखता है नैदानिक अभिकल्प कहलाता है।
- परिकल्पना की सूत्रबद्धता अनुसंधान अभिकल्प का उद्देश्य होता है।
- परिकल्पना अनुसंधान अभिकल्प को सूत्रबद्ध करने के पश्चात् प्रतिपादित करना चाहिए
- परिकल्पना – समस्या समाधान , एक कथन जिसका परीक्षण होना हें
- काई – स्क्वेयर टेस्ट , एफ –टेस्ट और टी–टेस्ट परीक्षण द्वारा प्राकल्पनाओं की जांच की जा सकती है
- प्राकल्पना (Hypothesis) का सामान्यीकरण व्यावहारिक उपयोग के लिए किया जाता है।
- प्रमाणित हो जाने के पश्चात् प्राकल्पना (Hypothesis) शोध समस्या बन जाती है।
- ''क्रेनफील्ड स्टडीज' सर्वेक्षण शोध से संबंधित हैं।
- यदि आप एक परिचय पद्धति में किसी सूची के प्रत्येक 10 वें नाम और किसी गली में 15 घर का चयन करते हैं तो उसे व्यवस्थित प्रतिचयन नाम से जाना जाता है।
  सुविधानुसार निदर्शन ,यथाश निदर्शन अप्रायिकता निदर्शन (नाम– प्रोबेबिलिटी) सैम्पलिंग के उदाहर